सम्पादकीय

तुम तब्लीग़ करों और किसी के मार्गदर्शन का माध्यम बनो

हमें ज़रूरत है कि हम तब्लीग़ करें और दुनिया के मार्गदर्शन के लिए समय दें।

हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बात की बहुत अधिक इच्छा रखते थे कि लोग अल्लाह पर ईमान ले आएं, अपने स्रष्टा तथा निर्माता को पहचानें, तौहीद का बोल बाला हो। नबी का पहला काम यही होता है कि वह तौहीद जो धरती से मिट जाती है स्थापित करे। लोगों के ईमान लाने की ऐसी तड़प अपने सीने में थी कि अल्लाह तआला को यह कहना पड़ा कि:

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ

कि हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) क्या तू इस शोक में अपने आप को मार लेगा कि लोग ईमान क्यों नहीं लाते। हदीस ने कहा कि एक अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला से फरमाया, ख़ुदा की कसम तेरे द्वारा एक आदमी का हिदायत प्राप्त कर लेना उच्च गुणवत्ता वाले लाल ऊंट से बेहतर है।

(मुस्लिम किताबुल फज़ाइल अध्याय फज़ाय अली बिन अबी तालिब तथा बख़ारी किताबुल जिहाद)

इस संदर्भ में कुछ घटनाएं पाठकों की सेवा में पेश कर रहे हैं कि किसी के ईमान लाने से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कितनी प्रसन्नता होती थी और आप इस बात के कितने इच्छुक थे कि लोग अपने रब्ब, स्रष्टा पर ईमान ले आएं।

हजरत अनस रसूल कहते हैं कि एक यहूदी लड़का आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नौकर था, वह बीमार हो गया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस को बीमारी में देखने गए। उस के सिर के किनारे बैठकर, हाल पूछा और इस्लाम को स्वीकार करने के लिए भी कहा। लड़के ने अपने पिता की तरफ देखा जो उसके पास बैठा हुआ था। उनके पिता ने कहा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात स्वीकार कर लो। तो उस ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। हुज़ूर ख़ुशी ख़ुशी वहाँ से यह कहते हुए वापस आए कि सारी प्रशंसाए उस अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने इस युवा को नरक की आग से बचा लिया।

(बुख़ारी किताबुल जनाईज़) (उद्धरित किताबुल हदीकतुल सालेहीन हदीस नंबर 586)

दरअसल यह आपका कर्तव्य था कि आप इस्लाम का आह्वान करें और आपने यह पूरा जीवन किया है। लेकिन इस निमंत्रण और तब्लीग़ के पीछे, मानव जाति से आप का अद्भुत प्यार और करुणा भी थी। अंबिया मानव जाति से इस प्रकार की मुहब्बत करते हैं जैसे दयालु माता अपने बच्चों के साथ करती है, बल्कि इससे भी ज्यादा। यही कारण है कि नौकर के ईमान ले आने पर में और इस के परिणाम स्वरूप उसकी आग से रिहाई से बहुत खुश हुए। एक और दिलचस्प घटना नीचे अद्दास के ईमान लाने की नीचे वर्णन की जाती है।

शव्वाल 10 नबवी में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ़ अकेले पधारे या कुछ रिवायतों की दृष्टि से ज़ैद बिन हारसा भी

विषय सूची

1	सम्पादकीय	1
2	पवित्र कुरआन	2
3	पवित्र हदीस. आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चरित्र कुरआन के अनुसार है	3
4	मल्फूज़ात- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम	4
5	जलसा सालाना कादियान 2017 ई के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्ला तआला की ख़िताब	5
6	नज़्म हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम	8
7	आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक से अधिक विवाह और उस की हिक्मतें	11
8	हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्का विजय	17
9	सीरत आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दावत इल्लल्लाह के आलोक में	23

☆ ☆ ☆

साथ थे। वहां पहुंचकर आप दस दिन ठहरे और शहर के कई अमीरों से एक के बाद दूसरे से मुलाकात की। परन्तु इस शहर की किस्मत में मक्का की तरह उस समय ईमान लाना न था। अत: सब ने इंकार किया और उपहास किया। अंत में आपने ताइफ़ के सब से बड़े रईस अबद यालैल के पास जाकर इस्लाम की दावत दी मगर उसने भी साफ इनकार किया बल्कि उपहास के रंग में कहा कि " अगर आप सच्चे हैं तो मुझे आप के साथ बातचीत की मजाल नहीं और अगर झूठे हैं बातचीत का लाभ नहीं और फिर इस बात पर विचार करते हुए कि कहीं आपकी बात शहर के युवाओं को प्रभावित न करे, आपसे कहने लगा कि बेहतर हैं कि आप यहां से चले जाएं क्योंकि यहां कोई भी आपकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। इसके बाद, इस दुष्ट ने शहर के आवारा आदमी आपके पीछे लगा दिए है। जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहर से निकले तो यह लोग शोर करते हुए आपके पीछे हो लिए और आप पर पत्थर बरसाने शुरू किए जिससे आपका सारा शरीर खून से तर-बतर हो गया। ये लोग बराबर तीन मील तक आप पर पत्थर बरसाते रहे और गालियां देते रहे।

तायफ से तीन मील की दूरी पर मक्का के मुखिया अदी बिन रबिया का एक बाग़ था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में आकर पनाह ली और ज़ालिम लोग थक कर वापस चले गए। यहां एक छाया में खड़े होकर, आपने ख़ुदा तआला के समक्ष इस प्रकार दुआ की:

हे मेरे ख़ुदा, मैं अपनी ताकत के कम होने और कमज़ोरी और लोगों के मुकाबला में अपनी असहायता की शिकायत तेरे ही सामने करता हूं। हे मेरे परमेश्वर तो सबसे बढ़कर दयालु है और निर्बलों और असहायों का तू ही संरक्षक और निगरानी करने वाला है और तू ही मेरा रब है .... मैं तेरे ही मुंह के प्रकाश में शरण का इच्छुक होता हूँ क्योंकि तू ही है जो अंधेरों को दूर करता और मनुष्य को दुनिया तथा परलोक की नेकियों का वारिस बनाता है।

उतबा तथा शीबा उस समय अपने बाग़ में मौजूद था। जब उन्होंने आपको इस हालत में देखा तो दूर और निकट का रिश्ता या राष्ट्रीय भावना या न मालूम किस विचार से अपने ईसाई ग़ुलाम अद्दास नामक

शेष पृष्ठ 28 पर

वही है जिस ने एक अनपढ़ क़ौम की तरफ उन्हीं में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा जो उन्हें ख़ुदा के आदेशों को सुनाता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और ज्ञान सिखाता है

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَکِّیۡهِمۡ وَ یُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَ الۡحِکۡمَةَ ۚ وَ اِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ وَّ اٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ ؕ وَ هُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰهِ یُؤۡتِیۡهِ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِیۡمِ

(सूरह अलजुम्अ: आयत 3.5)

अनुवाद :: वही है जिस ने एक अनपढ़ क़ौम की तरफ उन्हीं में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा जो उन्हें ख़ुदा के आदेशों को सुनाता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब और ज्ञान सिखाता है यद्यपि वह इससे पहले बड़ी भूल में थे और उनके अतिरिक्त एक दूसरे क़ौम में भी (वह उसे भेजेगा) जो अभी तक उन से नहीं मिली और वह विजयी (और) हिकमत वाला है। यह अल्लाह का फज़्ल है जिस को चाहता है देता है और अल्लाह बड़े फज़्ल वाला है।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला इन आयतों की व्याख्या में फरमाते हैं:

(आयत नम्बर 3) इस आयत में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक अलग शान वर्णन की गई है कि आप अपने ऊपर ईमान लाने वालों पर आयतों की तिलावत के साथ ही उन को पवित्र भी करते थे, इस से पहले कि उन्हें किताब का ज्ञान या हिकमत बताएं जाएं। कुरआन मजीद का यह महान चमत्कार है कि इस से पहले सूरत अल्बकर: 130 में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम की वह दुआ वर्णन की गई है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव से सम्बन्ध रखती है। आप ने इस प्रकार के रसूल के प्रादुर्भाव की दुआ मांगी है जो अल्लाह तआला की आयतें उन को पढ़कर सुनाए फिर उन का ज्ञान तथा हिकमत से परिचित करे इस के परिणाम स्वरूप उन को पवित्र करे। इस दुआ के स्वीकार होने का तीन स्थानों पर वर्णन है परन्तु तीनों स्थान पर यही वर्णन है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आयत की तिलावत के साथ ही पवित्र करते थे और फिर किताब तथा हिकमत सिखाने का वर्णन है। अत: यह कुरआन करीम का विशेष चमत्कार है जो 23 वर्षों में नाज़िल हुआ परन्तु इस की आयतों में कहीं भी मतभेद नहीं है।

(आयत नम्बर 4) इस आयत में जिन आख़रीन का वर्णन है उन में इसी रसूल के प्रादुर्भाव का वर्णन है जिस का पिछली आयत में वर्णन हुआ है(هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا) परन्तु इस आयत के अन्त में वह चार अल्लाह तआला के गुणों को वर्णन नहीं किया गया जो आयत नम्बर 2 में वर्णन की गई हैं बल्कि अज़ीज़ तथा हकीम के दो गुणों को दोहराया गया है जिस से पता लगता है कि जिस रसूल का आरम्भ में वर्णन किया गया है वह दोबारा ख़ुद नहीं आएगा बल्कि उस का कोई ज़िल(प्रतिरूप) का प्रादुर्भाव होगा जो शरीयत वाला नबी नहीं होगा। विशेष वर्णन योग्य बात यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सालम के बार में भी यही दो गुणों का वर्णन किया गया है जैसा कि फरमाता है بَلۡ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیۡهِ ؕ وَ کَانَ اللّٰهُ عَزِیۡزًا حَکِیۡمًا

قُلۡ لَّوۡ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوۡتُهٗ عَلَیۡکُمۡ وَ لَاۤ اَدۡرٰىکُمۡ بِهٖ ۖ فَقَدۡ لَبِثۡتُ فِیۡکُمۡ عُمُرًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ

(सूरह यूनस आयत 17)

अनुवाद :: तू कह दे कि अगर अल्लाह चाहे तो मैं तुम पर इस की तिलावत न करता और न अल्लाह तुम्हें इस का ज्ञान देता। अत: मैं इस रिसालत से पहले भी तुम्हारे मध्य एक लम्बी आयु गुज़ार चुका हूं तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला इस आयत की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मुश्रिक आरोप लगाते थे कि आप ने कुर्आन अपनी तरफ से घड़ लिया है.... में इस की बहुत सख़्ती से इंकार किया गया है कि वह रसूल जिस को तुम सुदूक और अमीन कहा करते थे दावा से पहले चालीस साल की आयु तक को उस ने किसी इंसान पर कभी झूठ नहीं बालो अब अचानक ख़ुदा पर कैसा झूठ बोलने लग गया।

اَفَمَنۡ کَانَ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ وَ یَتۡلُوۡهُ شَاهِدٌ مِّنۡهُ وَ مِنۡ قَبۡلِهٖ کِتٰبُ مُوۡسٰۤی اِمَامًا وَّ رَحۡمَةً ؕ اُولٰٓئِکَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ ؕ وَ مَنۡ یَّکۡفُرۡ بِهٖ مِنَ الۡاَحۡزَابِ فَالنَّارُ مَوۡعِدُهٗ ۚ فَلَا تَکُ فِیۡ مِرۡیَةٍ مِّنۡهُ ۫ اِنَّهُ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّکَ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ

(सूरह हूद आयत 18)

अनुवाद:: अत: क्या वह जो अपने रब्ब की तरफ से रौशन दलील पर है और उस के पीछे उस का एक गवाह आने वाला है और उस से पहले मूसा की किताब इमाम और रहमत के रूप में मौजूद है(वह झूठा हो सकता है?) यही(इस मौऊद रसूल के मुख़ातिब अन्त में) इस स्वीकार कर लेंगे। अत: जो भी गिरोहों में से इस का इंकार करेगा तो आर इस का मौऊद ठिकाना है अत: इस बारे में तू किसी प्रकार शंका में न रह निसन्देह यही तेरे रब्ब की तरफ से सच्चाई पर है परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रहमहुल्लाह तआला इस आयत की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं:

अर्थात उस की उम्मत में से भी एक मामूर पैदा होगा जो अपने इल्हामों के माध्यम से उस की तस्दीक करेगा। मानो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीन गवाह प्राप्त हैं। एक तो ख़ुद दलीलें रखते हैं दूसरे उस की उम्मत में से वली पैदा होते रहेंगे तीसरे उस से पहले भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की किताब उस की सच्चाई पर गवाही दे रही है। इतनी गवाहियां किसी अन्य नबी को प्राप्त नहीं।(तफसीर सग़ीर पृष्ठ 353)

وَ اِذۡ قَالَ عِیۡسَی ابۡنُ مَرۡیَمَ یٰبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اِنِّیۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَیۡکُمۡ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوۡرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوۡلٍ یَّاۡتِیۡ مِنۡۢ بَعۡدِی اسۡمُهٗۤ اَحۡمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ بِالۡبَیِّنٰتِ قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ مُّبِیۡنٌ (सूरह अस्सफ आयत 7)

अनुवाद:: और याद करो जब ईसा पुत्र मर्यम ने कहा हे बनी इस्राईल नि:सन्देह में तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूं। उस की तस्दीक करते हुए आया हूं जो तौरात में मेरे सामने है और एक महान रसूल की ख़ुश ख़बरी देते हुए जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद होगा अत: जब वह खुले निशानों के साथ उन के पास आया तो उन्होंने कहा कि यह तो खुला खुला जादू है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चरित्र कुरआन के अनुसार है

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रौब वाले और सुन्दर आकार के थे। चेहरा मुबारक ऐसे चमकता था मानो चौदहवीं का चाँद।

आपकी बात छोटी लेकिन सुवक्ता और हिकमत से भरी और व्यापक लेखों पर आधारित और अतिरिक्त बातों से ख़ाली होती। लेकिन इसमें कोई कमी या अस्पष्टता नहीं होती थी। न किसी की निंदा तथा अपमान करते न उपहास और अनादर। छोटे से छोटे उपकार को भी बड़ा प्रकट करते।

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा वर्णन करते हैं कि मैंने अपने मामू हिन्द बिन अबी हालह से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुलिया पूछा। यह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुलिया वर्णन करने में बड़े माहिर थे और मैं चाहता था कि यह मेरे पास ऐसी बातें वर्णन करें जिन्हें में गांठ में बांध लूँ। इसलिए हिन्द ने बताया कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रौब वाले और सुन्दर आकार के थे। चेहरा मुबारक ऐसे चमकता था मानो चौदहवीं का चाँद। दर्मियाना कद अर्थात छोटे कद से लंबा और लंबे कद से कुछ छोटा। सिर बड़ा। बाल ख़ुमदार और घने जो कानों की लो तक पहुंचते थे। मांग स्पष्ट। रंग खिलता हुआ सफेद। माथा विशाल। भंवें लम्बी बारीक और भरी हुई जो आपस में मिली हुई नहीं थी लेकिन बीच में सफेद सी जगह नजर आती थी जो क्रोध के समय स्पष्ट हो जाती थी। नाक बारीक जिस पर नूर झलकता था जो सरसरी देखने वाले को उठी हुई नज़र आती थी। बाल मुबारक घने। गाल नरम और बराबर। गाल विशाल। दांत रीख़दार और चमकदार। आंखों के कोए बारीक। गर्दन सुराही दार चांदी की तरह पारदर्शी जिस पर सुर्ख़ी झलकती थी।अच्छे चरित्र। शरीर कुछ वसायुक्त लेकिन बहुत उपयुक्त। पेट और सीना बराबर। सीना चौड़ा और उदार। जोड़ मजबूत और भरे हुए। त्वचा चमकती हुई नाज़ुक और मुलायम। छाती और पेट बालों से बिल्कुल साफ एक बारीक सी धारी को छोड़कर जो कि सीने से नाभि तक चली गई थी। कुहनियों तक दोनों हाथों और कंधों पर कुछ कुछ बाल। पहुंचे लंबे। हथेलियाँ चौड़ी और गौशत से भरी हुईं। उंगलियां लंबी और सुडौल। पैर के तलवे थोड़े भरे हुए। कदम नरम और चिकने कि पानी भी उन पर से फिसल जाए। जब कदम उठाते तो पूरी तरह उठाते। गति प्रतिष्ठित लेकिन किसी कदर तेज़ जैसे ऊंचाई से उतर रहे हैं। जब किसी की तरफ मुंह फेरते तो पूरा मुंह फेरते। नज़र हमेशा नीची रहती। यूं लगता जैसे वातावरण की तुलना में पृथ्वी पर आपकी नज़र अधिक पड़ती है। आप प्राय: आधी खुली आँखों से देखते। अपने सहाबा के पीछे पीछे चलते और उनका ख्याल रखते। हर मिलने वाले को सलाम में पहल कहते।

(श्माइल तिर्मिज़ी बाब फी खुलक़ रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहो तआला अनहुमा का वर्णन है कि मैंने अपने मामू हिन्द बिन अबी हालह से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातचीत के अंदाज़ के विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा यूं लगता जैसे किसी निरंतर और गहरी सोच में हैं और किसी विचार की वजह से कुछ बे-आरामी सी है। आप प्राय: चुप रहते। बिना ज़रूरत बात नहीं करते। जब बात करते तो पूरी व्याख्या करते। आपकी बात छोटी लेकिन सुवक्ता और हिकमत से भरी और व्यापक लेखों पर आधारित और अतिरिक्त बातों से ख़ाली होती। लेकिन इसमें कोई कमी या अस्पष्टता नहीं होती थी। न किसी की निंदा तथा अपमान करते न उपहास और अनादर। छोटे से छोटे उपकार को भी बड़ा प्रकट करते। आभार का रंग स्पष्ट था। किसी चीज़ की निंदा न करते। ना इतनी प्रशंसा जैसे वह आपको बेहद पसंद है। स्वादिष्ट या बुरा मज़ा होने की दृष्टि से खाने पीने की चीजों की प्रशंसा या आलोचना में ज़मीन और आसमान की बातें करना आप की आदत नहीं थी। हमेशा मध्य मार्ग पसंद था। किसी सांसारिक कार्य के कारण से न क्रोध करते न बुरा मनाते। लेकिन अगर हक़ का अपमान होता या अधिकार छीन लिया जाता तो आपके गुस्से के सामने कोई नहीं ठहर सकता था। जब तक उसकी भरपाई नहीं हो जाती आपको चैन नहीं आता था। स्वयं के लिए कभी क्रोध न करते और न इसके लिए बदला लेते। जब संकेत करते तो पूरे हाथ से करते केवल उंगली न हिलाते। जब आप आश्चर्य व्यक्त करते तो हाथ उलटा देते। जब किसी बात पर विशेष ज़ोर देना होता तो एक हाथ को दूसरे हाथ से इस तरह मिलाते कि दाहिने हाथ की हथेली पर बाएं हाथ के अंगूठे को मारते। जब किसी नापसंद बात को देखते तो मुंह फेर लेते और जब ख़ुश होते तो आंख किसी कदर बंद कर लेते। आपकी अधिकतम हंसी खुले तबस्सुम की सीमा तक होती अर्थात् ज़ोर का ठहाका न लगाते। हंसी के समय आपके मुबारक दांत ऐसे दिखते थे जैसे बादल से गिरने वाले सफेद सफेद ओले हैं।

(श्माइल तिर्मिज़ी बाब कैफ कान कलाम रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

हज़रत अनस बिन मालिक वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मध्यम कद के थे न तो बहुत लंबे और न छोटे कद वाले। आपका रंग निखरा हुआ सफेद था न बहुत अधिक सफ़ेद और न गहरे गेहूं के रंग वाले थे। आपके बाल एक हद तक सीधे थे, न बहुत अधिक घुंघराले और न बिल्कुल सीधे। आप जब मबऊस हुए तब आपकी उम्र चालीस साल थी। बेअसत के बाद दस साल मक्का में रहे और मदीना में दस साल निवास रहा और जब आपकी मृत्यु हुई तब आपकी उम्र साठ साल थी। आपके सिर और दाढ़ी में बीस से अधिक सफेद बाल नहीं थे।

(अल्मअजम लिल्सग़ीर लिलतिब्रानी, पृष्ठ 118

☆ ☆ ☆

वह एक राजकुमार और रूहानी बादशाहों का सरदार है जिसे सारी दुनिया के ख़ज़ानों की चाबियां दी जाऐंगी।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

" जब यह आयतें उतरीं कि मुशरिकीन अपवित्र हैं, पलीद हैं, सब से बुरी सृष्टि हैं, मूर्ख हैं और शैतान की सन्तान हैं और उन के उपास्य जहन्नम की आग और जहन्नम का ईंधन हैं तो अबूतालिब ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाकर कहा, हे मेरे भतीजे अब तेरी कठोर भाषा से क़ौम बहुत उग्र हो गई है और करीब है कि तुझे मार डालें और साथ ही मुझे भी। तू ने उन के बुद्धिमानों को मूर्ख करार दिया और उनके बुज़ुर्गों को सब से बुरी सृष्टि कहा और उनके सम्मान योग्य देवताओं का नाम नरक का ईंधन और जहन्नम की आग रखा और सर्व सामान्य रूप से उन सब को शैतान की सन्तान और अपवित्र ठहराया। मैं तेरी भलाई के लिए कहता हूं कि अपनी ज़बान को थाम और कठोर बातें कहने से रुक जा वरना मैं क़ौम का मुकाबला करने की ताकत नहीं रखता। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में कहा हे चाचा यह कठोर शब्द नहीं बल्कि सच्चाई को वर्णन करना और बात को उस के स्थाल पर बताना है और यही तो काम है ज़िक्र के लिए मैं भेजा गया हूं और अगर इस के लिए मुझे मरना पड़े तो मैं ख़ुशी ख़ुशी इस मृत्यु को स्वीकार करता हूं। मेरा जीवन इस मार्ग में वक्फ है। मैं मृत्यु के डर से सच्चाई को वर्णन करने से नहीं रुक सकता। और हे चाचा अगर तुझ अपनी कमज़ोरी और अपनी तकलीफ का ध्यान है तो तू मुझे अपनी पनाह में रखने से हट जा। अल्लाह तआला की कसम मुझे तेरी कुछ भी ज़रूरत नहीं। मुझे अपने मौला के आदेश जान से अधिक प्यारे हैं। मैं अल्लाह तआला के आदेश पहुंचाने से नहीं रुकूंगा। कि फिर बार बार जीवत होकर हमेशा इस मार्ग में मारता रहूं। यह भय का स्थान नहीं बल्कि मुझे इस में बहुत आन्नद है कि इस के मार्ग में कष्ट उठाऊं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह तकरीर कर रहे थे और चेहरे पर सच्चाई और नूरानियत से भरी हुई वेदना स्पष्ट थी जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह तकरीर कर चुके तो सच्चाई की रौशनी को देख कर अपने आप अबूतालिब के आंसू बहने लगे और कहा कि मैं तेरी इस उच्च अवस्था को जानता न था तू तो और ही रंग में है तथा और ही शान में है जा अपने काम में लगा रह जब तक मैं जीवित हूं जहां तक मेरी ताकत है मैं तेरा साथ दूंगा।

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 110)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"यह सब मज़मून अबू तालिब के किस्सा का हालांकि किताबों में दर्ज है मगर यह सारी पंक्तियां इल्हामी हैं जो ख़ुदा तआला ने इस विनीत के दिल पर अवतरित की। केवल कोई कोई वाक्यांश व्याख्या के लिए इस विनीत की तरफ से है। इस इल्हामी पंक्तियों से अबू तालिब की सहानुभूति और सहायता दिखाई देती है। लेकिन, पूर्ण रूप से प्रमाणित है कि यह सहानुभूति नबूव्वत के प्रकाश और दृढ़ता को देख कर पैदा हुआ है। हमारे सय्यद व मौला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बड़ा हिस्सा उम्र का जो चालीस वर्ष का है लाचारी और परेशानी और अनाथ अवस्था में व्यतीत किया था। किसी रिश्तेदार या करीबी ने उस समय रिश्तेदारी का हक अदा न किया था यहां तक कि रूहानी बादशाह अपने बचपने की अवस्था में लावारिस बच्चों की तरह जंगलों में देहाती औरतों के हवाले किया गया और उसी असहायता और ग़रीबी की अवस्था में इस सर्वोत्तम इंसान ने दूध पीने के दिन पूरे किए। और जब कुछ बड़ा हुआ तो अनाथ और असहाय बच्चों को तरह जिन का इस दुनिया में कोई नहीं होता उन असभ्य लोगों ने बकरियां चराने की सेवा उस सारे संसार द्वारा सेवा किए जाने योग्य के सुपुर्द कर दीं। और उस तंगी के दिनों में केवल थोड़ा सा अनाज और बकरियों का दूध के कोई खाना न था। जब जवानी की आयु को पहुंचे तो बावजूद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अति सुन्दर होने के किसी चाचा इत्यादि ने शादी का न सोचा। बल्कि पच्चीस साल की आयु होने पर संयोग से ख़ुदा तआला के फज़ल तथा करम से एक मक्का की धनाढया औरत ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने लिए पसन्द कर के आप से शादी कर ली। यह अत्यन्त हैरत का स्थान है कि जिस अवस्था में आप के वास्तविक चाचा अबू तालिब और अब्बास और हमज़ा जैसे मौजूद थे विशेष रूप से अबू तालिब मक्का के रईस और अपनी क़ौम के सरदार भी थे और सांसारिक दौलत तथा मान सम्मान बहुत कुछ रखते थे परन्तु बावजूद इन लोगों की इस प्रकार की अमीरी के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वे दिन बहुत मुसीबत भूख और असहायता में गुज़रे यहां तक कि जंगली लोगों की बकिरयां चराने तक की अवस्था में पहुंच गए और उस दर्दनाक अवस्था को देख कर किस के आंसू जारी नहीं हुए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आयु जवानी तक पहुंचने तक किसी चाचा को ध्यान नहीं आया कि आख़िर हम भी तो बाप की तरह हैं शादी आदि और अन्य बातों के लिए कोई फिक्र करें हालांकि उन के घर में भी और रिश्देदारों में भी लड़िकयां मौजूद थीं। अत: इस स्थान पर अपने आप यह सवाल पैदा होता है कि इतनी अधिक ख़ामोशी उन लोगों से क्यों प्रकट हुई इस का उत्तर यही है कि उन लोगों ने हमारे सय्यद तथा मौला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि एक अनाथ लड़का है जिस के पिता न माता है कोई सामान नहीं और इस के पास कोई ताकत भी नहीं। ग़रीब है उस के पास कोई दौलत भी नहीं। इस तरह की मुसीबत में फंसे हुए की सहायता से क्या लाभ और उस को अपना दामाद बनाना तो मानो अपनी लड़की को तबाही में डालना है परन्तु इस बात की ख़बर नहीं थी कि वह एक शहज़ादा और रूहानी बादशाहों का सरदार है जिस को दुनिया के सारे ख़ज़ानों की चाबियां दी गईं।"

(करामतुस्सादेकीन)

☆ ☆ ☆

यह बहुत क्रूर और अज्ञानता पूर्ण आरोप है और इलज़ाम है जो जमाअत अहमदिया पर लगाया जाता है कि नऊज़ो बिल्लाह हम अकीदा ख़त्मे नबुव्वत का इनकार करने वाले हैं

जमाअत अहमदिया अपने आरम्भ से लेकर आज तक घोषणा कर रही है कि यह तथाकथित झूठ बोलते हैं, और इस का वास्तविकता से कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।

आज, यह जलसा भी जो दुनिया में देखा जा रहा है, यह अल्लाह तआला की सहायता का ही प्रमाण है।

अन्यथा, यदि हमारे संसाधन देखें तो असम्भव है कि दुनिया के हर कोने में इस्लाम के सच्चे संदेश को पहुंचा सकें।

अतः यह तब्लीग़ का काम ख़ुदा तआला स्वयं कर रहा है और यह भी तब्लीग़ का ही हिस्सा है कि हम टेलीविजन के माध्यम से सोशल मीडिया के माध्यम से ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता को दुनिया को बताएं। क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें यह दायित्व इसलिए नियुक्त किया है और यही हमारो आक़ा और मौला मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला का उपदेश है कि इस्लाम की तब्लीग़ को दुनिया में करना है और यही आदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का है और इस ज़माना में इस्लाम के प्रचार के जो माध्यम अल्लाह तआला ने हमें दिए हैं वह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना से ही जुड़े हुए थे। अतः अब हम सब का यह फर्ज़ है कि तब्लीग़ करें और दुनिया को बताएं कि ख़त्मे नबुव्वत के वास्तविक अर्थ क्या हैं इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा क्या है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के आलोक में अकीदा ख़त्मे नबुव्वत की सारगर्भित व्याख्या।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने प्रिय धर्म को फिर से दुनिया में उसकी मूल स्थिति में स्थापित करने और प्रसार के लिए भेजा है और जिसको अल्लाह तआला ने भेजा है, इस वादे के साथ भेजा है कि वह विजयी भी प्रदान करेगा उसे दुनिया की हकूमतों की रुकावटें और उल्मा के उत्पीड़न और बकवास किस तरह फलने फूलने से रोक सकती है? हम ही हैं जिन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की शिक्षा के अनुसार और उनके मिशन को जारी रखते हुए आज दुनिया के 210 देशों में ख़ातमुन नबिय्यीन के झंडे को लहरा दिया है।

हम इस विश्वास पर कायम हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन नबिय्यीन हैं और कुरआन ख़ातमुल किताब और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और वही मसीह मौऊद और ख़ातमुल खुल्फ़ा हैं जिनके आने की ख़बर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी और उसे अपना सलाम पहुंचाने का उपदेश फरमाया था। हम ने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और मुहब्बत के अंदाज़ इसी मसीह मौऊद और महदी मौऊद से सीखे हैं जिनकी जमाअत में शामिल होने की वजह से यह तथाकथित उल्मा हमें काफ़िर कहते और इस्लाम से बाहर निकालते हैं। आज अहमदियत के विरोधी इन बातों की वजह से और दुश्मनों की शत्रुता के कारण हर अहमदी पर पहले से बढ़कर यह कर्तव्य है कि वह अपने ईमान की और व्यावहारिक स्थिति में एक ऐसा बदलाव लाए जो अल्लाह तआला को हमसे निकट कर दे ।

जलसा सालना कादियान 2017 ई में 44 देशों के 20,848 लोग शामिल हुए।

कादियान दारुल अमान में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत के जलसा सालाना के अवसर पर 31 दिसंबर 2017 को सैयदना हज़रत खलीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का ताहिर हॉल बैतुल फुतूह लंदन से एम टी ए के संचार साधन से सीधे समापन भाषण।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अहमदियत के विरोधी आजकल और हमेशा से अपने विचारों में एक आरोप लगा रहे हैं और यह एक ऐसा बड़ा आरोप है जो कि उनके विचार में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा को इस्लाम से खारिज करता है। आजकल मैंने इसलिए कहा कि हमेशा से यह आरोप है लेकिन आजकल बहुत तीव्रता और ज़ोर से लगाया जा रहा है और वह है नऊज़ो बिल्लाह जमाअत अहमदिया का अकीदा ख़त्मे नबुव्वत से इंकार। अगर वे अपने आरोप में सच हैं, तो निश्चित रूप से वे जो कहते हैं वह सही है, लेकिन यह एक बड़ा झूठ है। यह एक ऐसा आरोप है जिस से जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का दूर का भी वास्ता नहीं बल्कि हम तो यह विश्वास रखते हैं और यही हमें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया है कि जो व्यक्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानता वह काफिर और इस्लाम से बाहर है। अतः यह बेहद क्रूर और आपत्ति जनक आरोप है जो जमाअत अहमदिया पर लगाया गया है

कि नऊज़ बिल्लाह अकीदा ख़त्मे नबुव्वत का इंकार करने वाले हैं। एक तरफ तो हम अपने आप को मुसलामन कहें। और दूसरी तरफ संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों के अनुसार ख़त्मे नबुव्वत के अकीदा को न मानकर काफिर बन जाएं।

जमाअत अहमदिया अपने आरम्भ से लेकर आज तक घोषणा कर रही है कि तथाकथित उल्मा झूठ बोलते हैं, और इसका वास्तविकता से दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन उन्होंने आम जनता को इतना भयभीत कर दिया है कि वे सामान्य रूप से सोचने समझने के लिए तैय्यार ही नहीं होते कि अहमदी क्या कहते हैं परन्तु न तो इस पर विचार करते हैं और हमारी बातें सुनते हैं, कुरआन और हदीस को समझते हैं, वे इस बात को मान लेते हैं कि वास्तव में अहमदी मुसलमान ही वास्तविक मुसलमान हैं और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ मसीह मौऊद और महदी मौऊद को स्वीकार कर के ही हज़रत मुहम्द मुस्तफा ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्तविक स्थान की पहचान हो सकती है।

उपमहाद्वीप पाक व भारत के तथाकथित उल्मा जो अपने निजी हितों को प्राप्त करने और अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अब एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं कि जिस तरह भी हो इन क्षेत्रों के मुसलमानों को अहमदियों के निकट भी न आने दिया जाए। इसी तरह उन की कोशिशें अन्य मुस्लिम देशों में भी हैं कि यहां अहमदियत का बदनाम किया जाए और अब यह उन की हालत है कि उन्होंने अफ्रीका में कई प्रतिनिधिमंडल भेजना शुरू कर दिए हैं। वहां से खबरें आती हैं और उन्हें लालच दी जाती है कि तुम अहमदियत छोड़ दो हम तुम को मस्जिद बना देंगे। हम आपकी मदद करेंगे। लेकिन मुसलमान जिन्हें इस्लाम के बारे में कुछ नहीं पता था, उन्होंने अहमदियत के माध्यम से असली इस्लाम को सीखा है। नमाज़ सीख। कुरआन सीखा वे उनका जवाब दे रहे हैं, और अल्लाह तआला की कृपा से ये नए बैअत करने वाले मज़बूत हैं कि इतने लंबे समय से तुम को होश नहीं आया। आज जब जमाअत अहमदिया ने आकर हमें कुरआन पढ़ाया, हमें नमाज़ सिखाई, हमें मस्जिद बनाकर दी, हमारे बच्चों को प्रशिक्षण दिया, उन्हें कुरआन पढ़ाया और नमाज़ सिखाई और धर्म का ज्ञान दिया अब तुम्हें विचार आया है। अत: हम से दूर हो जाओ। हम आपको कभी भी सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। लेकिन, हालांकि, वे अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि ये प्रयास और योजनाएं ख़ुदा तआला की योजनाओं के मुकाबलें में नहीं ठहर सकती हैं। यह अल्लाह तआला की तकदीर है कि उसने मसीह मौऊद के मानने वालों को अधिकांश लोगों में बदलना है। अत: इस दृष्टि से तो हम अहमिदयों को कुछ भी सन्देह नहीं है कि वे अहमिदयत की तरक्की को किसी प्रकार भी नहीं रोक सकेंगे। अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को इल्हाम के माध्यम से फरमाया था मैं तुझे सम्मान दूंगा और तुझे बढ़ाऊंगा।

(आसमानी फैसला, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 4 पृष्ठ 342)

और हर दिन हम यह नज़ारा देखते हैं कि बावजूद अहमदियत के विरोधियों के एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने के बावजूद इस्लाम के बुनियादी विश्वास के बारे में अहमदियों के बारे में यह प्रसिद्ध करने कि यह मानते नहीं सैंकड़ों हज़ारों लोग अहमदियत में दैनिक शामिल होते हैं और मुसलमानों में से भी शामिल होते हैं। अल्लाह तआला ने आप को फरमाया कि "मैं तेरी तब्लीग़ को पृथ्वी के किनारों तक पहुँचाऊँगा" (अल-हकम जिल्द 2 नंबर 5,6 दिनांक 27 मार्च और 6 अप्रैल 1898 ई पृष्ठ 13) और कुछ लोगों का हमें पता भी नहीं होता कि वह कहां रहते लेकिन वे हमसे संपर्क करने का प्रयास करते हैं कि किसी तरह से उन्हें अहमदियत के बारे में पता चला है और अब वे जमाअत में शामिल होना चाहते हैं। वर्तमान युग की तरक्की ने इस तब्लीग़ के खुद ही सामान पैदा कर दिए हैं। फिर विरोधियों की अपनी हरकतें उन की अपनी ग़लत बातें जो सोशल मीडिया के माध्यम से आज कल फैला रहे हैं और अपने माहौल में अहमिदयों के बारे में बकवास करते हैं उन की यही बातें कई नेक लोगों को हमारा तरफ ध्यान आकर्षित करती हैं। तो ये अल्लाह तआला के काम हैं जिन को इंसानी मंसूबे रोक नहीं सकते।

आज यह जलसा भी जो दुनिया में देखा जा रहा है यह भी अल्लाह तआला के समर्थन व नुसरत का ही सबूत है अन्यथा हमारे संसाधनों को अगर देखें तो यह असंभव है कि दुनिया के हर कोने में इस्लाम का असली संदेश हम पहुंचा सकें। तो यह तब्लीग़ का काम ख़ुदा तआला ख़ुद कर रहा है और यह भी तब्लीग़ का ही हिस्सा है कि हम टेलीविजन के माध्यम से, सामाजिक मीडिया के माध्यम से ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता भी दुनिया को बताएँ क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें इस कर्तव्य के लिए निर्धारित किया है और यह हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला का इरशाद है कि इस्लाम की तब्लीग़ दुनिया में करनी है और यही हुक्म हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का है और इस युग में इस्लाम के प्रकाशन के जो साधन अल्लाह तआला ने हमें दिए हैं वे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना से जुड़े थे।

अत: अब हम सब का यह फर्ज़ है कि दुनिया को बताएं कि ख़त्मे नबुव्वत के क्या अर्थ हैं इस्लाम की वास्तविक शिक्षा क्या है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा क्या है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने और आप के उच्च स्थान और बार के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में ही आज कुछ बयान करूँगा। कई ग़ैर-मुसलमान मुस्लिम भी हैं जो हमारे कार्यक्रमों को देखते और सुनते हैं, ये भी उनके लिए मार्गदर्शन का साधन बनते हैं।

आपने यह फरमाया कि मेरा तो कुरआन में अल्लाह तआला के इस फरमान पर पूर्ण विश्वास है कि जहां अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहरा दिया वहां आप की शरीयत को भी पूर्ण कर दिया और इसका सबूत है "अलयौम अकमलतो लकुम दीनोकुम" की घोषणा भी कर दी। धर्म की पूर्णता भी हो चुकी और नेअमत भी पूरी हो चुकी। और इस्लाम ख़ुदा तआला के पास एक पसंदीदा धर्म है और अब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अच्छाई के मार्ग को छोड़ कर और कोई मार्ग धारण करने बिदअत है।

अपने विरोधियों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि अब बताओ कि यह खुद बनाए हुए वज़ीफे हैं जो तुम ने बना लिए हैं और दरूद हैं और कुछ काफियों को जैसे बुल्ले शाह की काफियां हैं उन्हें ही पर्याप्त समझ लिया गया है। उनको धर्म समझा जाता है। कुरआन की शिक्षा भुला दी गई है। उनकी नमाज़ों में आन्नद नहीं है और नमाज़ों में आन्नद के स्थान पर अपने बनाए हुए वज़ीफों पर उन को वजद छा जाता है। और अपनी पगड़ियां उतार कर दूर फेंक देते हैं। नाच गाने शुरू हो जाते हैं। गाते तो नहीं नाचना शुरू हो जाते हैं। धमाल डाल रहे होते हैं आपने फरमाया कि क्या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में ऐसी गतिविधियां थीं? और ये बातें जो आपने बताई हैं ये कोई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के युग की बातें नहीं बल्कि आजकल भी मुस्लिमों में इस तरह की मज्लिसें होती हैं। भंगड़ा डाल रहे होते हैं। आज कल सोशल मीडिया पर इस तरह की हरकतें इन की प्राय: देखी जा सकती हैं। इन लोगों ने अजीब अजीब हुलिए बनाए होते हैं। बहरहाल आप

फ़रमाते हैं कि तुम मुझ पर तो यह आरोप लगाते हो कि मैंने नबुव्वत का दावा कर दिया और ख़त्मे नबुव्वत की मुहर तोड़ दी मानो कोई स्थायी नबुव्वत का दावा करता हूं। आप ने फरमाया कि मेरा दावा तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आ कर अपनी शरीयत का पालन करना और करवाना है लेकिन तुम अपने आप को नहीं देखते कि झूठी नबुव्वत तो तुम लोगों ने खुद बनाई हुई है जबकि ख़िलाफे रसूल और ख़िलाफे कुरआन तो तुम ये नए नए विर्द और वज़ीफे निकाल रहे हो। अगर न्याय है, तो बताओ कि क्या हम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र शिक्षाओं और अनुकरण पर कुछ वृद्धि कर रहे हैं या कम कर रहे हैं या तुम लोग कर रहे है? आप फरमाते हैं कि क्या अर्रह का वर्णन मैंने बताया है या यह तुम्हारी ईजाद है? और इसी तरह केवल अल्लाह हू की महफिलें हैं और नमाज़ में अन्य दुआओं की तरफ कोई ध्यान नहीं। और पता नहीं क्या क्या कुछ अन्य रस्में निकाली हुई हैं। क्या बिदअतें पैदा की हुई हैं। पीरों फकीरों की कब्रों पर सिज्दा करते हैं। इस्लाम धर्म में ये सब बिदअतें इन लोगों ने अपने हितों के लिए शामिल की हुई हैं। अत: आप फरमाते हैं कि ये आरोप मुझ पर न दो अपनी अवस्था पर ध्यान दो।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 88 से 90 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान और सम्मान को बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

" बेशक याद रखो कि कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान नहीं हो सकता और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुयायी नहीं बन सकता जब तक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ात्मन्नबिय्यीन विश्वास न करे। जब तक कि मुहद्देसात से अलग नहीं होता (यानी जो नई नई बिदअतें पैदा कर ली हैं अपने धर्म में) और अपने कथनी और करनी से आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ख़ातमुल अंबिया नहीं मानता कुछ नहीं।" आप फरमाते हैं कि " सादी ने क्या ही अच्छा कहा है कि

ब ज़हुद व वरअ कौश व सिदक व सफा
व लेकिन मी फज़ाए बर मुस्तफा

(अर्थात ज़ुहद और धर्मपरायणता और ईमानदारी व सफा के लिए आवश्यक प्रयास कर लेकिन मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीके को पार न कर।) आपने फरमाया कि मेरे आगमन का उद्देश्य केवल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान और नबुव्वत को फिर से स्थापित करना है। आप फरमाते हैं कि "हमारा उद्देश्य जिसके लिए अल्लाह तआला ने हमारे दिल में जोश डाला है यही है कि केवल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत को स्थापित किया जो चिर स्थायी अल्लाह तआला ने स्थापित की है और सब झूठी नबुव्वतों को टुकड़ा टुकड़ा कर दिया जाए जो उन लोगों ने अपनी बिजदअतों के द्वारा स्थापित की है। इन सारी गद्दियों को देख लो।"(अर्थात पीरों फकीरों की गद्दियां जो हैं।)" और व्यावहारिक रूप से समीक्षा कर लो कि ख़त्मे नबुव्वत पर हम ईमान लाए हैं या वे।"

फिर एक स्थान पर इस विषय को जारी रखते हुए आप फरमाते हैं

" यह अत्याचार और शरारत की बात है कि ख़त्मे नबुव्वत से केवल इतना ही अभिप्राय लिया जाए कि मुंह से ख़ात्मन्नबिय्यीन को स्वीकार करो और करतूतें वही करो जो तुम पसन्द करते हो और अपनी एक अलग शरीयत बना लो।" ग़ैर अहमदियों ने अजीब अजीब प्रकार की बिदअतें बनाई हुई हैं। "बग़दादी नमाज़ मअकूस नमाज़ आदि ईजाद की हुई हैं। क्या कुरआन शरीफ और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श में भी कहीं इन का पता लगता है? और इसी प्रकार हे शेख़ अब्दुल कादिर जेलानी शैयन लिल्लाह कहना इस का प्रमाण भी कहीं कुरआन शीरफ से मिलता है? आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय तो शेख़ अब्दुल कादिर जेलानी का वुजूद भी नहीं था। फिर यह किस ने बताया। " आप फरमाते हैं। " शर्म करो क्या शरीयते इस्लामी की पाबन्दी और शरीयत इसी का नाम है? आप फरमाते हैं कि "क्या इन बातों को स्वीकार कर के और अनुकरण कर के तुम इस योग्य हो कि मुझ पर आरोप लगाओ कि मैंने ख़ात्मन्नबिय्यीन की मुहर को तोड़ा है असल और वास्तविक बात यही है कि अगर तुम अपनी मस्जिदों में बिदअतों को दाख़िल न करते और ख़ात्मन्नबिय्यीन की सच्ची नबुव्वत पर ईमान ला कर आप के आदर्श और नक्शे कदम को इमाम बना कर चलते तो फिर मेरे आने की आवश्यकता क्या होती।" आप फरमाते हैं कि तुम्हारी इन बिदअतों और नई नबुव्वतों ने अल्लाह तआला की ग़ैरत को तहरीक दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चादर में एक आदमी को भेजे जो इन झूठी नबुव्वतों के बुतों को तोड़ दे। अत: इसी काम के लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर कर के भेजा है।" आप फरमाते हैं" गद्दीनशीनों को सिज्दा करना या उन के मकान का चक्कर लगाना यह तो बहुत साधारण और आम बातें हैं।"

फिर आप अपने आने के उद्देश्य और जमाअत के उद्देश्य को वर्णन करते हुए, और ख़त्मे नबुव्वत की वास्तविकता क्या है इस बार में फरमाते हैं कि

" अल्लाह तआला ने इस जमाअत को इसी लिए स्थापित किया है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत को दोबारा स्थापित किया जाए। एक आदमी जो किसी का आशिक़ कहलाता है अगर इस जैसे हज़ारों और भी हों तो इस के इश्क तथा मुहब्बत की विशेषता क्या रही तो अगर यह रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुहब्बत और इश्क में फना हैं जैसा कि यह दाता करते हैं तो यह क्या बात है कि हज़ारों ख़ानकाहों और दरगाहों की पूजा करते हैं।" एक तरफ कहते हैं कि हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क में फना हैं दूसरी तरफ ख़ानकाहों और मज़ारों पर केवल दुआ के लिए नहीं जाते बल्कि उपासना करते हैं, पूजा करते हैं। आप फरमाते हैं "मदीना तय्यबा तो जाते हैं।" ठीक है जाते हैं हज और उमरा के लिए भी जाते हैं और दुआ भी करते हैं "मगर अजमेर और दूसरी ख़ानकाहूं पर नंगे सिर और पांव जाते हैं" उन को वही स्थान दिया हुआ है पाकपतन की खिड़की में से गुज़र जाना ही मुक्ति के लिए काफी समझते हैं।" ये भी उन्होंने बिदअतें पैदा की हुई हैं कि वहां बुज़ुर्ग के खिड़की में से गुज़र जाओ मुक्ति मिल जाएगी। फरमाया कि "किसी ने कोई झण्डा उठा रखा है और किसी ने अन्य रूप धारण कर रखा है इन लोगों को उर्सूं और मेलों को देखकर एक सच्चे मुसलमान के दिल कांप जाता है कि ये इन्होंने क्या बना रखा है।" आप फरमाते हैं कि " अगर ख़ुदा तआला को इस्लाम का सम्मान न होता और

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(सूरह अल्हिजर 10) तो निसन्देह आज इस्लाम की वह अवस्था हो गई थी कि इस के मिटने की कोई शंका नहीं थी मगर अल्लाह तआला के सम्मान ने जोश मारा और इस के वादा और इस की रहमत और ग़ैरत ने चाहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बुरूज़ (प्रतिरूप) को फिर अवतरित करे। और इस ज़माना में आप की नबुव्वत को जीवित कर के दिखा दे। अत: उस ने इस सिलसिला का स्थापित किया और मुझे मामूर और महदी बना की भेजा।"

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने प्रिय धर्म को फिर दुनिया में उसकी मूल स्थिति में स्थापित करने

और प्रसार करने के लिए भेजा है और जिस को अल्लाह तआला ने भेजा है और इस वादे के साथ भेजा है कि वह विजयी भी प्रदान करेगा उसे सांसारिक सरकारों की लगाई गई रुकावटें और उल्मा के अत्याचार और बेहूदा बातें कैसे पनपने से रोक सकती हैं।

हम ही हैं जिन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की शिक्षा के अनुसार और उनके मिशन को जारी रखते हुए आज दुनिया के 210 देशों में ख़ातमुन नबिय्यीन के झंडे को लहरा दिया है।

और इस बात को और अधिक वर्णन करते हुए कि सिलसिला की स्थापना किस उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने की है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

" आज दो प्रकार के शिर्क पैदा हो गए हैं जिन्होंने इस्लाम को नाश करने के लिए बेहद कोशिश की और अगर अल्लाह तआला का फज़ल शामिल न होता तो करीब था कि ख़ुद तआला के चुने हुए और पसंदीदा धर्म का नाम मिट जाता। लेकिन चूंकि उसने वादा किया था

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(अलहिजर 10 :) यह वादा सुरक्षा चाहता था कि जब खून ख़राबे का मौका हो तो वह ख़बर ले" "। आप फरमाते हैं कि "चौकीदार का काम है कि वह चोरी करने वाले को पूछता है और दूसरे जुर्मों को करने वालों को देख कर अपने फर्ज़ों को सामने लाता है इसी तरह पर आज चूंकि फित्ने जमा हो गए थे।" बहुत सारे फित्ने इक्टठा हो गए थे। "और इस्लाम के किला पर प्रत्येक तरह के विरोधी हमला करने को तय्यार हो गए थे इस लिए ख़ुदा तआला चाहता है कि नबुव्वत का तरीका स्थापित करे। यह मादा इस्लाम के विरोध का एक समय से पर रहा था और अन्त में अब फूट निकला। जैसे आरम्भ में केवल धातु होती है और फिर एक समय के व्यतीत होने के बाद वह बच्चा बन कर निकलता है इसी तरह पर इस्लाम के विरोध का बच्चा पैदा हो चुका है और अब वह जवान हो कर बहुत जोश और ताकत में है।" यही हम आजकल देख रहे हैं कि दुनिया में हर जगह दुनिया दार लोग भी इस्लाम का विरोध कर रहे हैं। इन का उद्देश्य भौगोलिक शक्ति प्राप्त करना है, राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना है, लेकिन इस्लाम को बदनाम करके वह शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। इस्लामी देशों के धन को प्राप्त करने के लिए भी यानी कि मानो धार्मिक लिहाज़ से भी और सांसारिक लिहाज़ से भी हर तरह से आजकल इस्लाम को, मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है। आप फरमाते हैं कि आज कल पूरे उत्साह और शक्ति से यह विरोध हो चुका है। इसलिए इस को तबाह करने के लिए अल्लाह तआला ने आसमान से एक तरीका नाज़िल किया और इस मकरूह शिर्क को जो भीतरी और बाहरी रूप से पैदा हो गया था दूर करने के लिए फिर ख़ुदा तआला की तौहीद और जलाल स्थापित करने के लिए इस सिलसिला को स्थापित किया।" आंतरिक रूप में भी मुसलमानों में कब्र की पूजा करके एक शिर्क पैदा हो चुका है बाहरी रूप में भी अल्लाह तआला को मानने से लोग इन्कार करने वाले हो चुके हैं और शिर्क वैसे भी बढ़ रहा है दुनियादार शिर्क में डूब हो चुके हैं इसलिए आप ने फरमाया कि इस प्रकार के शिर्क को दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने इस सिलसिला को स्थापित किया है। आप फरमाते हैं, "यह सिलसिला ख़ुदा की तरफ से है, और मैं बहुत दावे और अंतर्दृष्टि के साथ कहता हूं कि यह ख़ुदा से है। उसने अपने हाथ से इसे स्थापित किया है जैसा कि उसने अपने समर्थन और सहायता से जो इस सिलसिला के लिए उसने प्रकट की हैं दिखा दिया है। "

(मलफूज़ात जल्द 3 पृष्ठ 90 से 93 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

फिर आप ने इस बात को और अधिक स्पष्ट किया और यह फरमाते हुए कि अल्लाह तआला की तरफ से आने वाले दो प्रकार के होते हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

की मुहब्बत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह पेश्वा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद(स) दिलबर मेरा यही है
सब पाक हैं पयम्बर इक दूसरे से बहतर
लेक अज़ खुदाए बरतर ख़ैरुल वरा यही है
पहलों से ख़ूब तर है ख़ूबी में इक क़मर है
उस पर हर इक नज़र है बदरुद्दुजा यही है
पहले तो रह में हारे पार उसने हैं उतारे
मैं जाऊँ उस के वारे बस ना ख़ुदा यही है
पर्दे जो थे हटाए अन्दर की रह दिखाए
दिल यार से मिलाए वो आश्ना यही है
वह यारे ला मक़ानी, वह दिलबरे निहानी
देखा है हम ने उस से बस रहनुमा यही है
वह आज शाहे दीं है, वह ताजे मुरस्लीं है
वह तय्यबो अमीं है, उस की सना यही है
हक़ से जो हुक्म आए उस ने वो कर दिखाए
वह राज़ दीं बताए नेअमुल-अता यही है
आँख उसकी दूरबीं है, दिल यार से करीं है
हाथों में शमअे दीं है अैनुज्ज़िया यही है
जो राज़े दीं थे भारे उस ने बताए सारे
दौलत का देने वाला फर्मा रवा यही है
उस नूर पर फिदा हूँ उस का ही मैं हुआ हूँ
वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फैसला यही है
वह दिलबरे यगाना इल्मों का है ख़ज़ाना
बाकी है सब फसाना सच बे ख़ता यही है
सब हम ने उस से पाया शाहिद है तू खुदाया
वह जिस ने हक़ दिखाया वह मह लका यही है

☆ ☆ ☆

एक शरीयत लाने वाले जैसे मूसा अलैहिस्सालम और एक वह जो शरीयत को जीवित करने तथा नियम को जारी रखने के लिए अल्लाह तआला की तरफ से आते हैं। जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सालम। इस तरह पर हमारा ईमान है कि हमारे नबी करीम करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूर्ण शरीयत (व्यवस्था) लेकर आए जो नबुव्वत का ख़ातम थे इसलिए समय की ताकतों और क्षमताओं ने खत्म नबुव्वत कर दिया था। अत: हुज़ूर अलैहिस्सालम के बाद, हम किसी अन्य कानून के आने से सहमत नहीं हैं। हाँ जैसे हमारे पैगंबर ख़ुदा मूसा के प्रतिरूप थे उसी तरह आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के सिलसिले का ख़ातम जो ख़ातमुल खुल्फ़ाय अर्थात मसीह मौऊद है जो मसीह अलैहिस्सलाम की तरह आता। तो मैं वही ख़ातमुल ख़ुलाफा और मसीह मौऊद हूं। जैसे मसीह कोई शरीयत लेकर नहीं आए थे बल्कि मूसवी शरीयत के पुनरुद्धार के लिए आए थे मैं कोई नवीन शरीयत लेकर नहीं आया और मेरा दिल हरगिज़ नहीं मान सकता कि कुरआन शरीफ के बाद अब कोई अन्य शरीयत आ सकती है क्योंकि पूर्ण शरीयत और पूर्ण ख़ातमुल किताब है। इसी तरह मुझे खुदा तआला ने शरीयते मुहम्मदी के पुनरुद्धार के लिए इस सदी में ख़ातमुल ख़ुलफा के नाम के साथ भेजा है। मेरे इलहाम जो मुझे ख़ुदा तआला की तरफ से मुझे होते हैं और जो हमेशा

लाखों इंसानों में प्रकाशित किए जाते हैं और छापे जाते हैं और नष्ट नहीं होते और न नष्ट होंगे और वे कायम रहेंगे।"

(मलफूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 272, संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

फिर आप ने ज़ोरदार शब्दों में यह भी कहा कि मैंने जो कुछ पाया वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही फ़ैज़ है। इसलिए इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

" मैं कसम खा कर कहता हूँ कि मेरे दिल में असली और वास्तविक जोश यही है कि सभी प्रशंसाएं और सारे अच्छे गुण आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ लौटें। मेरी सारी ख़ुशी इसी में है और मेरे प्रादुर्भव का मूल उद्देश्य यही है कि अल्लाह तआला का एकेश्वरवाद और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान दुनिया में स्थापित हो। मैं वास्तव में जानता हूँ कि मेरे बारे में जितनी प्रशंसा तथा शब्द और महिमा की बातें अल्लाह तआला ने वर्णन की हैं यह भी वास्तव में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तरफ ही लौटने वाली हैं ।"

यानी उसी की तरफ लौट रही हैं। आप ही के कारण है आप के ही फैज़ के कारण है। आप फरमाते हैं "क्योंकि मैं आप का दास हूं, और मैं आपके नबुव्वत के चिराग़ से प्रकाश प्राप्त करने वाला हूं, और हमारा स्थायी रूप से कुछ भी नहीं। इसी कारण से मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अगर कोई व्यक्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद यह दावा करे कि मैं स्थायी रूप से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फैज़ के बिना मामूर हूं और ख़ुदा तआला से संबंध रखता हूँ तो वह निर्वासित और मख़ज़ूल है। अल्लाह तआला की अनन्त मुहर लग चुकी है इस बात पर कि कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के द्वार तक आ नहीं सकता सिवाय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण के। "

(मल्फूज़ात जिल्द 3, पृष्ठ 287 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

अल्लाह तआला की ओर जाने के अल्लाह तआला को मिलने के लिए एकमात्र द्वार है और वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात है।

तो यह हमारे विश्वास का हिस्सा है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया हैं और कुरआन ख़ातमुल किताब और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कोई नई शरीयत नहीं लेकर आए और न अब कोई नई व्यवस्था आ सकती है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च और महान स्थान ही में यह निहित है कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन और आप की ग़ुलामी में आने की वजह से आने वाले मसीह मौऊद और महदी मौऊद को नबी के स्थान से सम्मानित किया। किसी अन्य नबी को यह स्थान प्राप्त नहीं हुआ कि उस शरीयत वाले नबी की ग़ुलामी के कारण मामूर होने का सम्मान प्राप्त हुआ हो। तो यह हमारा विश्वास है और हम इस विश्वास पर कायम हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन नबय्यिीन हैं और कुरआन ख़ातमुल किताब और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और वही मसीह मौऊद और ख़ातमुल खुल्फ़ाय हैं जिनके आने की खबर हमें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी और उसे अपना सलाम पहुंचाने का इरशाद फ़रमाया था।

(अलमअजमुल औसत जिल्द 3, सफ़ा 383 से 384 हदीस, 4898 मुद्रित दारुल फिक्र ओमान जोर्डन 1999 ई)

जो अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान इस से ऊपर समझता है वह वास्तव में मुसलमान नहीं है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा दूसरे मुसलमान उलेमा और सरकारें इस बात को लेकर है कि हम ख़त्म नबुव्वत पर विश्वास नहीं रखते और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अन्तिम नबी नहीं मानते हम पर सभी प्रकार के फतवे लगाएं और अहमदियों को कष्ट पहुंचाने और मारने के लिए जन साधारण को उभारें लेकिन हमारे ईमान को कभी हिला नहीं सकते क्योंकि हम ने वह पाया जो मुहम्मद रसुलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम से चाहते थे। हम ने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और इश्क के तरीके मसीह मौऊद और महदी मौऊद से सीखे हैं जिन की जमाअत में शामिल होने की वजह से यह तथाकथित उल्मा हमें काफ़िर कहते और इस्लाम से बाहर निकालते हैं ।

आज अहमदियत के विरोधी इन बातों की वजह से और दुश्मनों की प्रतिद्वंद्विता के कारण हर अहमदी पर पहले से बढ़कर यह कर्तव्य है कि वह अपनी आस्था और व्यावहारिक स्थिति में एक ऐसा बदलाव लाए जो अल्लाह तआला को हमसे निकट कर दे जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि यह ज़मीन की मुखाल्फ़तें हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं अगर अर्श के ख़ुदा के साथ हमारा दृढ़ संबंध है। (उद्धरित किश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 15) इसलिए हमें अर्श के ख़ुदा से संलग्न होने की ज़रूरत है। बेशक, वे दिन आ रहे हैं जब सभी विरोध हवा हो जाएंगे। जब विरोधियों को उड़ा दिया जाएगा। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से किए गए ख़ुदा तआला के सभी वादे पूरे होंगे। लेकिन इस के लिए जैसा कि मैंने कहा, हमें अपने आप में एक पवित्र बदलाव करना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारी ईमानी और व्यावहारिक अवस्थाओं की गुणवत्ता देखना चाहते हैं इस बारे में एक स्थान पर फरमाते हैं:

"हे मेरे दोस्तों, जो मेरी बैअत में दाख़िल हो, ख़ुदा हमें और तुम्हें उन बातों की तौफीक़ दे जिन से वह राज़ी हो जाए। आज तुम थोड़े हो और तिरस्कार की नज़र से देखे गए हो और एस परीक्षा की घड़ी तुम पर है उसी अल्लाह तआला की सुन्नत के अनुसार जो आरम्भ से है प्रत्येक तरफ से कोशिश होगी कि तुम ठोकर खाओ और तुम प्रत्येक तरह से सताए जाओगे। और तरह तरह की बातें तुम्हें सुननी पड़ेंगी और प्रत्येक जो तुम्हें ज़बान या हाथ से कष्ट देगा वह सोचेगा कि वह इस्लाम का समर्थन कर रहा है। और कुछ आसमानी परीक्षा भी तुम पर आएंगी ताकि तुम अच्छी तरह से परीक्षा लिए जाओ। अत: तुम इस समय सुन रखो कि तुम्हारे विजय और ताकतवर होने की यह राह नहीं कि तुम अपने शुष्क तर्क से काम लो या उपहास के मुकाबला में उपहास की बातें करो या गाली के मुकाबला में गाली दे। क्योंकि यदि तुम ने इन मार्गों को अपना लिया तो तुम्हारे दिल कठोर हो जाऐंगे और तुम में केवल बातें ही बातें रह जाऐंगी जिन से ईश्वर घृणा करता है और तिरस्कार की दृष्टि में देखता है। अत: ऐसा मत करो, अपने ऊपर दो अभिशाप जमा कर लो। एक लोगों की और दूसरी ख़ुदा की भी।"

आप ने फरमाया: "बेशक याद रखो कि लोगों की लानत अगर अल्लाह तआला की लानत के साथ न हो कुछ भी बात नहीं। अगर ख़ुदा हमें नाबूद नहीं करना चाहता तो हमें कोई फर्क नहीं पड़ सकता। लेकिन अगर वह हमारा दुश्मन है, तो कोई भी हमें आश्रय नहीं दे सकता। " आप फरमाते हैं, "हम अल्लाह तआला को कैसे ख़ुश करें और कैसे वह हमारे साथ हो। इस का उसने बार-बार मुझे जवाब दिया कि तक्वे से।" इसलिए, तक्वा पैदा करना ज़रूरी है तक्वा में वृद्धि करना आवश्यक है। और तक्वा यही है कि हर नेकी में हम आगे से आगे बढ़ने की कोशिश करते रहें।

आप फरमाते हैं, "हे मेरे प्रिय भाइयो! कोशिश करो ताकि मुत्तकी बनो। बिना कर्म के सारी बातें तुच्छ हैं। अत: तक्वा यही है कि उन के सारे नुकसानों से बच कर ख़ुदा तआला की तरफ कदम उठाओ और नेकी की बारीक राहों को ध्यान में रखो। सब से पहले अपने दिलों में विनय स्वच्छता और ईमानदारी पैदा करो। और ठीक अर्थों में दिलों के नर्म और विनय वाले बन जाओ" दिलों में नर्मी पैदा करो।" कि प्रत्येक भलाई और बुराई का बीज पहले दिलों में ही पैदा होता है।" फरमाया कि" अगर तेरा दिल बुराई से ख़ाली है तो तेरी ज़बान भी बुराई से ख़ाली होगी। इसी प्रकार ही तेरी आंख और तेरे सारे अंग। प्रत्येक नूर या अन्धेरा पहले दिल में ही पैदा होता है और फिर धीरे धीर सारे शरीर में फैल जाता है।" आप फरमाते हैं " अत: अपने दिलों को हर दम टटोलते रहो और जैसे पान खाने वाला अपने पानों को फेरता रहता है और कचरा टुकड़े में काट कर बाहर फेंकता है, वैसे ही तुम भी अपने दिलों के छुपे विचारों और छुपी आदतों और छुपी भावनाओं और छुपी हुई बातों को अपनी आंखों के सामने फेरते रहो और जिस विचार या आदत या को रद्दी पाओ फेंक दो और ऐसा न हो कि वह तुम्हारे सारे दिल को नापाक कर दे। और फिर तुम काटे जाओ। आप फरमाते हैं " फिर इस के बाद तुम कोशिश करो और साथ ही अल्लाह तआला से शक्ति और हिम्मत मांगो कि तुम्हारे दिलों के पवित्र इरादे और पवित्र विचार और पवित्र भावनाएं और पवित्र ख्वाहिशें तुम्हारे अंगों और तुम्हारे सारी शक्तियों के माध्यम से प्रकट हों।" अर्थात व्यावहारिक रूप से भी इस का प्रकटन होना चाहिए। ताकि तुम्हारी नेकियां पूर्णता तक पहुंचें क्योंकि जो बात दिल से निकले और दिल तक ही सीमित रहे वह तुम्हें किसी स्तर तक नहीं पहुंचा सकती।" आप ने फरमाया" ख़ुदा तआला का सम्मान दिलों में बिठाओ और उस के प्रताप को अपनी आंखों के सामने रखो और याद रखो कि कुरआन करीम में पांच सौ के लगभग आदेश हैं और उस ने तुम्हारे प्रत्येक अंग और प्रत्येक ताकत और प्रत्येक ढंग और प्रत्येक हालत और प्रत्येक आयु और प्रत्येक समझ और प्रत्येक सोच और व्यक्तिगत और सामूहिक रूप के लिए एक नूरानी दावत तुम्हारी की है।" अत: बुद्धि के अनुसार भी, प्रकृति के अनुसार भी और जो अल्लाह तआला से संबंध है उसके अनुसार भी व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी एक दावत अल्लाह तआला ने की है और इसे हर अहमदी को समझने की ज़रूरत है और इस के लिए जहां ज्ञान प्राप्त करना है जहां ईमान की तरक्की करनी है वहां व्यावहारिक रूप से भी इस को प्रकट करना है। आप फरमाते हैं, अत: तुम इस दावत को धन्यवाद के साथ स्वीकार करो और जितने खाने तुम्हारे लिए तैयार किए गए हैं वे सारे खाओ और सब से लाभ उठाओ। जो आदमी भी इन सभी आदेशों में से एक को भी तोड़ता है मैं सच कहता हूं कि वह क़यामत के दिन पकड़ के योग्य होगा। अगर मुक्ति चाहते हो तो दीनुल अजायज़ धारण करो और नम्रता से कुरआन की बोझ अपनी गर्दनों पर उठाओ कि शरारत करने वाला हलाक होगा और सरकशी करने वाला जहन्नम में गिराया जाएगा। अत: जो ग़रीबी से गर्दन झुकाता है वह मौत से बच जाएगा। दुनिया की ख़ुशहाली की शर्तों से अल्लाह तआला की इबादत मत करो।" दुनिया की इच्छाओं को पूरा करने की शर्तें अपनी इबादतों में न लगाओ कि इस तरह से यह इबादत नहीं है। आप फरमाते हैं कि अगर तुम दुनियावी शर्तें लगाओगे तो "इस तरह के विचार के लिए गढ़ा सामने है बल्कि तुम इस लिए उस की उपासना करो कि इबादत एक स्रष्टा का हक तुम पर है। चाहे उपासना ही तुम्हारी जीवन हो जाए और तुम्हारी नेकियों का केवल यही उद्देश्य हो जाए कि वह सच्चा महबूब और सच्चा मुहसिन राज़ी हो जाए क्योंकि जो उस के कम विचार है वह ठोकर का स्थान है।"

मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो

मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है कि वह कूए सनम का रहनुमा
मेरा दिल उसने रौशन कर दिया है अंधेरे घर का वह मेरे दिया है
ख़बर ले ऐ मसीहा दर्द दिल की तेरे बीमार का दम घुट रहा है
मेरा हर ज़र्रा हो कुरबाने अहमद मेरे दिल का यही इक मुद्दआ है
उसी के इश्क में निकले मरी जाँ कि याद यार मैं भी इक मज़ा है
मुहम्मद जो हमारा पेश्वा है मुहम्मद जो महबूबे ख़ुदा है
हो उसके नाम पर कुर्बान सब कुछ कि वह शाहनशाह हर दो सिरा है
इसी से मेरा दिल पाता है तस्कीं वही इक राह दें का राहनुमा है

मुझे इस बात पर है फख़्र महमूद
मेरा माशूक महबूबे ख़ुदा है

☆ ☆ ☆

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 546 से 548)

अल्लाह तआला हमें इन बातों पर अमल करने की तौफीक़ प्रदान करे और प्रत्येक दिन हमारा प्रत्येक कदम नेकियों में आगे बढ़ने वाला हो। पाकिस्तान के अहमदियों को भी विशेष रूप से दुआओं की तरफ ध्यान देना चाहिए और दुआओं और अपनी अवस्थाओं की तरफ ध्यान देते हुए उन्हें अधिकतम ख़ुद तआला की नज़दीकी पाने की कोशिश करनी चाहिए कि वहाँ सबसे अधिक सख़्तियां अहमदियों पर की जा रही हैं और हर दिन उनके लिए एक नया कानून पारित किया जा रहा है। अल्लाह तआला सभी अहमदियों को अपनी सुरक्षा में रखे। दुश्मन की हर योजना असफल हो।

जलसा के बाद जलसा में शामिल सभी जो इस समय कादियान में मौजूद हैं अल्लाह तआला उन्हें भलाई से अपने घरों में लेकर जाए और जलसे के दिनों की बरकतें हमेशा उन के जीवन का हिस्सा बनने वाले हों।

इस के बाद हम दुआ करेंगे। लेकिन दुआ करने से पहले, मैं वहां की हाज़री की रिपोर्ट भी दे दूं। अल्लाह तआला की कृपा से इस समय 44 देशों के प्रतिनिधि मौजूद हैं और 20,048 की हाज़री है। पिछले साल की तुलना में छह हज़ार अधिक है और यहां की जो हाज़री है वह भी 5300 है। अल्लाह तआला सभी शामिल होने वालों की सुरक्षा करे। अब दुआ कर लें।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक से अधिक विवाह और उस की हिक्मतें

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए की किताब "सीरत खातुमन्नबिय्यीन" से एक अध्याय

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा की शादी के साथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हरम में बहुविवाह का आरम्भ होता है, इसलिए इस अवसर पर इस के बारे में एक छोटा सा नोट दर्ज करना अनुचित न होगा, क्योंकि इस से पहले कि बहुविवाह के बारे में कुछ लिखा जाए यह ज़रूरी लगता है कि वे उद्देश्य वर्णन कर दिए जाएं जो इस्लाम में विवाह के वर्णन किए गए हैं क्योंकि दूसरे कारणों के अतिरिक्त इन उद्देश्यों को बढ़ाना भी बहुविवाह का एक बुनियादी कारण है। अत: जानना चाहिए कि कुरआन करीम से विवाह के चार उद्देश्यों का पता चलता है प्रथम इंसान का कुछ शारीरिक और नैतिक और आध्यात्मिक बीमारियों और उनके बुरे परिणामों से संरक्षित हो जाना। इस बात को अरबी भाषा में "इहसान" कहते हैं जिसका अर्थ एक किले के भीतर संरक्षित होता है। दूसरा नस्ल का कायम रखना, तीसरा जीवन साथी का मिलना और जीवन की शान्ति चौथा मुहब्बत और रहमत के सम्बन्धों में विस्तार, अत: कुरआन शरीफ फरमाता है

وَ اُحِلَّ لَكُمۡ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمۡ اَنۡ تَبۡتَغُوۡا بِاَمۡوَالِكُمۡ مُّحۡصِنِيۡنَ غَيۡرَ مُسٰفِحِيۡنَ

(सूर: निसा: 25)

और हे मुस्लिम! उपर्युक्त वर्णित सभी महिलाओं के अतिरिक्त सभी औरतें तुम्हारे लिए जायज़ की जाती हैं यह कि तुम उन के मेहर निर्धारित कर के उन के साथ निकाह(शादी) करो। परन्तु तुम्हारे निकाह का उद्देश्य यह होना चाहिए कि तुम बीमारियों और बुराइयों से संरक्षित हो जाओ और यह उद्देश्य नहीं होना चाहिए कि तुम काम वासना में पड़ जाओ।

इस आयत में इहसान वाली बात वर्णन की गई है अर्थात् (क) कि निकाह के द्वारा मनुष्य कुछ उन विशेष प्रकार की शारीरिक रोगों से पीड़ित होने से बच जाए जो अकेले रहने के फलस्वरूप पैदा होती हैं और (ख) यह कि वे कुछ आध्यात्मिक और नैतिक बीमारियों से सुरक्षित हो जाए, लेकिन अशुद्ध विचारों और अशुद्ध संबंधों से पीड़ित न हो। इसी उद्देश्य को एक दूसरी आयत में वर्णन किया है

هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمۡ وَ اَنۡتُمۡ لِبَاسٌ لَّهُنَّ

(सूरह अल-बकरह 188)

हे मुस्लिम मर्दों! याद रखो कि तुम्हारी महिलाएं तुम्हारा लिबास (कपड़ा) हैं और तुम अपनी महिलाओं का लिबास हो।

इस का अर्थ है कि तुम एक दूसरे को बुराइयों और बीमारियों से बचाने का माध्यम हो जैसा कि लिबास इंसान का सर्दी और गर्मी से बचाने का माध्यम होता है इस आयत में चूंकि औरतों को भी शामिल करना था इस लिए वर्णन की शैली और सूक्ष्म कर दी गई इसी तरह इस आयत में यह भी इशारा है कि मर्द औरत एक दूसरे के लिए पर्दापोशी का माध्यम भी हैं जैसा कि लिबास भी पर्दापोशी करता है।

फिर फरमाता है।

نِسَآؤُكُمۡ حَرۡثٌ لَّكُمۡ ۪ فَاۡتُوۡا حَرۡثَكُمۡ اَنّٰى شِئۡتُمۡ ۪ وَ قَدِّمُوۡا لِاَنۡفُسِكُمۡ

(सूरह अल-बकरह 224)

हे मुसलमानों! तुम्हारी पत्नियां तुम्हारी खेतियां हैं जिन से तुम्हारी भविष्य की नस्ल की फसल ने तैय्यार होनी है। अत: अब तुम्हें अधिकार है कि जिस प्रकार चाहो अपनी खेतियों से व्यवहार करो। और जिस प्रकार की फसल अपने लिए पैदा करना चाहो कर लो।

इस आयत में नस्ल को बचाने का उद्देश्य वर्णन किया गया है अर्थात यह कि इंसानी नस्ल का क्रम जारी रहे। और साथ ही ख़ुदा तआला ने बहुत सूक्ष्म तरीके में यह भी वर्णन कर दिया है कि जब पत्नियों को द्वारा भविष्य की नस्ल का क्रम जारी होना है तो फिर इंसान को चाहिए कि अपनी पत्नी के साथ सम्बन्ध बनाने में वह तरीका धारण करे जिस के कारण भविष्य की नस्ल ख़राब न हो बल्कि बेहतर से बेहतर नस्ल पैदा हो।

फिर फरमाता है

خَلَقَ لَكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا لِّتَسۡكُنُوۡۤا اِلَيۡهَا وَ جَعَلَ بَيۡنَكُمۡ مَّوَدَّةً وَّ رَحۡمَةً

(सूरह-रूम: 22)

यानी अल्लाह तआला ने नस्ल में से ही तुम्हारे लिए पत्नियां बनाई हैं ताकि तुम उनके संबंध में मन की शान्ति प्राप्त करो और फिर इस सम्बन्ध को ख़ुदा ने तुम्हारे मध्य मुहब्बत और रहमत का माध्यम बना दिया है।

इस आयत में निकाह के तीसरे और चौथे उद्देश्य को वर्णन किया गया है अर्थात यह कि पति को पत्नी में और पत्नी को पति में जीवन साथी नज़र आए दोनों एक दूसरे के सम्बन्ध में मन की शान्ति प्राप्त करें। और दूसरे यह कि शादी के माध्यम से पति और पत्नी के रिश्तेदारों के बीच मुहब्बत और प्रेम के संबंध पैदा हो जाएं और नस्ली संबंधों के अतिरिक्त रिश्तेदारी के संबंधों के कारण भी विभिन्न ख़ानदानों और क़ौमों के मध्य मुहब्बत और रहमत की कड़ी में जुड़ जाने के अवसर मिलते रहें।

अत: इस्लामी शरीयत में, विवाह के चार पहलुओं का वर्णन किया गया है। सबसे पहले इहसान अर्थात कुछ शारीरिक और आध्यात्मिक बीमारियों से और उनके परिणामों से सुरक्षित रहना। द्वितीय नस्ल का अस्तित्व, तृतीय जीवन साथी से मन की शान्ति, चतुर्थ विभिन्न परिवारों या जातियों का आपस में प्रेम और दया के संबंध के माध्यम से मिल जाना और अगर विचार किया जाए तो यह सारे उद्देश्य न केवल बिल्कुल वैध और उचित हैं बल्कि बहुत पाकीज़ा और मानव प्रकृति तथा उस की मानव जाति की सटीक आवश्यकताओं के अनुसार हैं और उनसे पति पत्नी के रिश्ते को एक अच्छा आधार पर स्थापित किया गया है और इस संबंध से अच्छा परिणाम पैदा करने की कोशिश की गई है और उन उद्देश्यों से जिन का कुरआन शरीफ ने नाम लेकर नाजायज़ करार दिया है वह एश और काम वासना है।

अब हम उन उद्देश्यों का वर्णन करते हैं जो बहुविवाह की आज्ञा में इस्लाम ने समक्ष रखी हैं। इस्लामी शरीयत के अध्ययन से पता चलता है कि ये उद्देश्य दो प्रकार के हैं। सबसे पहले, वही सारे उद्देश्य जो इस्लाम ने निकाह के रखे हैं और जो ऊपर वर्णन हो चुके हैं। दूसरे वे विशेष उद्देश्य तो विशेष रूप से बहुविवाह के साथ जुड़े हैं। दूसरे उद्देश्यों को बहुविवाह के साथ इस लिए जोड़ा गया है ताकि कई बार एक पत्नी से निकाह का उद्देश्य पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होता इस लिए उसी उद्देश्य के

अधीन दूसरी पत्नी की आवश्यकता पैदा हो जाती है अर्थात जैसा शादी का एक उद्देश्य इहसान है अर्थात इस के कारण इंसान कुछ बीमारियों और बुराइयों से सुरक्षित रहे परन्तु हो सकता है कि आदमी की अवस्था इस प्रकार की हो कि वह एक औरत से सम्बन्ध जिस पर माहवारी, गर्भ अवस्था और गर्भ अवस्था के बाद के दिन दूध पिलाना और फिर विभिन्न प्रकार की बीमारियां आदि होती रहती हैं अपने तक्वा और पाकीज़गी को कायम न रख सकता हो। और अगर वह बहुत अधिक कोशिश से अपने आप को व्यावहारिक बुराई से बचाए भी रखे तो कम से कम उस के विचारों में नापाकी के विचार रहते हैं और या इस प्रकार के रहने से उसे किसी शारीरिक बीमारी में पीड़ित होने का भय हो तो इस प्रकार के आदमी का सहीह इलाज बहुविवाह के अतिरिक्त और कोई नहीं। अर्थात वही बात जो एक निकाह का कारण थी इस अवस्था में इस के लिए दूसरे निकाह का उद्देश्य हो जाएगी। इसी प्रकार निकाह का एक उद्देश्य नस्ल का पैदा होना है अगर किसी आदमी का यहां एक बीवी से कोई औलाद पैदा न हो या लड़के पैदा न हों तो यही उद्देश्य दूसरे निकाह का उचित कारण बन जाते हैं। इसी प्रकार शादी का एक उद्देश्य जीवन साथी से मन की शान्ति का प्राप्त होना है अगर इस की पत्नी चिरस्थायी बीमार है और इस की बीमारी इस अवस्था हो पहुंच गई है कि वह प्रत्येक समय बिस्तर पर ही रहती है या वह पागल हो जाए तो इस अवस्था में इस आदमी को जीवन साथी और मन की शान्ति के उद्देश्य को पूरा करने के लिए दूसरी पत्नी का आवश्यकता होगी। इसी प्रकार शादी का एक उद्देश्य विभिन्न ख़ानदानों को आपस में मिलाना और एक दूसरे के लिए मुहब्बत और रहमत के अवसर पैदा करना है परन्तु इस प्रकार हो सकता है कि एक आदमी ने आरम्भ में किसी एक ख़ानदान में शादी की हो जहां इस के लिए इस मुहब्बत के रिश्ता का स्थापित होना आवश्यक था मगर इस के बाद इस के लिए और भी ज़रूरी और आवश्यक अवसर आ जाएं जहां इस का सम्बन्ध स्थापित होना ख़ानदानी या क़ौमी या देश हित या राजनीतिक या धार्मिक उद्देश्यों के लिए बहुत आवश्यक हो तो इस अवस्था में इस पर अनुकरण करना ज़रूरी हो जाएगा।

अत: वे सारे उद्देश्य जो इस्लाम ने निकाह के लिए वर्णन किए हैं विशेष अवस्था में बहुविवाह का भी कारण बन जाते हैं और उपरोक्त अवस्थाएं उदाहरण के रूप में वर्णन की गई हैं वरना अन्य अवस्थाएं भी पैदा हो सकती हैं जब निकाह का उद्देश्य एक बीवी से पूरे रूप से या उत्तम रूप में प्राप्त न हो और दूसरी पत्नी की जायज़ तरीके से ज़रूरत पेश आ जाए परन्तु इन उद्देश्यों के अतिरिक्त इस्लाम ने बहुविवाह के कुछ कारण भी वर्णन किए हैं और वे तीन हैं। प्रथम अनाथों की हिफाज़त द्वित्तीय विधवाओं का प्रबन्ध तृतीय नस्ल की वृद्धि। अत: अल्लाह तआला फरमाता है।

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا تُقۡسِطُوۡا فِی الۡیَتٰمٰی فَانۡکِحُوۡا مَا طَابَ لَکُمۡ مِّنَ النِّسَآءِ مَثۡنٰی وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ۚ فَاِنۡ خِفۡتُمۡ اَلَّا تَعۡدِلُوۡا فَوَاحِدَۃً

(सूरे निसा: 4)

और हे मुसलमानों (इन युद्धों में जो तुम्हारे सामने हैं ज़रूरी है कि अनाथों की बहुतायत होगी और तुम्हें उन अनाथों की सुरक्षा के लिए बहुविवाह की ज़रूरत पड़ेगी। अत:) अगर तुम को इस का अंदेशा हो कि (एक पत्नी तक सीमित रहते हुए) तुम अनाथों की सुरक्षा और उन के अधिकारों को अदा करने में असमर्थ हैं, तो अपनी पसंद के अनुसार अधिक महिलाओं से शादियां करो। दो दो के साथ,तीन तीन के साथ और चार चार के साथ (लेकिन इससे अधिक नहीं, क्योंकि ख़ुदा की आंखों में यह सीमा तुम्हारी वैकल्पिक अवस्था के लिए पर्याप्त है, लेकिन यदि तुम्हें यह भय हो कि अपनी वित्तीय या शारीरिक या प्रशासनिक कमज़ोरियों के कारण या तबीयत की कमज़ोरी के कारण) तुम एक से अधिक महिलाओं से शादी कर के उनसे न्याय नहीं कर पाओगे, तो तुम्हें एक पत्नी से ही अनिवार्य रूप से शादी करनी चाहिए।

इस आयत में बहुविवाह के आदेश को अनाथों के उल्लेख के साथ मिला कर इस बात की ओर इशारा किया गया है कि वास्तव में अनाथों की बहुतायत भी बहुविवाह के कारणों में से एक बड़ी वजह है और चूँकि अनाथों की बहुतायत एक तरफ तो विधवाओं की अधिकता को चाहता है और दूसरी तरफ वह भविष्य के लिए नस्ल की कमी के भय का कारण बनता है और वैसे भी यह तीन स्थितियां युद्ध का अनिवार्य परिणाम हैं। इसलिए, इस आयत में ख़ुदा तआला ने बहुत सूक्ष्म रूप से बहुविवाह के सारे कारणों को एक साथ जमा कर दिया है। अर्थात्, अनाथों की सुरक्षा विधवाओं का प्रबन्ध और नस्ल की कमी का इलाज, और फिर आगे स्पष्टीकरण के लिए उन्हें अलग-अलग रूप से भी वर्णन किया है अत: अल्लाह तआला फरमाता है।

وَاَنۡکِحُوا الۡاَیَامٰی مِنۡکُمۡ (सूरह अन्नूर: 23)

हे मुसलमान ! (अब जब हमने आपके लिए बहुविवाह का वैकल्पिक उपचार स्वीकार कर दिया है) तो अब तुम्हें एक इस प्रकार का प्रबन्ध करना चाहिए कि कोई शादी शुदा औरत चाहे वे कुंवारी हो या विधवा बिना शादी के न रहे।

इस आयत में ग़ैर शादी शुदा औरतों विशेष रूप से विधवाओं की शादी की तरफ ध्यान दिलाया गया है।

फिर हदीस में आता है:

عَنۡ مَعۡقَلِ بۡنِ یَسَارٍ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم تَزَوَّجُوا الۡوَدُوۡدَ الۡوَلُوۡدَ فَاِنِّیۡ مُکَاثِرٌ بِکُمُ الۡاُمَمَ

(अबू दाऊद तथा निसाई)

अर्थात मकअल बिन यसार वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा से वर्णन फरमाते थे कि तुम्हें चाहिए कि मुहब्बत करने वाली अधिक बच्चे देने वाली औरतों के साथ शादियां किया करो, ताकि तुम्हारी संख्या बढ़े और मैं क़यामत के दिन अपनी उम्मत की अधिकता पर गर्व कर सकूं।

इस हदीस में नस्ल की बढ़ने की तरफ इशारा है।

इस प्रकार से यह कुल सात उद्देश्य होते हैं जो इस्लाम ने बहु विवाह के बारे में वर्णन किए हैं अर्थात शारीरिक और आध्यात्मिक बीमारियों से रक्षा, नस्ल का स्थापित करना, जीवन साथी से मुहब्बत और शान्ति, मुहब्बत और रहमत के सम्बन्धों में वृद्धि, अनाथों का प्रबन्ध, विधवाओं का प्रबन्ध और नस्ल की तरक्की। परन्तु अब प्रश्न यह होता है कि इन उद्देश्यों को प्राप्त किस प्रकार किया जाए। अर्थात किस नियम के अनुसार बीवी को चुना जाए कि ये उद्देश्य उत्तम रूप से पूरे हो जाऐं। अत: इस के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

تُنۡکَحُ الۡمَرۡاَۃُ لِاَرۡبَعٍ لِمَالِھَا وَلِحَسَبِھَا وَلِجَمَالِھَا وَلِدِیۡنِھَا فَاظۡفَرۡ بِذَاتِ الدِّیۡنِ تَرِبَتۡ یَدَاکَ

(बुख़ारी किताबुन्निकाह)

अर्थात विवाह में औरत का चयन चार प्रकार के विचारों के अधीन किया जाता है कुछ लोग औरत की आर्थिक स्थित को देख कर विवाह करते हैं। कुछ को ख़ानदान का विचार होता है। कुछ सुन्दरता और हुसन देखते हैं और कुछ लोग औरत की नेकी तथा धार्मिक अवस्था को सामने रखते हैं। परन्तु हे मुसलमानों तुम्हें चाहिए कि सदैव औरत की धार्मिक

अवस्था को प्राथमिकता दिया करो। यही तुम्हारी सफलता का तरीका और धर्म तथा संसार में उन्नति का कारण होगा।

इस हदीस में शादी के उद्देश्य के लिए बीवी को हासिल करने का नियम बताया गया है और वह यह है कि धार्मिक पक्ष को प्राथमिकता दी जाए और धार्मिक अवस्था से केवल औरत के व्यक्तिगत धार्मिक या नैतिक अवस्था मुराद नहीं है और न "दीन" (धर्म) का शब्द धर्म और आस्था के अर्थों में आता है बल्कि जैसा कि अरबी भाषा कि प्रसिद्ध कोष अकरबुल मवारिद में व्याख्या लिखी गई है कि "दीन" का शब्द अरबी में निम्नलिखित अर्थों में आता है प्रथम नैतिकता तथा आदत, द्वित्तीय रूहानी पवित्रता और पाकीज़गी, तृतीय धर्म, चतुर्थ क़ौम तथा जाति पंचम राजनीति तथा हुकूमत। अत: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह फरमाया है कि औरत के चयन में धार्मिक पक्ष को प्राथमिकता दो इस में जहां यह अभिप्राय है कि जहां बीवी इस प्रकार हो जो व्यक्तिगत रूप से नैतिकता की आदत तक्वा और धर्म में अच्छी हो ताकि पति तथा पत्नी के सम्बन्ध भी अच्छे रहें और भविष्य में औलाद पर भी इस के अच्छे प्रभाव पड़ें। वहां यह भी अभिप्राय है कि बीवी के चयन में वह साधारण धार्मिक पक्ष भी जो धर्म और क़ौम तथा राजनीति एवं हुकूमत के साथ सम्बन्ध रखते हैं अपने अपने स्थान पर ध्यान देने चाहिए। और अगर इस स्थान पर किसी को यह शंका हो कि शाब्दिक रूप से ये सब अर्थ ठीक हों परन्तु यह किस प्रकार स्वीकार किया जा सकता है कि एक ही शब्द के एक समय में इतने अर्थ हों तो इस का उत्तर यह कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक कानून बनाने वाले नबी थे। आप का कलाम कानूनी कलाम का रगं रखता था जो हमेशा व्यापक अर्थ वाला और बहुत अधिक सार गर्भित होता था और एक एक शब्द में कई कई पक्ष होते थे और इस आलोक में हमें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्दों के अर्थ करने चाहिए और बहराल जब कोष से ये अर्थ ठाक हैं तो किसी को अपत्ति का हक नहीं।

सारांक्ष यह कि इस्लाम ने शादी के उद्देश्य चार और बहुविवाह के सात वर्णन किए हैं और इन उद्देश्यों को सर्वोत्तम रूप से प्राप्त करने के लिए बीवी के चयन के बारे में यह हिदायत दी है कि इस में औरत के ज़ाती गुण के अतिरिक्त धर्म और क़ौम तथा राजनीति तथा हुकूमत को प्राथमिकता देना चाहिए। इस से यह अभिप्राय नहीं कि निकाह के मामले में अन्य गुणों को नहीं देखना चाहिए क्योंकि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी हदीसों से प्रमाणित होता है कि आप ने मुसलमान औरतों के दूसरे गुणों को सामने रखने की आज्ञा दी है बल्कि कई बार ख़ुद इस की तहरीक फरमाई है कि दूसरी बातों को भी देख लिया करो। अत: बावजूद पर्दा के आदेश के आप यह तहरीक फरमाते थे कि निकाह से पहले मर्द को चाहिए कि औरत को ख़ुद देख ले। (तिर्ज़िमी अबवाबुन्निकाह) ताकि बाद में शक्ल तथा सूरत के नापसन्द होने के कारण किसी प्रकार की कठिनाई न हो। इसी प्रकार यथा उचित आर्थिक अवस्था की भी तहरीक की गई है।

(मुस्लिम किताबुरिज़ाअ)

इसी प्रकार एक सीमा तक आयु और तबीयत की समानता को भी ध्यान में रखने की सिफारिश की गई है।

(मुस्लिम किताबुरिज़ाअ)

और यही नियम दूसरी अवस्था में लागू होते हैं मगर जिस बात की इस्लाम हिदायत देता है कि इन बातों को धार्मिक पक्ष के मुकाबला में प्राथमिकता न दी जाए क्योंकि अगर धार्मिक पक्ष के गुण मौजूद न हों तो केवल ये गुण वास्तविक और चिरस्थायी आन्नद का कारण नहीं बन सकते। बल्कि कई बार कष्टदायक और हानि पहुंचाने वाले साबित होते हैं।

अब एक तरफ बहुविवाह के उद्देश्य और दूसरी तरफ बीवियों के चयन के इस्लाम के नियम को सामने रखा जाए तो प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि यह एक बहुत ही बरकतों वाला प्रबन्ध है जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा अल्लाह तआला ने दुनिया में स्थापित किया है और इस में मानव जाति के बड़े से बड़े हिस्से की बड़ी सी बड़ी भलाई सम्मुख है वास्तव में जिन लोगों ने बहु विवाह के विरोध में अपनी राय प्रकट की है उन्हों ने अपनी दृष्टि को बहुत की सीमित रखा है। और पति तथा पत्नी के भावनात्मक सम्बन्धों के अतिरिक्त किसी अन्य बात की तरफ उन की नज़र नहीं उठी और न उन लोगों ने कभी ठण्डे दिल से शादी के उद्देश्य और मानव जाति की आवश्यकता के बारे में ध्यान दिया है वरना यह बात इस प्रकार की न थी कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस के गुणों के इंकार करने का ताकत रखता। फिर यह भी नहीं सोचा गया कि बहुविवाह का प्रबन्ध इस्लाम में नियम के रूप में नहीं है बल्कि यह एक वैकल्प है जो शादी के जायज़ उद्देश्यों को प्राप्त करने और इंसानी नस्ल की जायज़ ज़रूरतों को पूरे करने के लिए विशेष अवस्था को सामने देखते हुए जारी किया गया है। अत: इस पर राय लगाते समय इस बात को सोचना चाहिए कि क्या दुनिया में इंसान को इस प्रकार की अवस्था नहीं आ सकतीं कि जिन के अधीन बहु विवाह अनिवार्य इलाज करार पाता है। और इंसान की ज़ात या उस के ख़ानदान या उस का कौम या उस के देश के हित इस बात के साथ जुड़ जाते हैं कि वह दूसरी पत्नी से शादी करे। मुझे सम्राट नेपोलियन के जीवन की वह घटना नहीं भूलती कि जब उसने अपने घरेलू हितों के अधीन संतान प्राप्त करने के लिए दूसरी पत्नी की ज़रूरत महसूस की लेकिन यह जरूरत कैसे पूरी की गई? इसकी कल्पना मेरे शरीर पर एक कपकपी लाती है। सम्राट की मलका जोसेफफेन के तलाक की घटना इतिहास की सबसे अंधेरी घटनाओं में से एक है, और इस की तह में यह एक झूठी भावना है कि मनुष्यों को किसी भी अवस्था में एक से अधिक पत्नी नहीं करना चाहिए। अफसोस! यह झूठा भावनात्मक विचार कई कमज़ोर लोगों की कमज़ोरी पर डाका डालता है। कई परिवारों को दुनिया से बेनस्ल कर के मिटा दिया। कई घरों की खुशी को नष्ट कर दिया। कई परिवारों और कई राष्ट्रों और कई देशों की एकता की उम्मीदों पर पानी फेर डाला। कई अनाथों को आवारा किया। कई विधवाओं के परेशानी की अवस्था में पीछे छोड़ गईं। कई देशों की नस्लों को अवनति के पथ पर डाल कर उनके विनाश का बीज बोया और यह सब कुछ केवल इसलिए हुआ कि महिला हर मामले में अपने पति की अकेली मालिक बनी रहे! लेकिन यह एक अजीब बलिदान है कि एक बड़ी चीज़ को एक छोटी चीज पर कुरबान किया जाता है, हालांकि हक यह था कि नैतिक लाभों पर भौतिक लाभ कुर्बान किए जाते। धार्मिक मुनाफे पर सांसारिक मुनाफे को त्याग दिया गया। पारिवारिक लाभों पर व्यक्तिगत लाभों को त्याग दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय हित पर व्यक्तिगत हित कुर्बान किए जाते और वास्तव में बहुविवाह का प्रबंधन ही एक कुर्बानी का प्रबंधन है और इसमें पति और पत्नी दोनों व्यक्तिगत और शारीरिक बलिदान द्वारा नैतिक और धार्मिक और पारिवारिक और राष्ट्रीय और देशी के लाभ के रास्ता खोला गया है।

सारांक्ष यह कि इस्लाम में बहुविवाह का प्रबंध एक अपवाद प्रबंध है जो मनुष्य की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर जारी किया गया है और यह एक बलिदान है जो पुरुष और महिला दोनों को अपने आचरण और धर्म और परिवार और राष्ट्र और देश के लिए विशेष परिस्थितियों में करना पड़ता है और इस्लाम हर व्यक्ति से उम्मीद करता है कि वह इस तरह की स्थिति पैदा होने पर जो बहुविवाह के लिए आवश्यक हैं अपनी इच्छा और अपने शारीरिक आराम को अधिक बड़े हित के लिए बलिदान देने में पीछे नहीं हटेगा और अवसर आने पर यह प्रमाणित करेगा कि

उसका जीवन उसके परिवार या घर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह महान मानवता वाला एक व्यक्ति है जिसके लिए उसे अपनी व्यक्तिगत हितों को कुरबान करने में कष्ट नहीं होना चाहिए।

फिर यह भी याद रखना चाहिए कि बहुविवाह की जायज़ ज़रूरत पैदा होने पर भी इस्लाम ने बहुविवाह ज़रूरी नहीं करार दिया बल्कि जैसा कि ऊपर वर्णित है उसे इस शर्त के अधीन कर दिया है कि अगर व्यक्ति न्याय के सक्षम हो तो तब बहुविवाह का पालन करे, अन्यथा बहरहाल केवल एक पत्नी करने पर ही इकतफ़ा करे और न्याय से इस जगह केवल पत्नियों के बीच न्याय का मतलब नहीं बल्कि उनके सभी प्रकार के अधिकार देना अभिप्राय है जो बहुविवाह के मामले में मनुष्य आते हैं अत: बहु विवाह की दो शर्तें हुईं। सबसे पहले, उन जायज़ उद्देश्यों में से किसी का पैदा हो जाना जो इस्लाम ने उस के लिए निर्धारित की है। दूसरा इंसान का न्याय कर सकने को योग्य होना और उन दोनों शर्तों को पूरा होने के बिना बहुविवाह पर अनुकरण करने वाला आदमी अपने समय अपने ध्यान अपने माल अपने बाहरी व्यवहार सारांक्ष कि दिल की मुहब्बत के अतिरिक्त जिस पर के आदमी का अधिकार नहीं होता बाकी सब बातों में अपनी बीवियों के साथ एक जैसा मामला करे।

(मिश्कात किताबुल किस्म)

और ध्यान से देखा जाए तो यह पाबन्दी ख़ुद एक महान कुरबानी है जो पति को करनी पड़ती है? विशेषकर के इस प्रकार की अवस्था में कि उस अपनी पत्नियों में से उन के व्यक्तिगत हालत और योग्यता के कारण किसी से अधिक मुहब्बत होती है और किसी से कम। परन्तु फिर भी वह विवश होता है कि अपनी प्रत्येक वस्तु को तराज़ू की तरह तोल कर अपनी सारी पत्नियों में बराबर बराबर बांटे। और यह कुरबानी केवल पति की ही कुरबानी नहीं है बल्कि इस कुरबानी में इस की पत्नियां भी बराबर की शरीक होती हैं। इस अवस्था में प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति सोच सकता है कि न केवल यह कि इस्लाम ने बहुविवाह के मामला में भोग विलास से मना किया है बल्कि उस ने इस के लिए शर्तें भी इस प्रकार की लगी दी हैं कि कोई आदमी इन शर्तों पर चलता हुआ भोग विलास में पड़ ही नहीं सकता।

इस अवसर पर यह भी वर्णन करना आवशयक मालूम पड़ता है कि इस्लाम से पहले अरबों में बल्कि दुनिया की किसी भी क़ौम में बहुविवाह की कोई सीमा नहीं थी। और प्रत्येक आदमी जितनी पत्नियां भी चाहता था रख सकता था। परन्तु इस्लाम ने दूसरी शर्तों के लगाने के संख्या की दृष्टि से भी इसे अधिक से अधिक चार तक सीमित कर दिया है। अत: तारीख़ से प्रमाणित है कि जिन मुसलमानों की चार से अधिक पत्नियां थीं उन्हें यह आदेश दिया जाता था कि वह बाकियों को तलाक दे दें जैसे ग़ीलान बिन सलमा सकफी जब मुसलमान हुए तो उन की दस बीवियां थीं जिन में से छ: को आदेश देकर तलाक दिलवा दी गई।

(तिर्मज़ि अब्वाबुन्निकाह)

अब हम बताते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादियों में कौन से उद्देश्य सम्मुख थे। क्योंकि हमारा असल विषय यही है। अत: जानना चाहिए कि साधारण उद्देश्य तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादियों में वही थीं जो इस्लाम ने प्राय शादी और बहुविवाह के वर्णन किए हैं। और जिन का वर्णन ऊपर हो चुका है और उन उद्देश्यों में से विशेष रूप से आप के सामने नस्ल का कायम रहना मुहब्बत और रहमत के सम्बन्धों का विस्तार और अनाथों और विधवाओं का प्रबन्ध था इस उद्देश्य के लिए आप के सम्मुख इस प्रकार की औरतें थीं जो क़ौम, धर्म, मिल्लत तथा हुकूमत की दृष्टि से उचित थीं। परन्तु इन साधारण उद्देश्यों के अतिरिक्त आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विशेष हालात के कारण आप की शादियों के कुछ विशेष कारण थे और ये उद्देश्य दो थे। प्रथम आप के व्यक्तिगत नमूना से कुछ जाहिलाना रस्मों का खंडन, दूसरा कुछ उचित औरतों को आप के संरक्षण में रख कर उन के द्वारा इस्लामी शरीयत के इस हिस्सा की मज़बूती जो औरतों से सम्बन्ध रखता है और मुसलमान औरतों की शिक्षा तथा तरबियत। जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाता है

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا

(सूरत इहज़ाब 38)

अर्थात हे रसूल! जब तेरे मुंह बोले बेटे ज़ैद बिन हारसा ने अपनी पत्नी ज़ैनब को तलाक देदी तो हम ने उसकी शादी का प्रस्ताव स्वयं तेरे साथ कर दिया ताकि इस के द्वारा यह जाहिलाना रस्म मिट जाए कि मुंह बोला बेटा असल बेटे की तरह हो जाता है और उसकी तलाकशुदा पत्नी या विधवा बेटा बनाने वाले व्यक्ति के लिए वैध नहीं होती और भविष्य के लिए मोमिनों के दिलों में इस बात के बारे में कोई शंका या ख़लिश बाकी न रहे।

इस आयत में पहला उद्देश्य वर्णन किया गया है और वह यह कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के व्यावहारिक नमूना के माध्यम से कुछ उनके जाहिलाना रस्मों का खण्डन किया जाए जो अरबों की तबीयत में इतनी सुदृढ़ हो चुकी थीं कि उनका वास्तविक खण्डन इस के बिना संभव न था कि आप इस मामला में ख़ुद एक व्यावहारिक नमूना स्थापित करें। इसलिए मुंह बोला बेटा बनाने की रस्म अरब में बहुत मज़बूत से प्रचलित थी और इस मामले में अल्लाह तआला का आदेश नाज़िल होने से पहले आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने स्वतंत्र किए गए ग़ुलाम ज़ैद बन हारसा को अपना बेटा बनाया हुआ था, इसलिए जब यह हुक्म नाज़िल हुआ कि किसी व्यक्ति के केवल मुंह बोला बेटा बना लेने से वह मूल बेटा नहीं हो जाता और उसके बाद यह घटना पेश आ गया कि ज़ैद बन हारसा ने अपनी पत्नी ज़ैनब बिनत जहश को तलाक दे दी तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदाई आदेश के अधीन ज़ैनब के साथ ख़ुद शादी का प्रस्ताव भेजा और इस तरह इस जाहिलाना रस्म का खण्डन किया जो आप के व्यावहारिक नमूना के बिना पूरी तरह मिटना असम्भव थी। इसके अलावा आप ने ज़ैनब के साथ शादी करके इस बात में भी व्यावहारिक नमूना स्थापित फरमा दिया कि किसी तलाकशुदा महिला के साथ शादी करना कोई दोष की बात नहीं है।

फिर फरमाता है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۹﴾ وَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۰﴾

(सूरह अहज़ाब 29-30)

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ

(सूरह अहज़ाब 33)

وَ اَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿۳۴﴾ وَ اذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَ الْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا

(सूरह अहज़ाब 34.35)

अर्थात हे नबी! तुम अपनी पत्नियों से कह दो कि अगर तुम्हें यह इच्छा है कि दुनिया की जीवन के सामान तुम्हें मिल जाए तो आओ मैं तुम्हें दुनिया का धन दौलत दिए देता हूं, लेकिन इस अवस्था में तुम मेरी पत्नियाँ नहीं रह सकतीं बल्कि फिर एहसान और मरूत के साथ मैं तुम्हें छोड़ दूंगा लेकिन अगर तुम ख़ुदा और उसके रसूल की इच्छा रखती हो और भविष्य का इनाम चाहती हो तो सुन लो कि तुम में से इन नेकियों के लिए जो ख़ुदा की इच्छा को पूरा करें ख़ुदा ने बहुत बड़ा इनाम तैयार किया है। हे नबी की पत्नियों! तुम साधारण महिलाओं की तरह नहीं हो। अगर तुम तक्वा धारण करो और नमाज़ों को उसकी असली स्थिति में स्थापित करो और ज़कात दो और अल्लाह तआला और उसके रसूल की पूरी पूरी आज्ञापालन (क्योंकि ख़ुदा ने तुम्हें एक विशेष काम के लिए चुना है) हे नबी के अहले बैत! अल्लाह तआला चाहता है कि तुम से हर प्रकार की कमज़ोरियों और कमियों को दूर करके तुम्हें ख़ूब अच्छी तरह पाक व साफ कर ताकि तुम उन अल्लाह की आयतों और उन की हिक्मत की बातों को लोगों तक पहुंचाओ जो नबी के माध्यम से तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं। और ख़ुदा तआला तुम्हारे माध्यम से यह काम इस लिए लेना चाहता है कि वह सूक्ष्म होने के कारण लोगों की नज़रों से छुपा हुआ है तो ख़बीर होने के कारण वह लोगों की ज़रूरतों को जानता है अत: ज़रूरी है कि वह हिदायत का काम लोगों की भलाई के लिए करे।

इस आयत ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बहुविवाह के दूसरे उद्देश्य को बता दिया है। अर्थात यह कि आप के साथ विशेष औरतों को साथ रख कर मुसलमान औरतों की शिक्षा और तरबियत के लिए तैय्यार किया जाए। यह वह विशेष उद्देश्य है जिस के लिए आप की शादियां हुईं। और प्रत्येक आदमी समझ सकता है कि यह एक विशेष आवश्यकता थी जो आप की हस्ती के साथ विशेष थी। और इसीलिए साधारण मुसलमानों के लिए जो बहुविवाह की सीमा निर्धारित की गई इस से आप बाहर हैं। वास्तव में चूंकि आप एक शरीयत वाले नबी थे और आप के माध्यम से दुनिया में नई शरीयत और कानून तथा सभ्यता की बुनियाद पड़नी थी। इसलिए केवल इतना काफी नहीं था कि आप के द्वारा नए आदेशों का प्रकाशन हो जाता बल्कि इस बात की भी आवश्यकता थी कि आप ख़ुद अपनी निगरानी में इस नई शरीयत को विस्तार से जारी फरमाते और लोगों के जीवन को इस नई शरीयत पर चला देते जो इस्लाम ने स्थापित की थी। यह काम एक बहुत कठिन और नाज़ुक काम था और मर्दों के मामला में भी आप के सामने बहुत सी कठिनाइयां थीं परन्तु औरतों के बारे में तो यह एक बहुत ही कठिन काम था क्योंकि प्रथम तो यह कि पहले उन के अपने घरों में रहने के कारण अपने घरेलू कामों के व्यस्तता के उन्हें आप की संगत से लाभ उठाने के अधिक अवसर न थे। दूसरे उस कुदरती लज्जा के कारण जो औरतों में पाई जाती है वे उन विशेष मस्लों को जो औरतों से सम्बंधित हैं अधिक आज़ादी के साथ आप से पूछ न सकती थीं। और इस के मुकाबला में औरतों में शिक्षा कि कमी जाहिलाना रस्मों की पाबन्दी अधिक होती है जिस के कारण वे अपने निर्धारित तीरके पर किसी प्रकार की तब्दीली करने के लिए जल्दी तैय्यार नहीं होतीं। इस अवस्था में औरतों की शिक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध करने की आवश्यकता थी और इस की बेहतरीन अवस्था यही थी कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उचित औरतों के साथ शादी कर के उन्हें अपनी तरबियत में रख कर इस योग्य बना दें और फिर आप की यह औरतें मुसलमान आरतों की शिक्षा का प्रबन्ध करें। अत: यह विचार कामयाब हुआ और मुसलमान औरतों ने बहुत ख़ूबी के साथ बहुत कम समय में अपने जीवन के नवीन शरीयत के अनुसार बना लिया। यहां तक कि दुनिया की किसी क़ौम में यह उदाहरण नज़र नहीं आता औरतों ने इतने कम समय में इतनी पूर्णता के साथ बिल्कुल नए कानून और नए धर्म सभ्यता को धारण कर लिया हो।

इस बात का एक व्यावहारिक प्रमाण कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादियां नफस के उद्देश्य से न थीं बल्कि धार्मिक उद्देश्य के लिए थीं इस बात से भी मिलता है कि आप ने कुछ इस प्रकार की औरतों से भी शादी फरमाई जो इतनी आयु को पहुंच चुकी थीं कि वह औलाद पैदा करने के योग्य न थीं। जैसे उम्मे सलमा जिन से आप ने 4 हिजरी में शादी की उन की आयु शादी के समय औलाद के जन्म की आयु से बढ़ चुकी थी। अत: उन्होंने इस कारण से मना भी किया परन्तु चूंकि आप का उद्देश्य धार्मिक था और इस उद्देश्य के लिए वह बहुत उचित थीं इस लिए आप ने इन को बार बार कह कर राज़ी करके इन से शादी की।

(निसाई बहावाला जरकानी जिल्द 2 हालात उम्मे सलमा तथा इब्ने सअद जिल्द 8 हालात उम्मे सलमा)

अत: वे उद्देश्य जिस का कारण आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम विवाह की शादियां हुईं बहुत ही मुबारक और पवित्र थीं और उनमें प्रमुख रूप से नबुव्वत के फर्ज़ों का अदा करना समक्ष था और केवल शादियों तक ही नहीं बल्कि अगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सारे जीवन का अध्ययन किया जाए तो पता लगता है कि आप जो काम भी करते थे चाहे वह ज़ाहिरी तौर पर दुनिया का हो या धर्म का इसमें कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप का अभिप्राय नबुव्वत के कर्त्तव्यों को अदा करना होता था और दुनिया की नेअमतों से आप को कभी भी शौक नहीं हुआ और नीचे लिखी हदीस बेशक आप के जीवन का सबसे अच्छा नक्शा है:

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم نَامَ عَلٰی حَصِیْرٍ فَقَامَ وَقَدْ اَثَّرَ فِیْ جَسَدِہٖ فَقَالَ ابْنُ مَسْعُوْدٍ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ لَوْ اَمَرْتَنَا اَنْ نَبْسُطَ لَکَ وَنَعْمَلَ فَقَالَ مَالِیْ وَلِلدُّنْیَا وَمَا اَنَا وَالدُّنْیَا اِلَّا کَرَاکِبٍ اِسْتَظَلَّ تَحْتَ شَجَرَۃٍ ثُمَّ رَاحَ وَتَرَکَھَا

(अहमद व तिर्मज़ी बहवाला मिशक़ात किताबुर्रिकाक पृष्ठ 442)

अर्थात इब्ने मसूद रिवायत करते हैं कि एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मोटी और खुदरी चटाई पर लेट कर सो गए जब आप उठे तो चटाई के निशान आप के शरीर पर दिखाई दे रहा था। इस पर मैंने कहा हे रसूल अल्लाह आप पसन्द फरमाऐं तो हम आपके लिए आराम वाला और शानदार सामान प्रस्तुत कर दें। आप ने फरमाया, इब्ने मसूद ! मुझे दुनिया की नेअमतों से क्या काम है मेरा और दुनिया का उदाहरण तो यह है कि एक सवारी रास्ते पर चली जाती है और वह थोड़ी देर के लिए एक पेड़ की छाया के नीचे दम लेने के लिए ठहर जाए और फिर उठकर अपना रास्ता ले।

इस हदीस से यह मतलब नहीं है कि दुनिया की नेअमतों से लाभ उठाना मना है क्योंकि इस्लाम किसी वैध नेअमतों से लाभ उठाने से मना नहीं करता बल्कि ख़ुद कुरआन शरीफ में यह दुआ सिखाई गई है:

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً

(अलबक़रा: 202) अर्थात हे हमारे रब हमें दुनिया की नेअमतों से भी हिस्सा दे और आख़रत की नेअमतों से भी भाग दे।

अत: ऊपर वाली हदीस के केवल यह अर्थ हैं कि मनुष्य को अपने जीवन का मूल उद्देश्य दुनिया की नेअमतों को प्राप्त करना नहीं समझना चाहिए और साथ ही इस हदीस से यह सबूत मिलता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को व्यक्तिगत रूप से दुनिया की नेअमतों का बिल्कुल कोई शौक नहीं था और जहां तक दुनिया की नेअमतों का संबंध है तो आप का जीवन एक मुसाफिर का जीवन था।

बहुविवाह संबंधित इस नोट में यह उल्लेख भी बे मौका न होगा कि बहुविवाह अनुमति देने में इस्लाम अकेला नहीं है बल्कि दुनिया के अक्सर धर्मों में बहुविवाह की अनुमति दी गई है जैसे मूसवी शरीअत में इसकी अनुमति है। (अपवाद अध्याय 21, आयत 15, सलातीन 1 अध्याय 11 आयत 3) और बनी इस्राईल के कई नबियों ने इस के व्यावहारिक रूप से उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। (उदाहरण के लिए देखो हज़रत इब्राहीम व हज़रत याकूब और हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान अलैहिमुस्सलाम के जीवन के हालात)

हिंदुओं के धर्म में बहुविवाह की अनुमति है। (मनु 9/122, 9 / 149,9 /183) और कई हिन्दू बुज़ुर्ग कई पत्नियां रखते हैं उदाहरण के लिए, श्री कृष्ण जी बहुविवाह करने वाले थे। (श्रीकृष्ण लेखक लाला लाजपत राय पृष्ठ 97,98) और हिन्दू राजे महाराज तो अब तक बहुविवाह पर अनुकरण करते हैं। इसी तरह हज़रत मसीह नासरी का भी कोई कथन बहुविवाह के ख़िलाफ मरवी नहीं है और चूंकि मूसवी शरीयत में उसकी अनुमति थी और व्यवहार भी हज़रत मसीह नासरी के ज़माने में बहुविवाह का रिवाज था, इसलिए उनकी ख़ामोशी से यही निष्कर्ष निकाला जाएगा उन्होंने इसे वैध माना। इसलिए इस्लाम ने इसमें कोई नवीनता नहीं की। हां इस्लाम ने यह क्या है कि बहुविवाह को परिसीमन कर दिया और उसे इस प्रकार की शर्तों के अधीन कर दिया कि लोगों और राष्ट्रों के अपवाद स्थितियों के लिए एक उपयोगी और मुबारक प्रणाली स्थापित हो गई।

इस नोट के अंत में यह उल्लेख भी आवश्यक है कि यद्यपि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोधियों के आप के विवाह पर कड़ी आपत्तियां की गई हैं और हर व्यक्ति ने अपनी प्रकृति और अपने विचारों के अनुसार आप के बहुविवाह के मामला को देखा मगर फिर भी कभी सच्चाई विरोधियों के कलम और ज़बान पर भी हावी हो गई है और उन्हें अगर पूर्ण रूप में नहीं तो कम से कम आंशिक रूप से इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ा है। अत: श्री मारगोलिस जिनकी आंख आमतौर हर सीधी बात को उल्टा देखने के आदी है इस मामले में वास्तविकता स्वीकार करने पर मजबूर होते हैं। वह अपनी किताब "मुहम्मद" में लिखते हैं:

"मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की कई शादियां जो ख़दीजा के बाद हुईं अधिकांश यूरोपीय लेखकों की नज़र में नफसानी इच्छाओं पर आधारित करार दिए गए हैं लेकिन विचार करने से लगता है कि वह ज्यादातर इस भावना पर आधारित नहीं थीं। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की कई शादियां राष्ट्रीय और राजनीतिक आवश्यकताओं के अधीन थीं क्योंकि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) यह चाहते थे कि अपने खास सहाबियों को विवाह के माध्यम से अपनी ज़ात के साथ प्रेम के संबंध में और मज़बूत करें। अबू बकर और उमर की बेटियों की शादियां निश्चित रूप से इस विचार के अधीन की गई थीं। इसी तरह बड़े बड़े दुश्मनों और जीते गए रईसों की लड़कियों के साथ भी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के विवाह राजनीतिक स्वार्थों के अधीन हुआ थे .....बाकी विवाह इस इरादे से थे कि आप को पुत्र संतान मिल जाए जिस की आप को बहुत इच्छा रहती थी।"

(मारगोलीस पृष्ठ 176-177)

यह इस व्यक्ति की राय है कि जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी लिखने वालों में द्वेष और पूर्वाग्रह के आधार पर शायद सबसे आगे है और यद्यपि मारगोलीस साहिब की यह राय बिल्कुल ग़लती से साफ नहीं है लेकिन यह सबूत ज़रूर मिलता है कि सच्चाई किस प्रकार एक द्वेष करने वाले दिल को भी विजयी कर लेती है।

(सीरत ख़ातमन्नबय्यीन पृष्ठ 432)

☆ ☆ ☆

सलाम

बहज़ूर सय्यदुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब रज़ि

बदर गाहे ज़ी शाने ख़ैरुल अनाम
शफीउल वरा मरजअ ख़ासो आम
बसद इजज़ो मिन्नत बसद इहतराम
यह करता है अर्ज़ आप का इक ग़ुलाम
कि ऐ शाहे कौनीन आली मकाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

हसीनान आलम हुए शरमगीं
जो देखा वह हुस्न और वह नूर जबीं
फिर उस पर वह अख़लाके अकमल तरीं
कि दुश्मन भी कहने लगे आफरीं
ज़हे ख़ुलके कामिल ज़हे हुसने ताम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

ख़लाइक़ दिल थे यकीं से तही
बुतों ने थी हक की जगह घेर ली
ज़लालत थी दुनिया पे वह छा रही
कि तौहीद ढूंढे से मिलती न थी
हुआ आप के दम से इसका क़याम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

मुहब्बत से घायल किया आप ने
दलायल से कायल किया आप ने
जहालत को ज़ायल किया आप ने
शरीयत को कामिल किया आप ने
बयां कर दिए सब हलाल व हराम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

नबुव्वत के थे जिस कदर भी कमाल
वह सब आप में जमा थे ला मुहाल
सिफाते जमाल और सिफाते जलाल
हर इक रंग है बस अदीमुल मिसाल
लिया ज़ुल्म का अफ़ू से इंतकाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

मुकद्दस हयात और मुतह्हर मज़ाक
इताअत में सकता इबादत में ताक
सवारे जहां गीर यकराँ बुराक
कि बगुज़शत अज़ कैसर नीली रवाक
मुहम्मद ही नाम और मुहम्मद ही काम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

अलमदारे उश्शाके ज़ाते यगाँ
सिपहदारे अफवाजे कुद्दुसिया
मआरिफ़ का इक कुलज़ुम बेकरां
इफ़ाज़ात में ज़िन्दा ए जावेदां
पिला साकिया आबे कौसर का जाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

☆ ☆ ☆

सीरत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का विजय की महान घटनाओं के आलोक में

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रमज़ान सन् 8 हिज्री मुताबिक दिसम्बर 629 ई. को इस अन्तिम युद्ध के लिए रवाना हुए जिस ने अरब में इस्लाम की स्थापना कर दी। यह घटना इस प्रकार हुई कि हुदैबिया की संधि के अवसर पर यह निर्णय हुआ था कि अरब क़बीलों में से जो चाहें मक्का वालों से मिल जाएँ और जो चाहें मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ मिल जाएँ। द्वितीय दस वर्ष तक दोनों पक्षों को एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध की अनुमति नहीं होगी सिवाए इसके कि एक पक्ष दूसरे पर आक्रमण करके समझौता भंग कर दे। इस समझौते के अन्तर्गत अरब का बनू बिक्र क़बीला मक्का वालों के साथ मिला था और ख़ुज़ाआ क़बीला मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ। अरब के काफ़िर समझौते की पाबन्दी का कम ही ध्यान रखते थे विशेषकर मुसलमानों के मुकाबले में। जैसा कि बनू बिक्र का बनू ख़ुज़ाआ से पुराना झगड़ा था। हुदैबिया संधि पर कुछ समय बीत जाने के बाद उन्होंने मक्का वालों से विचार विमर्श किया कि ख़ुज़ाआ तो समझौते के कारण बिल्कुल सन्तुष्ट हैं। अब अवसर है कि हम लोग उन से बदला लें। अत: मक्का के क़ुरैश और बनू बिक्र ने मिलकर रात के समय बनू ख़ुज़ाआ पर छापा मारा और उनके बहुत से लोग मार दिए। जब ख़ुज़ाआ को ज्ञात हुआ कि क़ुरैश ने बनू बिक्र से मिलकर यह आक्रमण किया है तो उन्होंने इस समझौते को तोड़ने की सूचना देने के लिए चालीस लोग तीव्रगामी ऊँटनियों पर तुरन्त मदीना रवाना किए तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मांग की कि परस्पर समझौते की दृष्टि से अब आप का कर्त्तव्य है कि हमारा बदला लें और मक्का पर चढ़ाई करें। जब यह दल आप स. के पास पहुँचा तो आप स. ने फ़रमाया तुम्हारा दु:ख मेरा दु:ख है। मैं अपने समझौते पर दृढ़ संकल्प हूँ। यह जो बादल सामने बरस रहा है (उस समय वर्षा हो रही थी) जिस प्रकार इसमें से वर्षा हो रही है इसी प्रकार शीघ्र ही तुम्हारी सहायता के लिए इस्लामी सेनाएं पहुँच जाएँगी। जब मक्का वालों को इस दल का ज्ञान हुआ तो वे बहुत घबराए और उन्होंने अबू सुफ़यान को मदीना भेजा ताकि वह किसी प्रकार मुसलमानों को आक्रमण से रोके। अबू सुफ़यान ने मदीना पहुँच कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ज़ोर देना आरम्भ किया कि चूंकि हुदैबिया की संधि के समय मैं उपस्थित न था, इसलिए नए सिरे से समझौता किया जाए परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात का कोई उत्तर न दिया क्योंकि उत्तर देने से भेद प्रकट हो जाता था। अबू सुफ़यान ने निराश हो कर घबराहट में मस्जिद में ख़ड़े हो कर घोषणा की। हे लोगो ! मैं मक्का वालों की ओर से नए सिरे से अमन की घोषणा करता हूँ।

(सीरत इब्ने हश्शाम जिल्द 4 पृष्ठ 39 प्रकाशित मिस्र 1936 ई)

यह बात सुनकर मुसलमान उसकी मूर्खता पर हँस पड़े तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू सुफ़यान! यह बात तुम एक पक्षीय कह रहे हो, हम ने तुम से ऐसा कोई समझौता नहीं किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी मध्य चारों ओर के मुसलमान क़बीलों की ओर संदेशवाहक भेज दिए। जब ये सूचनाएँ आ गईं कि मुसलमान क़बीले एकत्र हो चुके हैं तथा मक्का की ओर जाते हुए मार्ग में मिलते जाएँगे तो आप स. ने मदीना के लोगों को सशस्त्र होने का आदेश दिया।

प्रथम जनवरी 630 ई. को इस सेना ने मदीना से कूच किया तथा मार्ग में चारों ओर से मुसलमान क़बीले आ आ कर सेना में सम्मिलित होते गए। कुछ ही कोस जाने के बाद जब इस सेना ने फारान के जंगल में प्रवेश किया तो उसकी संख्या सुलैमानअ. नबी की भविष्यवाणी के अनुसार दस हज़ार तक पहुँच चुकी थी। इधर यह सेना मक्का की ओर मार्च करती चली जा रही थी उधर मक्का वाले इस ख़ामोशी के कारण जो वातावरण पर व्याप्त थी अधिकाधिक भयभीत होते जाते थे। अन्त में उन्होंने विचार-विमर्श करके अबू सुफ़यान को पुन: इस बात पर तैयार किया कि वह मक्का से बाहर निकल कर मालूम तो करे कि मुसलमान क्या करना चाहते हैं। मक्का से एक कोस बाहर निकलने पर ही अबू सुफ़यान ने रात के समय जंगल को आग से प्रकाशित पाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दे दिया था कि समस्त तम्बुओं के सामने आग जलाई जाए। जंगल में दस हज़ार लोगों के लिए तम्बुओं के आगे भड़कती हुई आग एक भयानक दृश्य प्रदर्शित कर रही थी। अबू सुफ़यान ने अपने साथियों से पूछा यह क्या है? क्या आकाश से कोई सेना उतरी है; क्योंकि अरब की किसी जाति की सेना इतनी विशाल नहीं है। उसके साथियों ने भिन्न-भिन्न क़बीलों के नाम लिए, परन्तु उसने कहा- नहीं-नहीं। अरब के क़बीलों में से किसी की भी सेना इतनी विशाल कहाँ हो सकती है। वह यह बात कर ही रहा था कि अन्धकार में से आवाज़ आई अबू हन्ज़ला ! (यह अबू सुफ़यान का उपनाम था) अबू सुफ़यान ने कहा अब्बास तुम यहां कहाँ? उन्होंने उत्तर दिया। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेना सामने डेरा डाले हुए है और यदि तुम लोगों ने शीघ्र कोई उपाय नहीं किया तो पराजय और अपमान तुम्हारे लिए बिलकुल निश्चित है। चूंकि अब्बास अबू सुफ़यान के पुराने मित्र थे, इसलिए यह बात करने के बाद उन्होंने अबू सुफ़यान से आग्रह किया कि वह उनके साथ सवारी पर बैठ जाए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो। अत: उन्होंने उसका हाथ पकड़ कर अपने साथ बैठा लिया और ऊँट को एड़ लगा कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सभा में जा पहुँचे। हज़रत अब्बास को भय था कि हज़रत उमर रज़ि. जो उन के साथ पहरे पर नियुक्त थे कहीं उसका वध न कर दें परन्तु आप स. पहले से ही आदेश दे चुके थे कि यदि अबू सुफ़यान तुम में से किसी को मिल जाए तो उसका वध न करना। यह सारा दृश्य अबूसुफ़यान के हृदय में एक महान् परिवर्तन को जन्म दे चुका था। अबू सुफ़यान ने देखा कि कुछ ही वर्ष पूर्व हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को केवल एक साथी के साथ मक्का से निकलने पर विवश कर दिया था परन्तु अभी सात वर्ष ही गुज़रे हैं कि वह दस हज़ार कुद्दूसियों के साथ मक्का पर बिना अत्याचार और बिना जब्र वैध तौर पर आक्रमणकारी हुआ है और मक्का वालों की शक्ति नहीं कि उसे रोक सकें। अत: मुहम्मद

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सभा तक पहुँचते-पहुँचते कुछ इन विचारों के कारण और कुछ भय और डर के कारण अबू सुफ़यान कुछ स्तब्ध सा हो चुका था रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस की यह दशा देखी तो हज़रत अब्बास रज़ि. से फ़रमाया कि अबू सुफ़यान को अपने साथ ले जाओ और रात को अपने पास रखो। प्रात: इसे मेरे पास लाना।

(सीरत इब्ने हश्शाम जिल्द 4 पृष्ठ 44 प्रकाशित मिस्र 1936 ई)

अत: अबू सुफ़यान रात को हज़रत अब्बास के साथ रहा। जब प्रात: उसे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाए तो फ़ज्र की नमाज़ का समय था। मक्का के लोग प्रात: उठ कर नमाज़ पढ़ने को क्या जानते थे, उसने इधर-उधर मुसलमानों को पानी से भरे हुए लोटे लेकर आते -जाते देखा और उसे दिखाई दिया कि कोई वुज़ू कर रहा है, कोई नमाज़ के लिए एकत्र हो रहे लोगों को पंक्तिबद्ध कर रहा है तो अबू सुफ़यान ने समझा कि कदाचित मेरे लिए कोई नए प्रकार का दण्ड प्रस्तावित हुआ है। अत: उसने घबराकर हज़रत अब्बास से पूछा कि ये लोग इतनी सुबह यह क्या कर रहे हैं? हज़रत अब्बास ने कहा तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं। ये लोग नमाज़ पढ़ने लगे हैं। उस के बाद अबू सुफ़यान ने देखा कि हज़ारों लोग महुम्मद रसूलुल्लाह के पीछे खड़े हो गए हैं और आप जब रुकू करते हैं तो सब के सब रकू करते हैं और जब आप सज्दह करते हैं तो सब के सब सज्दह करते हैं। हज़रत अब्बास चूंकि पहरे पर होने कारण नमाज़ में सम्मिलित नहीं हुए थे। अबू सुफ़यान ने उस से पूछा अब ये क्या कर रहे हैं? मैं देखता हूँ कि जो कुछ मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) करते हैं वही ये लोग भी करने लग जाते हैं। अब्बास रज़ि. ने कहा तुम किन विचारों में पड़े हो; यह तो नमाज़ पढ़ी जा रही है परन्तु यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन को आदेश दें कि खाना-पीना छोड़ दो तो ये लोग खाना-पीना भी छोड़ दें। अबू सुफ़यान ने कहा मैंने किस्रा बादशाह का दरबार भी देखा है और क़ैसर का दरबार भी देखा है परन्तु उनके लोगों को उनका इतना आसक्त नहीं देखा जितना मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) का समुदाय उसका आसक्त है।

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 92 प्रकाशन 1935 ई)

अब अब्बास रज़ि. ने कहा क्या यह नहीं हो सकता कि तुम मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) से स्वयं यह निवेदन करो कि आप स. अपनी क़ौम से क्षमा का व्यवहार करें। जब नमाज़ समाप्त हो चुकी तो हज़रत अब्बास अबू सुफ़यान को लेकर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। आप स. ने फ़रमाया अबू सुफ़यान ! क्या अभी समय नहीं आया कि तुम पर यह वास्तविकता प्रकट हो जाए कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य उपास्य नहीं ? अबू सुफ़यान ने कहा मेरे माता-पिता आप पर न्योछावर हों, आप नितान्त सुशील,नितान्त सभ्य और परिजनों के साथ दया-व्यवहार करने वाले व्यक्ति हैं। मैं अब यह बात तो समझ चुका हूँ कि यदि ख़ुदा के अतिरिक्त कोई अन्य उपास्य होता तो हमारी कुछ तो सहायता करता। उस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबू सुफ़यान ! क्या अभी समय नहीं आया कि तुम समझ सको कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? अबू सुफ़यान ने कहा मेरे माता-पिता आप पर बलिहारी, इस बारे में अभी मेरे हृदय में कुछ संदेह हैं परन्तु अबू सुफ़यान की दुविधा के बावजूद उसके दोनों साथी जो उसके साथ ही मक्का से बाहर मुसलमानों की सेना की सूचना लेने के लिए आए हुए थे, जिनमें से एक हकीम बिन हिज़ाम थे वे मुसलमान हो गए। उस के बाद अबू सुफ़यान ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया परन्तु उसका हृदय कदाचित मक्का-विजय के बाद पूरी तरह सन्तुष्ट हुआ। ईमान लाने के बाद हकीम बिन हिज़ाम ने कहा— हे अल्लाह के रसूल ! क्या यह सेना आप अपनी जाति के विनाश के लिए ले आए हैं? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन लोगों ने अत्याचार किया, इन लोगों ने पाप किया और तुम लोगों ने हुदैबिया में किए हुए समझौते को भंग किया तथा ख़ुज़ाआ के विरुद्ध अत्याचारपूर्ण युद्ध किया उस पवित्र स्थान पर युद्ध किया जिसे ख़ुदा ने अमन प्रदान किया हुआ था। हकीम ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! बिल्कुल सत्य है। आप की क़ौम ने नि:संदेह ऐसा ही किया है परन्तु आप को चाहिए था कि मक्का पर आक्रमण करने की बजाए हवाज़न पर आक्रमण करते। आप स. ने फ़रमाया— वह क़ौम भी अत्याचारी है परन्तु मैं ख़ुदा तआला से आशा करता हूँ कि वह मक्का पर विजय और हवाज़न की पराजय ये सारी बातें मेरे ही हाथ पर पूरी करेगा। इस के बाद अबू सुफ़यान ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! यदि मक्का के लोग तलवार न उठाएँ तो क्या वे अमन में होंगे? आप स. ने फ़रमाया हाँ ! प्रत्येक व्यक्ति जो अपने घर का द्वार बन्द कर ले उसे अमन दिया जाएगा। हज़रत अब्बास रज़ि. ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! अबू सुफ़यान अभिमानी व्यक्ति है। इसका उद्देश्य यह है कि मेरे सम्मान का भी कुछ ध्यान रखा जाए। आप स. ने फ़रमाया बहुत उचित। जो व्यक्ति अबू सुफ़यान के घर में चला जाए उसे भी अमन दिया जाएगा।

(सीरत इब्ने हश्शाम जिल्द 4 पृष्ठ 45-46 प्रकाशित मिस्र 1936 ई)

जो व्यक्ति हकीम बिन हिज़ाम के घर में चला जाए उसे भी अमन दिया जाएगा जो व्यक्ति काबा की मस्जिद में प्रवेश कर जाए उसे भी अमन दिया जाएगा। जो व्यक्ति अपना द्वारा बन्द करके बैठ रहे उसे भी अमन दिया जाएगा। जो व्यक्ति अपने शस्त्र फेंक दे उसे भी अमन दिया जाएगा। इसके बाद अबू रवीहा (RAVEEHA)रज़ि. जिनको आप स. ने बिलाल हबशी का भाई बनाया हुआ था उस के बारे में आप स. ने फ़रमाया हम इस समय अबू रवीहा रज़ि. को अपना झण्डा देते हैं। जो व्यक्ति अबू रवीहा के झण्डे के नीचे खड़ा होगा उसे भी अमन दिया जाएग। बिलाल रज़ि. को कहा तुम साथ-साथ यह घोषणा करते जाओ कि जो व्यक्ति अबू रवीहा के झण्डे के नीचे आ जाएगा उसे अमन दिया जाएगा।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 93 प्रकाशन मिस्र 1935 ई)

इस आदेश में एक महत्त्वपूर्ण रहस्य निहित था। मक्का के लोग बिलाल रज़ि.के पैरों में रस्सी डाल कर उसे गलियों में खींचा करते

थे, मक्का की गलियां, मक्का के मैदान बिलाल रज़ि. के लिए अमन का स्थान नहीं थे अपितु प्रताड़ना, अपमान और उपहास के स्थान थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सोचा कि आज बिलाल रज़ि. का हृदय बार-बार प्रतिशोध की ओर जाता होगा। इस वफ़ादार साथी का प्रतिशोध लेना भी नितान्त आवश्यक है परन्तु यह भी आवश्यक है कि हमारा प्रतिशोध इस्लाम की प्रतिष्ठा के अनुकूल हो। अत: आप स. ने बिलाल रज़ि. का प्रतिशोध इस प्रकार न लिया कि तलवार द्वारा उसके शत्रुओं की गर्दनें काट दी जाएँ अपितु उसके भाई के हाथ में एक बड़ा झण्डा देकर उसे खड़ा कर दिया और बिलाल रज़ि. को इस उद्देश्य के लिए नियुक्त कर दिया कि वह घोषणा कर दे कि जो कोई मेरे भाई के झण्डे के नीचे आ खड़ा होगा उसे अमन दिया जाएगा। कितना शानदार प्रतिशोध था, कैसा सुन्दर प्रतिशोध था जब बिलाल रज़ि. उच्च स्वर में यह घोषणा करता होगा कि हे मक्का वालो ! आओ मेरे भाई के झण्डे के नीचे खड़े हो जाओ तुम्हें अमन दिया जाएगा तो उसका हृदय स्वयं ही प्रतिशोध की भावनाओं से खाली होता जाता होगा और उसने महसूस कर लिया होगा कि जो प्रतिशोध मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए प्रस्तावित किया है उस से अधिक शानदार और उससे अधिक सुन्दर प्रतिशोध मेरे लिए और कोई नहीं हो सकता।

जब सेना मक्का की ओर अग्रसर हुई तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि. को आदेश दिया कि किसी सड़क के कोने पर अबू सुफ़ियान और उसके साथियों को लेकर खड़े हो जाओ ताकि वह इस्लामी सेना और उसकी वफ़ादारी को देख सकें। हज़रत अब्बास रज़ि. ने ऐसा ही किया। अबू सुफ़यान और उसके साथियों के सामने से एक-एक करके अरब के वे क़बीले गुज़रने आरम्भ हुए जिनकी सहायता पर मक्का भरोसा कर रहा था परन्तु वे आज कुफ्र का झण्डा नहीं लहरा रहे थे आज वे इस्लाम का झण्डा लहरा रहे थे तथा उन के मुख पर सर्व शक्ति सम्पन्न ख़ुदा के एकेश्वरवाद की घोषणा थी वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्राण लेने के लिए आगे नहीं बढ़ रहे थे जैसा कि मक्का वाले आशान्वित थे अपितु वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक बहाने के लिए तत्पर थे तथा उनकी सर्वाधिक इच्छा यही थी कि एक ख़ुदा का एकेश्वरवाद तथा उसके प्रचार को संसार में स्थापित कर दें। सेना के बाद सेना गुज़र रही थी कि इतने में अश्जअ क़बीले की सेना गुज़री। इस्लाम के प्रेम तथा उसके लिए बलिदान हो जाने का जोश उनके चेहरों से प्रकट और उनके उद्घोषों से स्पष्ट था। अबू सुफ़यान ने कहा अब्बास ये कौन हैं? अब्बास ने कहा यह अश्जअ क़बीला है। अबू सुफ़यान ने बड़े आश्चर्य से अब्बास रज़ि. का मुख देखा और कहा सारे अरब में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इनसे अधिक कोई शत्रु नहीं था। अब्बास रज़ि. ने कहा यह ख़ुदा की कृपा है, जब उसने चाहा उनके हृदयों में इस्लाम का प्रेम प्रवेश कर गया। सब से अन्त में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजिरों और अन्सार (मदीना वाले) की सेना लिए हुए गुज़रे। ये लोग दो हज़ार की संख्या में थे और सर से पैर तक कवचों आदि में छुपे हुए थे । हज़रत उमररज़ि. उन की पंक्तियों को ठीक करते जाते थे तथा कहते जाते थे कदमों को संभाल कर चलो ताकि पंक्तियों की दूरी ठीक रहे। इन इस्लाम के पुराने प्राणपण लोगों का जोश तथा उन का संकल्प तथा उनका उत्साह उनके चेहरों से टपका पड़ता था। अबू सुफ़यान ने जब उन्हें देखा तो उस का हृदय दहल गया। उसने पूछा अब्बास ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्सार (मदीना वासी) और मुहाजिरों (मक्का के प्रवासी) की सेना में जा रहे हैं। अबू सुफ़यान ने कहा संसार में इस सेना का सामना करने की किस में शक्ति है। फिर वह पुन: अब्बास से सम्बोधित होते हुए बोला अब्बास ! तुम्हारे भाई का बेटा आज संसार में सब से बड़ा बादशाह हो गया है। अब्बास रज़ि. ने कहा क्या अब भी तेरे हृदय के नेत्र नहीं खुले। यह बादशाहत नहीं यह तो नुबुव्वत है। अबू सुफ़यान ने कहा हाँ-हाँ नुबुव्वत ही सही।

(सीरत इब्ने हश्शाम जिल्द 4 पृष्ठ 47 प्रकाशित मिस्र 1936 ई)

जिस समय यह सेना अबू सुफ़यान के सामने से गुज़र रही थी, अन्सार के सेनापति सअद बिन उबादारज़ि. ने अबू सुफ़यान को देखकर कहा आज ख़ुदा तआला ने हमारे लिए मक्का में प्रवेश करना तलवार के बल पर वैध कर दिया है। आज क़ुरैश जाति अपमानित कर दी जाएगी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे तो उसने उच्च स्वर में कहा हे अल्लाह के रसूल ! क्या आप स. ने अपनी जाति के वध की आज्ञा दे दी है। अभी-अभी अन्सार के सरदार सअद रज़ि. और उनके साथी ऐसा-ऐसा कह रहे थे। उन्होंने ऊँचे स्वर में यह कहा है आज युद्ध होगा तथा मक्का की पवित्रता आज हमें युद्ध से नहीं रोक सकेगी और क़ुरैश को हम अपमानित करके छोड़ेंगे। हे अल्लाह के रसूल ! आप तो संसार में सर्वाधिक सदाचारी, सबसे अधिक दयालु अपने परिजनों के साथ सब से अधिक सद्व्यवहार करने वाले व्यक्ति हैं। क्या आज अपनी जाति के अत्याचारों को भूल न जाएँगे? अबू सुफ़यान की यह शिकायत और याचना सुनकर वे मुहाजिर (प्रवासी) भी जिन्हें मक्का की गलियों में पीटा और मारा जाता था, जिन्हें घरों और जायदादों के अधिकार से पृथक कर दिया जाता था, तड़प गए और उनके हृदयों में भी मक्का के लोगों के लिए दया की भावना पैदा हो गई। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! अन्सार ने मक्का वालों के जो अत्याचारपूर्ण वृत्तान्त सुने हुए हैं आज उन के कारण हम नहीं जानते कि वे क़ुरैश के साथ क्या व्यवहार करें। आप स. ने फ़रमाया अबू सुफ़यान ! सअद ने ग़लत कहा है। आज दया करने का दिन है। आज अल्लाह तआला क़ुरैश और काबा को सम्मान प्रदान करने वाला है। फिर आप स. ने एक व्यक्ति को सअद रज़ि. की ओर भिजवाया और फ़रमाया अपना झण्डा अपने बेटे क़ैस को दे दो कि वह तुम्हारे स्थान पर अन्सार की सेना का सेनापति होगा।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 95 प्रकाशन 1935 ई)

इस प्रकार आप ने मक्का वालों का भी दिल रख लिया और अन्सार के हृदयों को भी आघात पहुँचने से सुरक्षित रखा तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ैस पर पूर्ण विश्वास भी था। क़ैस नितान्त सज्जन स्वभाव के युवक थे, ऐसे सज्जन कि इतिहास में उल्लेख है कि उन के निधन के निकट जब कुछ लोग उन के स्वास्थ्य का हाल पूछने के लिए आए और कुछ लोग न आए तो उन्होंने अपने मित्रों से पूछा क्या कारण है कि कुछ मेरे परिचित भी हाल पूछने नहीं आए। उनके मित्रों ने कहा आप बड़े दानशील पुरुष हैं। आप प्रत्येक व्यक्ति को उसके कष्ट के समय क़र्ज़ा दे देते हैं। नगर के बहुत से लोग आप के क़र्ज़दार हैं वे आप का हाल पूछने के लिए इसलिए नहीं आए कि कदाचित आप को आवश्यकता हो और आप उन से रुपया मांग बैठें। आपने कहा मुझे खेद है मेरे मित्रों को अकारण कष्ट हुआ।

मेरी ओर से पूरे नगर में घोषणा करा दो कि प्रत्येक व्यक्ति जिस पर क़ैस का क़र्ज़ा है वह उसे माफ़ है। इस पर उनका हाल पूछने के लिए इतने अधिक लोग आए कि उनके घर की सीढ़ियां टूट गईं।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 95 प्रकाशन 1935 ई)

जब सेना गुज़र चुकी तो अब्बास रज़ि. ने अबू सुफ़यान से कहा अब अपनी सवारी दौड़ा कर मक्का पहुँचो और उन लोगों को सूचना दे दो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आ गए हैं और उन्होंने इस-इस रूप में मक्का के लोगों को अमन प्रदान किया है, जब कि अबू सुफ़यान अपने हृदय में प्रसन्न था कि मैंने मक्का के लोगों की मुक्ति का मार्ग निकाल लिया है। उसकी पत्नी हिन्दा ने जो इस्लाम के प्रारम्भ से लोगों को इस्लाम के विरुद्ध द्वेष और बैर रखने की शिक्षा देती चली आई थी और काफ़िर होने के बावजूद वास्तव में एक बहादुर स्त्री थी, आगे बढ़कर अपने पति की दाढ़ी पकड़ ली और मक्का वालों को आवाज़ें देना शुरू किया कि आओ इस वृद्ध मूर्ख का वध कर दो कि बजाए इस के कि तुम्हें यह नसीहत करता कि जाओ और अपने प्राणों और नगर के सम्मान के लिए युद्ध करते हुए मारे जाओ। यह तुम में अमन की घोषणा कर रहा है। अबू सुफ़यान ने उस की इस हरकत पर कहा मूर्ख यह इन बातों का समय नहीं। जा और अपने घर में छुप जा। मैं उस सेना को देख कर आया हूँ जिस सेना का सामना करने की शक्ति सारे अरब में नहीं है। फिर अबू सुफ़यान ने उच्च स्वर में अमन (शान्ति) की शर्तों का वर्णन करना आरम्भ किया और लोग बड़ी तीव्रता के साथ उन स्थानों और घरों की ओर दौड़ पड़े जिनके संबंध में अमन की घोषणा की गई थी। केवल ग्यारह पुरुष और चार स्त्रियाँ ऐसी थीं जिनके बारे में कठोर अत्याचार पूर्ण वध और उपद्रव पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुके थे वे मानों युद्ध-अपराधी थे तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उनके बारे में आदेश था कि वध कर दिए जाएँ; क्योंकि वे केवल कुफ्र और लड़ाई के ही दोषी नहीं अपितु युद्ध अपराधी हैं।

इस अवसर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. को बड़ी सख़्ती से आदेश दे दिया था कि जब तक कोई व्यक्ति लड़ाई न करे तुम नहीं लड़ोगे परन्तु जिस ओर से ख़ालिद रज़ि. ने नगर में प्रवेश किया उस ओर अभी शान्ति के सन्देश की घोषणा नहीं पहुँची थी। इस क्षेत्र की सेना ने ख़ालिद रज़ि. का मुकाबला किया और चौबीस लोग मारे गए। चूंकि ख़ालिद रज़ि. का स्वभाव बड़ा जोशीला था, किसी ने दौड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना पहुँचा दी और विनती की कि ख़ालिद रज़ि. को रोका जाए अन्यथा वह समस्त मक्का वालों का वध कर देगा। आप स. ने ख़ालिद रज़ि. को तुरन्त बुलवाया और फ़रमाया क्या मैंने तुम्हो लड़ाई से मना नहीं किया था? ख़ालिद ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप ने मना किया था परन्तु उन लोगों ने पहले हम पर आक्रमण किया और बाण-वर्षा आरम्भ कर दी। मैं कुछ देर तक रुका और मैंने कहा हम तुम पर आक्रमण करना नहीं चाहते, तुम ऐसा न करो, परन्तु जब मैंने देखा कि ये किसी प्रकार भी रुकने को तैयार नहीं तो फिर मुझे उन से लड़ना पड़ा और ख़ुदा ने उन्हें चारों ओर तितर-बितर कर दिया।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 97 प्रकाशन 1935 ई)

बहरहाल इस छोटी सी घटना के अतिरिक्त अन्य कोई घटना नहीं हुई तथा मक्का पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अधिकार हो गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में प्रवेश किया तो आप स. से लोगों ने पूछा हे अल्लाह के रसूल ! क्या आप आपने घर में ठहरेंगे? आप ने फ़रमाया क्या अक़ील ने (यह आप के चाचा के बेटे थे) हमारे लिए कोई घर छोड़ा भी है? अर्थात् मेरे प्रवास के बाद मेरे परिजन मेरी समस्त सम्पत्ति को बेच कर खा चुके हैं अब मक्का में मेरे लिए कोई ठिकाना नहीं। फिर आप ने फ़रमाया हम 'ख़ैफ़ बनी किनाना' में ठहरेंगे। यह मक्का का एक मैदान था जहाँ कुरैश और किनाना क़बीले ने मिलकर क़समें खाई थीं कि जब तक बनू हाशिम और बनू अब्दुल-मुत्तलिब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़ कर हमारे सुपुर्द न कर दें और उनका साथ न छोड़ दें, हम न उन से शादी-विवाह करेंगे न क्रय-विक्रय का मामला करेंगे इस संकल्प के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के चाचा अबू तालिब और आपकी जमाअत के समस्त लोगों ने अबूतालिब-घाटी में शरण ली थी तथा तीन वर्ष के कठोर कष्ट उठाने के बाद ख़ुदा तआला ने उन्हें मुक्ति दिलाई थी। मुहम्मद रसूलुल्लाह का उस ख़ैफ के स्थान का चयन करना कितना महत्त्वपूर्ण था। मक्का वालों ने उसी स्थान पर क़समें खाई थीं कि जब तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे सुपुर्द न कर दिए जाएँ, हम आप के क़बीले से संधि नहीं करेंगे। आज मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी मैदान में जाकर उतरे और मक्का वालों से जैसे यह कहा कि जहाँ तुम चाहते थे मैं वहाँ आ गया हूँ परन्तु बताओ तो सही— क्या तुम में शक्ति है कि आज मुझे अपने अत्याचारों का निशाना बना सको, वही स्थान जहाँ तुम मुझे तिरस्कृत और कोप-ग्रस्त अवस्था में देखना चाहते थे और चाहते थे कि मेरी जाति के लोग मुझे पकड़ कर तुम्हारे सुपुर्द कर दें, वहाँ मैं ऐसी अवस्था में आया हूँ कि मेरी जाति ही नहीं समस्त अरब भी मेरे साथ है और मेरी जाति ने मुझे तुम्हारे सुपुर्द नहीं किया अपितु मेरी जाति ने तुम्हें मेरे सुपुर्द कर दिया है। ख़ुदा तआला की क़ुदरत है कि यह दिन भी सोमवार का दिन था वही दिन जिस दिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ारे सौर (सौर नामक गुफ़ा) से निकल कर केवल अबू बक़र रज़ि. के साथ मदीना की ओर हिजरत (प्रवास) कर गए थे, वही दिन जिसमें आपने बड़े दु:ख के साथ सौर की पहाड़ी के ऊपर से मक्का की ओर देख कर कहा था हे मक्का ! तू मुझे संसार की समस्त बस्तियों से अधिक प्रिय है परन्तु तेरे लोग मुझे यहाँ रहने नहीं देते।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 2 पृष्ठ 31 प्रकाशन 1935 ई)

मक्का में प्रवेश करते समय हज़रत अबू बकररज़ि. आप स. की ऊँटनी की रकाब पकड़े हुए आप स. के साथ बातें भी करते जा रहे थे और सूरह 'अलफ़त्ह' जिसमें 'मक्का-विजय' की सूचना दी गई थी वह भी पढ़ते जाते थे। आप स. सीधे काबा की ओर आए और ऊँटनी पर बैठे हुए ही सात बार काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) किया। उस समय आप स. के हाथ में एक छड़ी थी। आप स. काबा के गिर्द, जिसे हज़रत इब्राहीमअ. और उनके पुत्र हज़रत इस्माईलअ. ने एक ख़ुदा की उपासना के लिए बनाया था और जिसे बाद में उनकी पथभ्रष्ट सन्तान ने मूर्तियों का भण्डार बना कर रख दिया था परिक्रमा (तवाफ़) की तथा वे तीन सौ साठ मूर्तियां जो वहाँ रखी हुई थी। आप उनमें से प्रत्येक पर छड़ी मारते जाते थे और यह कहते जाते थे

جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 4 पृष्ठ 59 प्रकाशन 1935 ई)

यह वह आयत है जो हिजरत से पूर्व सूरह बनी इस्राईल में आप स. पर उतरी थी। जिसमें हिजरत और फिर मक्का-विजय की सूचना दी गई थी। यूरोपियन लेखक इस बात पर सहमत हैं कि यह हिजरत से पहले की सूरह है। इस सूरह में यह वर्णन किया गया था कि

وَ قُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

अर्थात् तू कह हे मेरे रब्ब ! मुझे इस शहर अर्थात् मक्का में मुबारक तौर पर प्रवेश कराना अर्थात् हिजरत के बाद विजय और प्रभुत्व प्रदान करके तथा इस शहर से कुशलतापूर्वक ही निकालना अर्थात् हिजरत के समय और स्वयं अपने पास से मुझे प्रभुत्व और सहायता के संसाधन उपलब्ध करना। यह भी कहो कि सत्य आ गया और असत्य अर्थात् द्वैतवाद परास्त होकर पलायन कर गया है तथा असत्य अर्थात् द्वैतवाद के लिए पराजित हो कर भागना तो हमेशा के लिए प्रारब्ध था। इस भविष्यवाणी के अक्षरश: पूर्ण होने और हज़रत अबू बक़र रज़ि. के उस आयत को पढ़ते समय मुसलमानों और काफ़िरों के हृदयों में जो भावनाएं पैदा हुई होंगी वे शब्दों में वर्णन नहीं हो सकतीं। अत: उस दिन इब्राहीम का स्थान पुन: एक ख़ुदा की उपासना के लिए विशेष्य कर दिया गया और मूर्तियां हमेशा के लिए तोड़ी गईं। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 'हुबुल नामक मूर्ति के ऊपर अपनी छड़ी मारी और वह अपने स्थान से गिर कर टूट गई तो हज़रत ज़ैबैररज़ि. ने अबू सुफ़यान की ओर मुस्करा कर देखा और कहा अबू सुफ़यान ! स्मरण है जब उहद-युद्ध के दिन मुसलमान घावों से निढाल एक ओर खड़े हुए थे तुम ने अपने अहंकार में यह घोषणा की اُعْلُ هُبَلْ اُعْلُ هُبَلْ हुबुल की जय, हुबुल की जय तथा यह कि हुबुल ने ही तुम्हें उहद के दिन मुसलमानों पर विजय दी थी। आज देखते हो वे सामने हुबुल के टुकड़े पड़े हैं। अबू सुफ़यान ने कहा ज़ुबैर ! ये बातें जाने भी दो। आज हमें अच्छी तरह दिखाई दे रहा है कि यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह के ख़ुदा के अतिरिक्त कोई अन्य ख़ुदा भी होता तो आज जो कुछ हम देख रहे हैं इस प्रकार कभी न होता।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 99 प्रकाशन 1935 ई)

उस के बाद आप स. ने काबा के अन्दर हज़रत इब्राहीम के जो चित्र बने हुए थे उन्हें मिटाने का आदेश दिया और काबा में ख़ुदा के वादे पूर्ण होने की कृतज्ञता में दो रकअत नमाज़ अदा की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काबा के अन्दर बनाए गए चित्रों को मिटाने के लिए हज़रत उमर रज़ि. को नियुक्त किया था, उन्होंने इस विचार से कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तो हम भी नबी मानते हैं, हज़रत इब्राहीम अ. के चित्र को यथावत् रहने दिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उस चित्र को यथावत् देखा तो फ़रमाया उमर ! तुम ने यह क्या किया? क्या ख़ुदा ने यह नहीं फ़रमाया कि

مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا وَّ لَا نَصْرَانِیًّا وَّ لٰكِنْ كَانَ حَنِیْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 100 प्रकाशन 1935 ई)

अर्थात् इब्राहीम न यहूदी था न ईसाई अपितु वह ख़ुदा तआला का पूर्ण आज्ञाकारी तथा ख़ुदा तआला की समस्त सत्यताओं को मानने वाला तथा ख़ुदा का एकेश्वरवादी बन्दा था। अत: आप स. के आदेश से यह चित्र भी मिटा दिया गया। ख़ुदा तआला के चमत्कार देख कर उस दिन मुसलमानों के हृदय ईमान से इतने ओत-प्रोत हो रहे थे तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह की शान पर उन का विश्वास इस प्रकार उन्नति कर रहा था कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़मज़म के झरने से (जो इस्माईल पुत्र इब्राहीम अ. के लिए ख़ुदा तआला ने बतौर चमत्कार जारी किया था) पानी पीने के लिए मंगवाया तथा उसमें से कुछ पानी पी कर शेष पानी से आप स. ने वुज़ू किया तो आप के शरीर से पानी की कोई बूंद पृथ्वी पर नहीं गिर सकी कि मुसलमान तुरन्त उसे उचक लेते और प्रसाद के तौर पर अपने शरीर पर मल लेते थे तथा मुश्रिक कह रहे थे कि हम ने संसार में ऐसा कोई बादशाह नहीं देखा जिसके साथ उसके लोगों का इतना प्रेम हो।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 101 प्रकाशन 1935 ई)

जब आप इन कामों से निवृत्त हुए और मक्का वाले आपकी सेवा में उपस्थित किए गए तो आप स. ने फ़रमाया हे मक्का के लोगो ! तुम ने देख लिया कि ख़ुदा तआला के चमत्कार किस प्रकार अक्षरश: पूरे हुए हैं। अब बताओ कि तुम्हारे उन अत्याचारों और उपद्रवों का क्या दण्ड दिया जाए जो तुम ने एक ख़ुदा की उपासना करने वाले निर्धन बन्दों पर किए थे। मक्का के लोगों ने कहा हम आप से उसी आचरण की आशा रखते हैं जो यूसुफ ने अपने भाइयों से किया था। यह ख़ुदा की क़ुदरत थी कि मक्का वालों के मुख से वही शब्द निकले जिनकी भविष्यवाणी ख़ुदा तआला ने सूरह 'यूसुफ़' में पहले से कर रखी थी तथा मक्का-विजय से दस वर्ष पूर्व बता दिया था कि तू मक्का वालों से वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा यूसुफ़ ने अपने भाइयों से किया था। अत: जब मक्का वालों के मुख से इस बात की पुष्टि हो गई कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यूसुफ़ के प्रारूप थे तथा यूसुफ़ के समान अल्लाह तआला ने उन्हें अपने भाइयों पर विजय प्रदान की थी आप स. ने भी घोषणा कर दी कि

تَاللّٰهِ لَا تَثْرِیْبَ عَلَیْكُمُ الْیَوْمَ

ख़ुदा की क़सम आज तुम्हें किसी प्रकार का दण्ड नहीं दिया जाएगा और न किसी प्रकार से डांटा जाएगा।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 89 प्रकाशन 1935 ई)

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काबा के दर्शन से संबंधित उपासनाओं में व्यस्त थे और अपनी क़ौम के साथ क्षमा और दया का मामला कर रहे थे तो अन्सार के हृदय अन्दर ही अन्दर बैठे जा रहे थे और वे एक-दूसरे को संकेतों में कह रहे थे— कदाचित आज हम ख़ुदा के रसूल को अपने से पृथक कर रहे हैं; क्योंकि उनका शहर ख़ुदा तआला ने उन के हाथ पर विजय कर दिया है और उनका क़बीला उन पर ईमान ले आया है। उस समय अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा अन्सार की उन आशंकाओं की सूचना दे दी। आप स. ने सर उठाया, अन्सार की ओर देखा और फ़रमाया- हे अन्सार ! तुम समझते हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने शहर का प्रेम व्याकुल करता होगा तथा अपनी जाति का प्रेम उसके हृदय को गुदगुदाता होगा। अन्सार ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! यह सही है। हमारे हृदय में ऐसा विचार पैदा हुआ। आप स. ने फ़रमाया तुम जानते हो कि मेरा नाम क्या है। मतलब यह कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और उसका रसूल कहलाता हूँ फिर कैसे हो सकता है कि तुम लोगों को जिन्होंने इस्लाम धर्म की दयनीय अवस्था में अपने प्राणों को बलिदान किया छोड़कर किसी अन्य स्थान पर चला जाऊँ। पुन: फ़रमाया हे अन्सार ! ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं अल्लाह का बन्दा

और उसका रसूल हूँ। मैंने ख़ुदा के लिए अपनी मातृभूमि को छोड़ा था। उस के बाद् अब मैं अपनी मातृभूमि में वापस नहीं आ सकता, मेरा जीवन तुम्हारे जीवन से है, मेरी मृत्यु तुम्हारी मृत्यु से सम्बद्ध है। मदीना के लोग आप स. की ये बातें सुनकर तथा आप के प्रेम और आप की वफ़ा को देख कर आँसू बहाते हुए आगे बढ़े और कहा हे अल्लाह के रसूल ! ख़ुदा की क़सम हम ने ख़ुदा और उसके रसूल पर बदगुमानी की। वास्तविकता यह है कि हमारे हृदय इस बात को सहन नहीं कर सके कि ख़ुदा का रसूल हमें और हमारे शहर को छोड़ कर कहीं और चला जाए। आप स. ने फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल तुम्हें निर्दोष समझते हैं और तुम्हारी वफ़ादारी की पुष्टि करते हैं। जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मदीना के लोगों में जब ये प्यार और मुहब्बत की बातें हो रही होंगी, यदि मक्का के लोगों ने आँसू नहीं बहाए होंगे तो उन के हृदय निश्चय ही आँसू बहा रहे होंगे कि वह बहुमूल्य हीरा जिससे अधिक मूल्यवान कोई वस्तु इस संसार में पैदा नहीं हुई, ख़ुदा ने उन्हें दिया था परन्तु उन्होंने उसे अपने घरों से निकाल कर फेंक दिया और अब जब कि वह ख़ुदा की कृपा और उसकी सहायता के साथ दोबारा मक्का में आया था वह अपना वादा निभाने के लिए अपनी सहमति और अपनी ख़ुशी से मक्का छोड़ कर मदीना वापस जा रहा है।

जिन लोगों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फैसला किया था कि उनकी कुछ अत्याचारपूर्ण हत्याओं तथा वीभत्स अत्याचारों के कारण उन का वध किया जाए। उनमें से अधिकांश को कुछ मुसलमानों की सिफ़ारिश पर आप स. ने छोड़ दिया। उन्हीं लोगों में से अबू जहल का बेटा 'इकरिमा' भी था। इसकी पत्नी हृदय से मुसलमान थी। उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से विनती की हे अल्लाह के रसूल ! इकरिमा को भी क्षमा कर दें। आप स. ने फ़रमाया हाँ-हाँ हम उसे क्षमा करते हैं। इकरिमा भाग कर यमन की ओर जा रहा कि पत्नी अपने पति के प्रेम में पीछे-पीछे उस की खोज में गई । जब वह समुद्र के तट पर नौका में बैठे हुए अरब को हमेशा के लिए छोड़ने पर तैयार थे कि पत्नी बिखरे बालों और अस्त-व्यस्त अवस्था में घबराई हुई पहुँची और कहा हे मेरे चाचा के बेटे (अरब स्त्रियां अपने पतियों को चाचा का बेटा कहा करती थीं) इतने सुशील और दयावान मनुष्य को छोड़ कर कहाँ जा रहे हो। इकरिमा ने स्तब्ध हो कर अपनी पत्नी से पूछा क्या मेरी उन समस्त शत्रुताओं के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे क्षमा कर देंगे? इकरिमा की पत्नी ने कहा हाँ, हाँ ! मैंने उनसे वचन ले लिया है और उन्होंने तुम्हें क्षमा कर दिया है। जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने उपस्थित हुए तो कहा— हे अल्लाह के रसूल ! मेरी पत्नी कहती है कि आप ने मुझ जैसे मनुष्य को भी क्षमा कर दिया है। आप ने फ़रमाया तुम्हारी पत्नी सच कहती है, हम ने तुम्हें क्षमा कर दिया है। इकरिमा ने कहा जो मनुष्य इतने कट्टर शत्रुओं को क्षमा कर सकता है वह झूठा नहीं हो सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है तथा उसका कोई भागीदार नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! तुम उसके बन्दे और उसके रसूल हो और फिर शर्म से अपना सर झुका लिया। आप स. ने उस की लज्जा की अवस्था को देखकर उसके हृदय की सन्तुष्टि के लिए फ़रमाया इकरिमा ! हम ने तुम्हें क्षमा ही नहीं किया अपितु इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि यदि आज तुम मुझ से कोई ऐसी वस्तु मांगो जिसके देने की मुझ में सामर्थ्य हो तो मैं वह तुम्हें दे दूँगा। इकरिमा ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! इस से अधिक मेरी क्या अभिलाषा हो सकती है कि आप स. ख़ुदा तआला से यह दुआ करें कि मैंने जो आप से शत्रुताएं की हैं वह मुझे क्षमा कर दे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला को सम्बोधित करके फ़रमाया हे मेरे अल्लाह ! वे समस्त शत्रुताएं जो इकरिमा ने मुझ से की हैं उसे क्षमा कर दे और वे समस्त गालियाँ जो उसके मुख से निकली हैं वे उसे माफ़ कर दे। फिर आप स. उठे और अपनी चादर उतार कर उसके ऊपर डाल दी और फ़रमाया जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाते हुए हमारे पास आता है हमारा घर उसका घर है तथा हमारा स्थान उसका स्थान है।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 106 प्रकाशन 1935 ई)

इकरिमा के ईमान लाने से वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो वर्षों पूर्व मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से बयान की थी कि मैंने स्वप्न में देखा है कि जैसे मैं स्वर्ग में हूँ। वहाँ मैंने अंगूर का एक गुच्छा देखा और लोगों से पूछा यह किस के लिए है? तो किसी उत्तर देने वाले ने कहा अबू जहल के लिए। यह बात मुझे बड़ी विचित्र लगी तथा मैंने कहा स्वर्ग में तो मोमिन के अतिरिक्त और कोई प्रवेश नहीं कर सकता फिर स्वर्ग में अबू जहल के लिए अंगूर कैसे उपलब्ध किए गए हैं। जब इकरिमा ईमान लाया तो आप स. ने फ़रमाया वह गुच्छा इकरिमा का था। ख़ुदा ने पुत्र के स्थान पर पिता का नाम प्रकट किया जैसा कि स्वप्नों में प्राय: हो जाया करता है।

(अस्सीरुतल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 106 प्रकाशन 1935 ई)

वे लोग जिनका वध करने का आदेश दिया गया था उनमें वह व्यक्ति भी था जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि. की मृत्यु का कारण हुआ था। उस व्यक्ति का नाम हिबार था। उसने हज़रत ज़ैनब रज़ि. के ऊँट की रस्सी काट दी थी और हज़रत जैनब रज़ि. ऊँट से नीचे जा पड़ी थीं, जिसके कारण उनका गर्भपात हो गया और कुछ समय के बाद उन का निधन हो गया। अन्य अपराधों के अतिरिक्त यह अपराध भी उसे दण्डनीय बनाता था। यह व्यक्ति भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा उसने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मैं आप स. से भाग कर ईरान की ओर चला गया था। फिर मैंने सोचा कि अल्लाह तआला ने अपने नबी के द्वारा हमारी द्वैतवादी विचारधारा को दूर किया है और हमें आध्यात्मिक मृत्यु से बचाया है। मैं ग़ैर लोगों में जाने की बजाए क्यों न उसके पास जाऊँ और अपने पापों का इक़रार करके उस से क्षमा माँगूं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हिबार ! जब ख़ुदा ने तुम्हारे हदय में इस्लाम का प्रेम पैदा कर दिया है तो मैं तुम्हारे पापों को क्यों न क्षमा करूँ। जाओ मैंने तुम्हें क्षमा किया। इस्लाम ने तुम्हारे पहले समस्त अपराध मिटा दिए हैं। यहाँ इतनी समाई नहीं कि मैं इस लेख को विस्तारपूर्वक लिखूं अन्यथा उन ख़तरनाक अपराधियों में से जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने साधारण बहानों पर क्षमा कर दिया। अधिकांश लोगों की घटनाएँ ऐसी भयानक तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दया को दर्शाने वाली हैं कि एक क्रूर हृदय मनुष्य भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

(किताब नबियों का सरदार 205 से 224 तक)

☆ ☆ ☆

तकरीर जलसा सालाना कादियान दिसम्बर 2017 ई

सीरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दावत इलल्लाह की रौशनी में

मुहम्मद इनाम ग़ौरी (नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۷﴾

(सूरह अलइहज़ाब 46-47)

يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَ اِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾

(सूरह अल-माइदा 68)

इन दो आयतों का अनुवाद यह है कि हे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बेशक हम ने तुम को एक शाहिद और एक मुबश्शिर और एक नज़ीर के रूप में और अल्लाह तआला की तरफ उस के आदेश से बुलाने वाला और एक प्रकाशित कर देने वाले सूर्य के रूप में भेजा है।

हे रसूल !(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तेरे रब की तरफ से जो (कलाम भी) तुझ पर उतारा गया है उसे (लोगों तक पहुंचा) दे। यदि तूने (ऐसा) न किया तो (मानो) तो उसका संदेश (बिल्कुल) नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तआला तुझे लोगों के (हमलों) से सुरक्षित रखेगा। अल्लाह काफिर लोगों को हरगिज़ (सफलता) पथ नहीं दिखाएगा।

आज से चौदह सौ साल पहले दुनिया में चारों ओर ज़लालत और गुमराही फैली हुई थी क़ुरआन ने इसका नक्शा ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ के शब्दों में खींचा है अर्थात अहले किताब भी और ग़ैर पुस्तक वाले भी दोनों में फसाद फैल चुका था। विशेष रूप से अरब द्वीप व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, नैतिक आधार पर भी और आध्यात्मिक लिहाज़ से भी सख्त अंधेरी रात के दौर से गुजर रहा था अच्छे और बुरे और काले और सफेद का कोई भेद शेष न रह गया था। ख़ाना काबा जो संसार के आरम्भ से ख़ुदा तआला की तौहीद का घर बनाया गया था उस में दैनिक एक अलग बुत के पूजा के आधार पर 360 बुत रखे गए थे। झगड़ा, फसाद, हत्या, मारधाड़, अभद्रता और बुरे काम, शराब पीना व्यभिचार दैनिक का सामान्य था और अरब राष्ट्र जो कुछ कबीलों के जोड़ का नाम था कभी किसी सरकार और कानून का बाध्य और विनम्र आज्ञापालन करने वाला न था।

इस अंधेरे युग में एक करुणा भरा दिल था जो अपनी क़ौम की बुराइयों और गुमराहियों को देखकर बेचैन था, एक आत्मा थी जो आसमानी प्रकाश लिए तड़पती थी, एक पच्चीस तीस वर्षीय किशोर, इस पीड़ा में पीड़ित होकर आराम की तलाश में मक्का से तीन मील दूर ग़ारे हिरा की तलहटी में एक गुफा को अपने रब्ब से बातचीत का ठिकाना बना रखा था और लगातार पंद्रह साल तक कई कई दिन वहाँ ठहर कर तनहाई में रात दिन दुआएं करता रहा। यह थे हमारा आक़ा, मोहसिन इंसानियत रहमतुलिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

अल्लाह तआला ने आपकी दुआएं स्वीकार की और रूहुल कुदुस हज़रत जिब्राईल अमीन को अपने ईमान वर्धक कलाम के साथ भेजा। अप के सच्चे आशिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अपने एक शेअर में फरमाते हैं कि

नूर लाए आसमां से ख़ुद भी वह इक नूर थे
क़ौमे वहशी में अगर पैदा हुए क्या जाए आर

उस स्वर्गीय ज्योति से अंधेरे स्थानों को मुनव्वर और ज़लालत के गढ़ों में पड़ी हुई मानवता को उठाकर प्रकाश के मीनार बनाने के लिए आपको आदेश दिया بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप ने कुरआन के नाज़िल होने वाली प्रत्येक आयत को लोगों को सुनाना है, लिखवाना है, याद करवाना है। और फिर हर कुरआन के आदेश पर अमल करके दिखाना है। وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ अगर आप यह पवित्र कर्तव्य अदा न कर सके तो मानो रिसालत का हक़ अदा न कर सके। यह कोई मामूली बोझ न था। अल्लाह तआला ने कुरआन में एक और स्थान पर फरमाया है कि इस पूर्ण शरीयत के बोझ को उठाने के लिए हम ने आकाश तथा धरती और पहाड़ों को राज़ी किया। فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا उन सब ने मना कर दिया और अमानत के भार को उठाने से डर गए हाँ وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ एक इंसान पूर्ण इंसान ने इस अमानत को अपने सिर पर उठा लिया क्योंकि वह ज़ुलूम तथा और जहूल के गुण वाला था और हिम्मत कर के इस राह में आने वाली बाधाओं को अपने ऊपर उठाने वाला और इस बाधाओं और कठिनाई को अल्लाह के लिए भूल जाने की क्षमता रखने वाला था।

इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूरा जीवन, दावत इलल्लाह की यह सारी कठिन यात्रा जो सफा पहाड़ से क़ुरैश के कबीला को दिव्य संदेश पहुंचाने से शुरू हुई थी, हज्जतुल विदा में अराफात के मैदान में अंतिम उपदेश सुनाने तक जारी रहा। मक्का के तेरह साल और मदीना के दस साल, 23 साल की अवधि का एक एक दिन गवाह है कि हाँ हे अल्लाह के हबीब ! आपने दावत इलल्लाह का हक अदा कर दिया है।

अब इस संदर्भ में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत-ए-तैयबा से कुछ घटनाएं प्रस्तुत करता हूं। आप की तब्लीग़ और दावत इल्लाह का तरीके कुरआन के اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ का सबसे अच्छा व्यावहारिक नमूना था।

हज़रत अमरो बिन अंबसह रज़ि अल्लाह बताते हैं कि रसूलुल्लाह की बेसत के शुरुआती समय में मक्का आया। उस समय रसूल ने अभी रिसालत की घोषणा आम नहीं की थी। लेकिन मैंने आपसे पूछा कि आप क्या हैं? आपने फ़रमाया मैं नबी हूं।

मैंने पूछा कि नबी क्या होता है? रसूलुल्लाह ने कहा कि अल्लाह तआला का भेजा हुआ रसूल होता। मैंने पूछा क्या अल्लाह तआला ने आप को भेजा है आपने फरमाया हाँ। मैंने कहा क्या शिक्षा दे कर भेजा है। आपने फरमाया कि अल्लाह तआला की इबादत की जाए। बुतों को छोड़ा जाए और रहमी रिश्तेदारों के हक़ अदा किए जाएं। मैंने कहा यह तो बहुत अच्छी शिक्षा। इसे कितने लोगों ने स्वीकार किया है। आप ने कहा एक स्वतंत्र और ग़ुलाम (यानी अबू बकर और ज़ैद) ने। अमरो ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। कहते थे कि फिर मैंने पूछा कि हे रसूलल्लाह! क्या मुझे यहां रहना चाहिए और आप का पालन करना चाहिए? आप ने फरमाया "नहीं तुम अपनी क़ौम में जाकर इस शिक्षा का पालन करो। यहां तक कि जब तुम्हें मेरे जाने (यानी प्रवासन) का पता चले तो आकर मेरा अनुकरण करना।"

(बहीकी जिल्द संख्या 2 पृष्ठ 39)

यह यहां उल्लेखनीय है प्रारंभिक समय तब्लीग़ में क्रम का पहलू काफी दिखाई देता है। आरम्भ में केवल तौहीद और रसालत का इकरार करवाया गया और मानव जाति के हक भी में भी पहले सिला रहमी की

तरफ ध्यान दिलाया गया। फिर ज्यों-ज्यों अल्लाह तआला के आदेश उतरते उनकी तरफ दावत दी जाती रही।

इसी तरह आरम्भ में व्यक्तिगत तब्लीग़ का सिलसिला जारी रहा और वह भी घोषित रूप से नहीं बल्कि अदृश्य रूप से। हज़रत अबू बकर जो आरम्भ में ही ईमान ले आए थे उन्होंने भी क़ौम के विश्वसनीय लोगों तक संदेश अधिकार पहुंचाने का सिलसिला शुरू किया और यूं चिराग़ से चिराग़ प्रकाशित होना शुरू हुआ।

नबुव्वत के दावा के तीन साल के बाद आप अल्लाह तआला ने आदेश दिया فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ (सूरः अलहजर: 95) कि जो आदेश आप को दिया जाता है अब इसे खोलकर सुना दें और मूर्तिपूजक से दूरी बरतें। और साथ ही ये इरशाद हुआ कि इस खुली दावत इल्लल्लाह का आरम्भ अपने रिश्तेदारों से किया जाए وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ (शोअरा: 215) और अपने करीबी रिश्तेदारों को सावधान कर।

अत: इसलिए इसके लिए आप ने यह तरीका धारण किया कि सुबह सफा पहाड़ पर चढ़ कर कुरैश के जनजातियों को नाम लेकर आवाज़ दे कर बुलाया हे अब्दुल मुत्तलिब की औलाद, हे अबदे मुनाफ के वंश! हे कुस्य की औलाद! आदि (अरब में यह नियम था कि जब किसी मुसीबत में मदद करने के लिए लोगों को इकट्ठा करना हो तो इस तरह एक उच्च स्थान पर खड़े होकर आवाज़ दी जाती थी) बहरहाल जब विभिन्न जनजातियों के लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ सुनी तो सुनकर सफा पहाड़ के पास इक्टठा हो गए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें संबोधित करके कहा "मैं एक होशियार करने वाला हूँ। मेरा और तुम्हारा उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जिसने एक हमलावर दुश्मन को देखा हो और अपने परिवार को सावधान करे मगर उसे यह आशंका भी है कि वह उसकी बात नहीं मानेंगे। और वह चिल्ला चिल्ला कर सभी को मदद के लिए पुकारना शुरू करे। "

और फिर कहा अगर मैं तुम्हें कहूँ कि इस पहाड़ के दामन में एक लश्कर आप पर हमला करने के लिए खड़ा है तो क्या तुम मेरी बात को सत्यापित करोगे? उसने कहा, क्यों नहीं? हमने आज तक आपसे झूठ का अनुभव नहीं किया है। हम ने हमेशा को आप सच्चा पाया है।" तब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "मैं तुम्हें अल्लाह तआला की तरफ बुलाता हूँ और उसे कयामत से डराता हूँ।"

इस संदेश के सुनते ही अबूलहब ने यह कहते हुए कि تَبًّا لَكَ اَلِهٰذَا جَمَعْتَنَا हे मुहम्मद! नऊज़ बिल्लाह हलाकत हो तुझ पर क्या इसलिए हमें जमा किया था उठ खड़ा हुआ। इस पर दूसरे लोग भी चले गए।

(बुख़ारी किताबुल तफसीर सूरः अश्शअरा अध्याय 258)

फिर अपने रिश्तेदारों को तब्लीग़ के लिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हिक्मत वाला काम इस तरह फरमाया कि एक खाने की दावत का इंतेज़ाम कर के रिश्तेदारों को आमंत्रित किया और इस अवसर पर अल्लाह तआला का संदेश पहुंचाया जाए। अत: हज़रत अली ने आदेश के पालन में बकरी के पैर का शोरबा और रोटी तैय्यार करवा कर ख़ानदान बनी मुतलब के कम से कम चालीस लोगों को बुलाया जिस में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सभी चाचा अबूतालिब, हमजा, अब्बास और अबू लहब भी शामिल थे। खाने पीने से फ़राग़त के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब बात करना शुरू कर दिया, तो आपके चाचा कि अबू लहब ने शोर डाला कि तुम पर तो किसी ने जादू किया है इस पर सब लोग चले गए।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को इरशाद फ़रमाया कि फिर दावत का प्रबंध करो तो फिर दावत का प्रबन्ध कर के उन रिश्तेदारों को आमंत्रित किया गया और हज़रत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने संबोधित फ़रमाया कि "हे अब्दुल मुत्तलिब की औलाद ! ख़ुदा की क़सम कोई अरब युवा अपनी क़ौम के लिए इससे बेहतर और शानदार संदेश नहीं लाया जो मैं तुम्हारे पास लाया हूं। मैं तुम्हारे पास दुनिया और आख़िरत की भलाई लेकर आया हूँ। मुझे रब्ब ने हुक्म दिया है कि तुम्हें उसकी ओर बलाऊं। तो इस मामले में आप में से कौन मेरा सहायक होगा? सब चुप थे। लेकिन एक कम उमर का युवा अली उठ गया और कहा, हे अल्लाह के रसूल! मैं उपस्थित हूं। लेकिन बाकी लोग हंसते हुए चले गए।

(तफसीर तिबरी सूरह अशुअरा जिल्द 9 पृष्ठ 481 मुद्रित बैरूत)

बहरहाल अब तक इसी तरह व्यक्तिगत रूप से और अधिक से अधिक परिवार के लोगों को इकट्ठा करके संदेश पहुंचाने की कोशिश की जाती रही। मगर अब ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि एक केंद्रीय स्थान हो जहां नए मुसलमान एक साथ हो और एक-दूसरे को जानें। अत: हज़रत अरक़म बिन अरक़म जिन्होंने ग्यारहवें नंबर पर इस्लाम स्वीकार किया था। उन का मकान सफा पहाड़ के दामन में था उन्होंने यह मकान पेश किया। जिसे मुसलमानों का पहला दारुल तब्लीग़ बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस मकान में हज़रत उमर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ पर मुसलमान हुए। चूंकि उमर एक निहायत बहादुर और प्रभाव वाले व्यक्ति थे उनके मुसलमान होने से मुसलमानों ने ज़ोर से नारा तकबीर बुलंद किया और फिर उसके बाद खुले आम तब्लीग़ शुरू कर दी।

(अस्सीरतुल नबविय्या इब्ने हश्शाम जिल्द 1 पृष्ठ 343 मुद्रित बैरूत)

अब खुले आम तब्लीग़ के कारण एक एक दो दो करके कुछ स्वतंत्र और ग़ुलाम मुसलमान होने लगे और एक जमाअत एकत्रित होनी शुरू हो गई तो क़ुरैश मक्का को अपनी सरदारी खतरे में दिखने लगी। अत: एक दिन अबू जहल ने क़ुरैश के सरदारों की मजलिस में कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मामला कुछ बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए फिर उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा की योजनाबद्ध रूप से विरोध शुरू कर दिया केवल मौखिक विरोध ही नहीं बल्कि कष्ट पहुंचाने शुरू कर दिए। जो तो ग़ुलाम थे उन पर उनके आकाओं ने क्रूरता की सीमा पार कर दी और जो स्वतंत्र थे और देश में सम्मानित उन्हें भी कष्ट पहुंचाए जाने लगे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो इन के विरोध का पहला लक्ष्य थे। ख़ान काबा में नमाज़ पढ़ रहे हैं गंद से भरी ऊंट की ओझड़ी मंगवा कर आप की मुबारक पीठ पर रखकर ठहाके मारने लगे। कभी चादर से गला घोंट कर मारने की कोशिश की गई। कई बार ज़हर दे कर मारने की कोशिश की गई। रास्ता चलते आप पर कचरा फैंकना और मौखिक बुरा भला कहना और दिल दुखाते रहना तो दिनचर्या थी।

बहरहाल तेरह साल मक्का के युग में मक्का की काफिरों का कष्ट पहुंचाना और जानवरों जैसा व्यवहार करने की लम्बी दास्तान है।

यहां बताना ज़रूरी है कि आप के चाचा हज़रत अबू तालिब ने यद्यपि आप के संदेश को स्वीकार नहीं किया था लेकिन अपने भतीजे की अच्छाई और नेकी और दावत इलल्लाह के उत्साह से प्रभावित ज़रूर थे इसलिए उनका समर्थन बहरहाल आप को प्राप्त था जो कुरैश मक्का को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ चरम काम करने से रोकता था अंतत: उन्होंने हज़रत अबू तालिब को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समर्थन से हट जाने के बारे में खुले शब्दों में चेतावनी देने का निश्चय कर लिया। अत: कुरैश के अमीरों का एक प्रतिनिधिमंडल अबूतालिब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा:

"अब मामला सीमा से बाहर पहुँच गया है और हमें गन्दे और पलीद

और सब से बुरी सृष्टि और नापाक और शैतान की औलाद कहा जाता है ज़ुर्रियत कहा जाता है और हमारे उपास्यों को नरक क ईंधन करार दिया जाता है और हमारे बुज़ुर्गों को अक्ल से ख़ाली कह कर पुकारा जाता है इसलिए अब हम धैर्य नहीं कर सकते और अगर तुम उसके समर्थन को वापस नहीं ले सकते, तो फिर हम भी मजबूर हैं ....। "

"अबू तालिब ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाकर कहा:

" हे मेरे भतीजे! अब तेरे कठोर कहने से कौम बहुत उग्र हो गई है और क़रीब है कि तुझे मार डालें और साथ ही मुझे भी तूने उनके अक्लवालों को बेफकूफ करार दिया और उन के बुज़ुर्गों को सब से बुरी सृष्टि कहा और उनके सम्मान योग्य देवताओं का नाम नरक का ईंधन और आमतौर पर उन सभी को शैतान की औलाद और पलीद ठहराया। मैं तुझे ख़ैरख्वाही के रास्ते से कहता हूँ कि अपनी भाषा को रोक और कठोर बात कहने से रुक जा। वरना मैं क़ौम का मुकाबला करने की शक्ति नहीं रखता। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में कहा हे चाचा! यह दुशनाम दही (कठोर बात) नहीं है बल्कि सच्चाई की अभिव्यक्ति है और सच बात को उचित स्थान पर वर्णन करना है और यही तो काम है जिसके लिए मैं भेजा गया हूँ। अगर इस के लिए मुझे मरना पड़े तो सहर्ष अपने लिए मौत को स्वीकार करता हूँ। मेरा जीवन इसी में समर्पित है मौत के डर से सच्चाई व्यक्त करना बंद नहीं सकता। और हे चाचा! अगर तुझे अपनी कमज़ोरी और अपनी परेशानी का विचार है तो मुझे शरण में रखने से वापस हो जा। अल्लाह की कसम मुझे तेरी कुछ भी परवाह नहीं। मैं ख़ुदा तआला के आदेश पहुंचाने में कभी भी नहीं रकूंगा। मझे अपने मौला के आदेश जान से अधिक प्रिय हैं। अल्लाह तआला की कसम यदि इस तरह मारा जाऊँ तो चाहता हूँ कि फिर बार बार जीवित होकर हमेशा उसी में मर रहूं। या डर का स्थान नहीं, बल्कि मुझे इस में बहुत आन्नद आ रहा है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह भाषण कर रहे थे और चेहरा सच्चाई और नूरानियत के प्रकाश से नुमायाँ हो रहा था और जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह भाषण समाप्त कर चुके तो सच्चाई का नूर देखकर अबू तालिब के आंसू अपने आप जारी हो गए और कहा कि मैं तेरी उस उच्च स्थिति से अनजान था तेरा तो कोई ही रंग है, तथा कोई और ही शान है। जा अपने काम में लगा रहा जब तक मैं ज़िंदा हूँ, जहां तक मेरी शक्ति है, मैं तेरा साथ दूंगा।" आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी पुस्तक इज़ाला औहाम भाग-1 के पृष्ठ 110 तथा 111 में यह घटना लिख कर हाशिया में तहरीर फ़रमाते हैं कि:

"यह विषय अबू तालिब के किस्सा का यद्यपि किताबों में वर्णित है लेकिन यह सारी पंक्तियां इल्हामी हैं जो अल्लाह तआला ने इस विनम्र के दिल पर उतारीं । केवल कोई कोई वाक्यांश व्याख्या के लिए इस असमर्थ से है।"

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

बहरहाल जब सरदारान क़ुरैश की यह कोशिश भी विफल हो गई तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा चाहे वे स्वतंत्र थे या ग़ुलाम, मक्का के अत्याचारियों काफिरों का अधिक निशाना बनते चले गए यहाँ तक कि आप ने कुछ साथियों को विवशता के हालात देख कर उन्हें हब्शा की ओर हिजरत कर जाने की अनुमति दे दी लेकिन ख़ुद उनके अत्याचार का निशाना बनते रहे। यहां तक कि अत्याचारियों ने जब देखा कि हज़रत हमज़ा और उमर जैसे बड़े लोग भी मुसलमान हो रहे हैं और यह सिलसिला बढ़ता ही जा रहा है कुरैश के सरदारों ने परस्पर सलाह करके फैसला किया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सभी व्यक्तियों बनो हाश्म और बनो मुतलब के साथ सभी प्रकार के संबंध काट लिए जाएँ। और ऐसे पूर्ण बहिष्कार का नियम तैयार करके सभी बड़े रईसों के इस पर हस्ताक्षर करवा के काबा की दीवार के साथ लटका दिया गया। इस के परिणाम में क़ुरैश ही के दो बड़ी जनजाति बनू हाशिम और बनो मतलब शोएब अबी तालिब में जो एक पहाड़ी दर्रा में कैद हो गए। और तीन साल तक इस सामाजिक बहिष्कार को सहन करते रहे। अन्त में 10 नबवी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक रोया के अनुसार जब उन्होंने देखा कि अनुबंध लेख की लिखाई को केवल ख़ुदा के नाम के अतिरिक्त सभी कुछ दीमक ने खत्म कर दिया है तो कुछ शरीफ़ों की तहरीक पर यह बहिष्कार समाप्त हो गया।

(अस्सीरुतल नबविया ले अब्ने हश्शाम जिल्द 1 पृष्ठ 350)

इस तीन वर्षीय बहिष्कार और पीड़ा से निकलने के बाद वर्ष 11 नबवी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा अबू तालिब और फिर कुछ दिन बाद आप की पत्नी हज़रत ख़दीजा एक के बाद दूसरा वफ़ात पा गए। अबू तालिब की मृत्यु के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पीड़ा में अधिक वृद्धि हो गई। लेकिन आप को उन पीड़ाओं और दुखों की परवाह न थी अगर चिंता थी तो केवल दावत इलल्लाह की। और वह दिन आपके लिए बहुत अधिक बोझिल होता जिस दिन कि कोई बात सुनने वाला नहीं मिलता। इसलिए अल्लाह तआला का संदेश सुनाने के लिए आप ने एक तरीका अपनाया कि मक्का के निकट में उक्कज़, ज़ुल मजाज़ और मजन्ना के स्थानों पर मेले लगा करते थे, आप इन मेलों में जा पहुंचे और जो भी मिलता उसे अल्लाह तआला का संदेश पहुंचाया।

राबीया बिन इबाद बताते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ुल मजाज़ के मेले में देखा। आप लोगों को अल्लाह तआला की तरफ बुलाते थे। फरमाते थे कहो अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं तो मुक्ति पाओगे। अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है कि उसकी इबादत करो और उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ और मैं तुम्हारी ओर अल्लाह तआला का रसूल हूँ। जहाँ आप लोगों को अल्लाह तआला का संदेश पहुंचाने में प्रयासरत हैं वहीं पीछे पीछे अबूलहब और अबु जहेल भी आवाज कसते और धूल उड़ाते जाते और लोगों को गुमराह करते हुए कहते यह झूठा है इसकी बात कभी न मानना कहीं यह व्यक्ति तुम्हें तुम्हारे धर्म से बहका न दे ।

प्यारे पाठको! आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत इलल्लाह के उल्लेख में ताइफ़ की यात्रा की घटना तो अविस्मरणीय है। मक्का से चालीस मील दूर ताइफ़ की बस्ती में अपने एक स्वतंत्र किए हुए ग़ुलाम ज़ैद के साथ पधारे जहां अन्य हाकिमों के अलावा कबीला सकीफ़ के तीन सरदार भी थे जिनसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ननहाली रिश्ता भी था। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस्लाम की दावत दी और क़ुरैश मक्का के विरोध का उल्लेख करके उनसे मदद चाही। यह सुनकर उनमें से एक सरदार कहने लगा "अगर तुझे ख़ुदा ने रसूल बनाकर भेजा है तो वह काबा का पर्दा फाड़ रहा है। "दूसरा बोला "क्या तुम्हारे अतिरिक्त अल्लाह तआला को और कोई अन्य रसूल नहीं मिला था जिसे वह भेजता।" तीसरे ने कहा, "ख़ुदा की कसम मैं तो तुम से बात करने का भी इच्छुक नहीं हूं।"

(इब्ने हिशाम जिल्द 1 पृष्ठ 419)

और कहा कि इस बस्ती से तुरंत निकल जाओ और केवल इसी पर बस नहीं किया बल्कि कुछ ग़ुलामों और आवारा लड़कों को आप के पीछे लगा दिया जो गालियां देने और आवाज़ कसने लगे इतने में एक बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई जो आप के रास्ते में दोनों तरफ खड़े होकर पत्थर

बरसाने लगे। हज़रत ज़ैद, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के के आगे ढाल बनकर पत्थरों से आप को बचाने की कोशिश करते लेकिन वह अकेला कैसे बचा सकते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पिंडलियां लहूलुहान और जूते खून से भर गए और हज़रत ज़ैद को भी गंभीर घाव आए और यह भीड़ तब लौटी जब आप ने उतबह और शियबह मक्का के दो सरदारों के अंगूरों के बाग़ में शरण ली।

अत: ताइफ़ का दिन हमारे आक़ा मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेहद सख्त दिन था हज़रत आयशा ने एक बार नबी करीम से पूछा कि उहद के दिन से अधिक कोई मुश्किल दिन भी आप पर आया है (उहद में आप के दांत मुबारक शहीद हुए और चेहरा भी घायल हो गया।) आप ने फरमाया, आयशा! मैंने तुम्हारी क़ौम से बहुत पीड़ा उठाईं लेकिन सबसे गंभीर संकट वह थी जो ताइफ़ के सफर में उठाई। मैं उस समय सख्त दुखी होने की स्थिति में सिर झुकाए चला जाता था। क्या देखता हूँ कि एक बादल ने मुझे छाया में ले रखा है। तब पहाड़ों के फरिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और मुझे सलाम करके कहा मैं पहाड़ों का फरिशता हूँ मुझे आप के आक़ा ने आप के पास भेजा है ताकि आप जो आदेश दें उसे मैं करूं। हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)! क्या आप चाहते हैं? मैं इस घाटी के दोनों पहाड़ उनके ऊपर गिरा दूं । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। नहीं नहीं, ऐसा मत करो! मुझे आशा है कि अल्लाह तआला उनके वंशज ऐसे लोग पैदा करेगा जो एकमात्र ख़ुदा की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराएंगे।"

(बुख़ारी बदउल ख़ल्क़ अध्याय 7)

प्यारे पाठको ! आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में दावत इलल्लाह का जो जोश था और मक्का के कुफ्फार का ईमान न लाने का जो दु:ख और सदमा था उसकी स्थिति तो सिवाय खुदा तआला के और कोई परिचित नहीं था इसलिए अल्लाह तआला ने आप की इस हार्दिक स्थिति का वर्णन इन शब्दों में वर्णन फरमाया,

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ

(सूरह अश्शअरा 4)अर्थात हे मुहम्मद क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वे मोमिन नहीं होते।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ़ के सफर में दावत इलल्लाह के मार्ग में सहन की गई तकलीफें और अत्याचारियों की नस्लों के ईमान लाने की उम्मीद पर उन से किए गए कष्टों का फल 12 साल बाद जाकर निकलता है। अत: 9 सन हिजरी में जब आप जंग तबूक से वापस आए तो तायफ का एक सरदार प्रतिनिधि के रूप में आया और सब की तरफ से इस्लाम ले आया।

बहरहाल فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ का आदेश के नाज़िल होने बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मक्की जीवन के दस साल का एक एक दिन दावत इलल्लाह की मुहिम में खर्च होता है परन्तु मक्का की कठोर धरती में जहां आप को जान कुरबान करने वाले आज़ाद और ग़ुलाम साथी आप मिले वहां कुरैश के सरदारों ने इस इलाही पैग़ाम को न केवल ठुकरा दिया बल्कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुटठी भर सहाबा की जीना मुश्किल कर दिया अन्त में जब देखा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी प्रकार भी दावत इलल्लाह के काम से रुकने वाले नहीं हैं तो सारे कबीलों ने मिल कर यह फैसला किया कि प्रत्येक कबीले का एक एक प्रतिनिधि एक साथ हो कर आप को घेर ले और बाहर निकलते ही आप को कत्ल कर दें। उधर अल्लाह तआला ने यसरब की धरती पर जो बाद में मदीना के नाम से प्रसिद्ध हुई कुछ जान देने वाले आशिक पैदा कर दिए जो बैअत उकबा ऊला तथा सानिया में आप को प्राप्त हुए थे। अत: अल्लाह तआला ने शीघ्र आप को मक्का से हिजरत कर जाने का आदेश दिया और आप अल्लाह तआला की सुरक्षा और पनाह में हज़रत अबू बकर के साथ घेराव करने वालों की आंखों के सामने से मक्का की ज़मीन से निकल पड़े और ग़ारे सौर में तीन दिन तक पनाह लेने के बाद मदीना की तरफ हिजरत फरमा गए। और धीरे धीरे मक्का के जान कुरबान करने वाले सहाबा भी मदीना आने लगे और मुहाजरीन तथा अंसार की एक जमाअत स्थापित हो गई। और फिर दावत इलल्लाह का एक नया युग शुरु हुआ। यहूदियों को भी तब्लीग़ की गई इसाइयों को भी तब्लीग़ की गई साधारण लोगों को भी और सरदारों को भी। यहां तक कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आस पास के बड़ी बड़ी हकूमतों को सरदारों को तब्लीग़ी ख़त लिख कर अपने विशेष राजदूतों के माध्यम से पहुचाने का प्रबन्ध किया। अत: किस्रा शाहे ईरान, कैसर शहंशाहे रूम, नज्जाशी शाहे हब्शा शाहे मिस्र, शाहे ग़स्सान. इसी तरह यमामा उम्मान तथा बहरीन के रईसों को भी तब्लीग़ ख़त रवाना किए गए। कुछ खुशनसीब बादशाहों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़त को आंखों से लगाया और सम्मान की भावना का वर्णन किया फिर अल्लाह तआला ने भी उन पर फज़ल फरमाया और कुछ ने अपमान तथा उपहास का व्यवहार किया और ख़त को फाड़ दिया अल्लाह तआला ने भी उन की हुकूमत को पारा पारा कर दिया।

फिर अल्लाह तआला के हुक्म से जंग बद्र से जो रक्षात्मक युद्ध का सिलसिला शुरू हुआ उसमें भी दावत इलल्लाह का पहलू हर लिहाज़ से हावी रहा। इसलिए जंग खैबर में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लामी झंडा हज़रत अली के हाथ में पकड़ाते हुए फरमाया अब रवाना हो जाओ और सीधे उन के मैदान में जा उतरो। फिर पहले उन्हें इस्लाम स्वीकार करने की दावत देना और अल्लाह तआला के जो अधिकार उन पर हैं वह उन्हें बतलाना। और फ़रमाया अल्लाह की क़सम! यदि अल्लाह तआला तुम्हारी तब्लीग़ से एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो यह सआदत तुम्हारे लिए लाल ऊंट भी कहीं बेहतर है।

प्यारे पाठको ! आजीवन दावत इलल्लाह का दायित्व निभाते हुए अपने जीवन के अंतिम हज जो हज्जतुल विदा के नाम से मशहूर है उस में हज़ारों मुसलमानों की उपस्थिति में घोषणा की फरमाया "अल्लाहुम्मा हल बल्लग़तो" अल्लाह तआला के लिए गवाही दो कि क्या मैंने अल्लाह तआला का संदेश पहुंचा दिया। सब ने एक ज़बान में कही कि "अल्लाहुम्मा नअम" हाँ हे रसूलल्लाह हम गवाही देते हैं कि आप ने दावत इलल्लाह का हक़ अदा कर दिया है फिर आपने फ़रमाया "अल्लाह हुम्मा अशहद" हे अल्लाह ! तू भी गवाह रहना।

(बुख़ारी किताबुल हज अध्याय 131) (सभी हवाले आदरणीय हाफिज़ मुजफ्फर अहमद साहब की तालीफ "उसवह इंसाने कामिल" से लिए गए हैं।)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फ़रमाते हैं: "इसलिए हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चाई को व्यक्त करने के लिए एक महान मुजद्दिद थे जो गुम हो चुकी सच्चाई को फिर दुनिया में लाए। ..... यही एक बड़ी दलील आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत पर है कि आप एक ऐसे समय में भेजे गए और पधारे जबकि युग बहुत अधिक अत्याचार में भरा हुआ था और अपने आप एक भव्य सुधारक को चाह रहा था। और फिर आप ने ऐसे समय में दुनिया से निधन फरमाया जबकि लाखों व्यक्ति शिर्क और बुतपरस्ती को छोड़कर एकेश्वरवाद और सच्चाई का मार्ग धारण कर चुके थे और वास्तव में यह पूर्ण सुधार आप से ही विशिष्ट था कि आप ने एक वहशी क़ौम को जो जानवरों जैसी थी इंसानी आदतें सिखाईं या दूसरे शब्दों में कहें तो जानवरों को इंसान बना दिया और फिर इंसानों से शिक्षा प्राप्त इंसान बना दिया और फिर शिक्षा वाले इंसानों से ख़ुदा वाला इंसान बना दिया और रूहानियत

की स्थिति उन में फूंक दी और सच्चे ख़ुदा के साथ उन का सम्बन्ध पैदा कर दिया। वे ख़ुदा के मार्ग में बकरियों की तरह ज़िब्ह किए गए और चींटियों की तरह पैरों में मस्ले गए मगर ईमान को हाथ से न जाने दिया। बल्कि प्रत्येक मुसीबत में आगे कदम बढ़ाया। अत: नि:सन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूहानियत स्थापित करने की दृष्टि से दूसरे आदम थे बल्कि वास्तविक आदम वही थे जिन के माध्यम से सारे इंसानी गुण पूर्णता को पहुंचे और सारी नेक शक्तियां अपने अपने स्थान पर काम में लग गई। और कोई शाख़ इंसानी फितरत की बिना फल के न रही और ख़त्मे नबुव्वत न केवल आप पर ज़माना के अन्त की दृष्टि से हुआ बल्कि इस लिए भी की सारे नबुव्वत के कमाल आप पर ख़त्म (समाप्त) हो गए।"

(लैक्चर स्यालकोट रूहानी खज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 206 से207)

पाठको! आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अरब देश के लिए रसूल बनाकर नहीं भेजे गए थे बल्कि आप की सम्बोधित सारी मानव जाति थी। अत: अल्लाह तआला ने कुरआन में आप के माध्यम से यह घोषणा करवाई है قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अल आराफ़: 159) कि हे मुहम्मद! तू कह दे कि हे मानव जाति वास्तव में तुम सब की तरफ अल्लाह तआला का रसूल हूं। फिर जो सूरह अहज़ाब की आयत शुरुआत में तिलावत की थी इसमें आप को सिराज मुनीर के उपनाम से सम्मानित किया गया है। इस में संदेश है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक जीवन में तो सारी मानव जाति तक इस्लाम का संदेश पहुंचाना संभव न था लेकिन इस आध्यात्मिक सूरज के डूबने पर भी उसकी रौशनी ख़त्म नहीं हो सकती थी क्योंकि फिर चाँद उदय होकर इस सूरज की रोशनी से दुनिया को मुनव्वर करना था और बदरे मुनीर यानी आप के आध्यात्मिक महान पुत्र मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के माध्यम से इस्लाम के विजयी का कार्य पूर्ण होना था जिस का वादा सूरह जुम्अ: की आयत وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ में दिया गया है।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों में बड़ी स्पष्टता के साथ यह बात उल्लेख की है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रथम दौर में हिदायत की पूर्णता का कर्तव्य बहुत पूर्ण रूप से पूरा हुआ। और आप की दूसरी बेअसत जो आप के रूहानी पुत्र मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से होनी थी इस में हिदायत के प्रचार की पूर्णता होनी थी जिस के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण प्रतिरूप के रूप में मसीह और महदी के स्थान पर भेज कर हिन्दुस्तान में भेजा और सारे के सारे प्रचार प्रसार के माध्यम जिन की आज के युग में आवश्यकता थी आप को पहुंचाए।

अब जरूरत है कि सारे जमाअत के लोग इन नए प्रसार के साधनों को अच्छी तरह से समझ कर दावत इलल्लाह के प्रमुख काम को करें।

हमारे प्यारे आक़ा हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने एक बार अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 8 सितम्बर 2017 ई में जमाअत के लोगों को दावत इलल्लाह की तरफ ध्यान दिलाते हुए फरमाया है:

" हमें अपनी तब्लीग़ी कोशिशों में एक क्रम पैदा करने की ज़रूरत है। यह नहीं कि साल में एक बार या दो बार तरबियत सप्ताह मना लिया तब्लीग़ कर ली। सड़कों पर खड़े होकर लिट्रेचर बांट दिया और समझ लिया की तब्लीग़ का हक अदा हो गया।.....

अल्लाह तआला ने हिक्मत और अच्छी नसीहत और ठोस दलील के साथ जो तब्लीग़ का जो आदेश दिया है उस के अनुसार चलना हमारा काम है। और स्थायी मिज़ाज के साथ उस करते चले जाना हमारा काम है इस के परिणाम अल्लाह तआला ने फरमाया है कि मैंने पैदा करने हैं किस ने गुमराही में भटकते रहना है और किस ने हिदायत पानी है ये बातें अल्लाह तआला के ज्ञान में हैं।..... हमारे से अगर पूछा जाएगा तो केवल इतना कि क्या हम ने पैग़ाम पहुंचाया ? या फिर क्यों हम ने अपनी तब्लीग़ का कर्तव्य अदा न किया? और क्यों अल्लाह तआला के आदेश पर चलते हुए कार्य न किया? किस ने हिदायत पानी है और किस ने नहीं पानी, यह केवल अल्लाह तआला के ज्ञान में है अगर हम अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं तो मरने के बाद दुनिया कम से कम यह तो अल्लाह तआला के नहीं कह सकती कि हमें तो इस्लाम का सन्देश मिला ही नहीं था।....

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

" इस्लाम की सुरक्षा और सच्चाई को प्रकट करने के लिए सब से पहले तो यह पहलु है कि तुम सच्चे मुसलमानों के नमूना बन कर दिखाओ और दूसरा पहलू यह है कि इस के गुणों और कमालों को दुनिया में फैलाओ।"

(मल्फूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 323)

उसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं।

" अत: तब्लीग़ के लिए भी अपनी अवस्थाओं में पहले पाक तब्दीली पैदा करने की ज़रूरत है। एक सच्चे मुस्लमान का नमूना इंसान बन जाओ तो फिर यह कोई सवाल नहीं है कि लोगों का ध्यान पैदा न हो। वह नमूना देख कर ही लोग ध्यान पैदा कर देते हैं और इस प्रकार नियमित रूप से तब्लीग़ से पहले तब्लीग़ के रास्ते खुल जाते हैं। अल्लाह तआला हमें इस के अनुकार अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ (अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit: www.alislam.org/urdu/library/57.html

तुम तब्लीग़ करो पृष्ठ 1 का शेष

के हाथ एक प्लेट में कुछ अंगूर लाकर आपके पास रख दिए। आप ने उन्हें ले लिया और अद्दास को सम्बोधित करते हुए कहा कि तुम कहाँ के रहने वाले हो? और किस धर्म को मानने वाले हो? उस ने कहा कि मैं नैनवा का हूं और मैं एक ईसाई हूं। आपने कहा: क्या यह नैनवा जहां ख़ुदा के नेक आदमी यूनुस बिन मती का घर था। अद्दास ने कहा। हाँ। लेकिन आप यूनुस को कैसे जानते थे? आप ने फरमाया वह मेरा भाई था। क्योंकि वह भी अल्लाह तआला का नबी था और मैं भी अल्लाह तआला का नबी हूं। फिर आपने इसे इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई जिस का उस पर बहुत असर हुआ और उसने आगे बढ़कर जोश ईमान में आपके हाथ चूम लिए। इस नज़ारा को दूर से खड़े उतबा और शैबा देख रहे थे। अत: जब अद्दास वापस गया तो उन्होंने कहा कि तुझे क्या हो गया है कि उस आदमी के हाथ चूमने लगा यह आदमी तो तेरे धर्म को ख़राब कर देगा हालांकि तेरा धर्म इस से बेहतर है।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यी, लेखक, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 182, 2004 ई, प्रकाशन कदियान)

अद्दास के ईमान के स्वीकर करने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद की ज़बान से सुनें। आप फरमाते हैं कि

'अदास' नैनवा का रहने वाला एक ईसाई था। जब उसने यह अंगूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने प्रस्तुत किए और आप ने उन अंगूरों को यह कहते हुए लिया कि ख़ुदा के नाम पर जो नितान्त कृपा करने वाला और बारम्बार दया करने वाला है मैं यह लेता हूँ तो उसके हृदय में ईसाइयत की याद पुन: ताज़ा हो गई। उसने महसूस किया कि उसके सामने ख़ुदा का एक नबी बैठा है जो इस्राईली नबियों की सी भाषा में बातें करता है। उससे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तुम कहाँ के रहने वाले हो? जब उसने कहा नैनवा का। तो आपने फ़रमाया वह नेक मनुष्य यूनुस अ. जो मती का पुत्र था और नैनवा का निवासी, वह मेरी तरह ख़ुदा का नबी था। फिर आप ने उसे अपने धर्म के बारे में समझाया। अदास की हैरानी कुछ ही क्षणों में आश्चर्य में परिवर्तित हो गई। आश्चर्य ईमान में परिवर्तित हो गया और कुछ ही क्षणों में वह अजनबी दास आँसुओं से भरी आँखों के साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिपट गया तथा आपके हाथों और पैरों को चूमने लगा।

(नबियों को सरदार पृष्ठ 40 प्रकाशन 2001 ई कादियान)

पाठक विचार करें! आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खून में डूबे हुए हैं, अत्यंत असुविधाजनक, घाव से भरे हुए, गंभीर थकान और कमज़ोरी की हालत में भी आपने मौका हाथ से जाने न दिया और अद्दास को तब्लीग़ करके मुस्लिम बना दिया और उसे आग से बचाया।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि हुज़ूर उहद वाले दिन से भी कोई अधिक दर्दनाक दिन आप पर आया है? (जंगे उहद में हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दांत मुबारक शहीद हो गए थे और ख़ोद (कवच) का एक हिस्सा सिर में गड़ गया था) हुज़ूर ने फरमाया आयशा तुम्हारी क़ौम से मुझे बहुत तकलीफें पहुंची हैं लेकिन अक़बा वाले दिन तो बहुत ही ज्यादा तकलीफ उठाई जबकि संदेश सच्चाई का पहुंचाने के लिए ताइफ़ में अब्द यालैल (कनानह) के पास गया (कि वे यहाँ के लोगों को हिंसा से रोक रखे और तब्लीग़ के सिलसिले में मेरी मदद करे) उसने मेरी कोई मदद न की और लोगों की हिंसा इतनी बढ़ी कि मैं ग़म और थकान की तीव्रता की वजह से यह भी न जान सका कि मैं किस ओर जा रहा हूं यहाँ तक कि कर्ने सआलिब (एक पहाड़ी चट्टान) की ओट में कुछ सुस्ताने के लिए बैठ गया। जब मैंने वहां अपना सिर उठाया, मैंने देखा कि बादल छाया किए हुए है और इस में जिब्राईल था। जिब्राईल ने कहा कि अल्लाह तआला ने वे सारी बातें सुनी हैं जो तेरी क़ौम ने तुझे कही हैं और जो पीड़ा तुझे लगी हैं। अल्लाह तआला ने मुझे पहाड़ों के दूत को भेजा है ताकि जो भी आप इस क़ौम के बारे में निर्णय लेते हैं, वह इसे करे। फिर पहाड़ के फरिशते ने भी मुझे सलाम किया और कहा कि हे मुहम्मद मैं पहाड़ों की फरिशता हूँ अल्लाह तआला ने तुम्हारी क़ौम की बातें जो तुझे कही हैं और वह पीड़ा जो तुझे हुई हैं सुनी हैं और मुझे तुम्हारी मदद के लिए भेजा है। जो भी आप मुझे आदेश देते हैं, मैं इसका पालन करूंगा। आप कहें कि इन दो पहाड़ों (जिनके बीच ताइफ़ शहर बसे) आपस में मिला दूं और उसके बीच रहने वालों को पीस दूं तो ऐसा करूंगा। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहाड़ों के फरिशते को कहा मुझे उम्मीद है कि उन लोगों के वंश से शिर्क से बचने वाले और एकमात्र ख़ुदा की इबादत करने करने वाले व्यक्ति पैदा होंगे इसलिए मैं उन लोगों को नेस्तनाबूद करने की अनुमति नहीं दे सकता।

(मुस्लिम किताबुल जिहाद) (उद्धरित किताब "हदीकुतस्सालेहीन" लेखक मोहतरम मौलाना मलक सैफुर्रहमान साहिब हदीस नंबर 42)

पाठक विचार करें! जब पहाड़ के फरिश्ता ने कहा कि यदि अनुमति है तो तायफ के दोनों पहाड़ों को अपमान की सज़ा के कारण मिला दूं और एक भी उन में से ज़िन्दा न रहे। तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या उत्तर दिया।? आप ने फरमाया मुझे आशा है कि इन लोगों के नस्ल में से शिर्क से बचने वाले और ख़दाए वाहिद की इबादत करने वाले आदमी पैदा होंगे। कैसी तड़प थी आप के दिल में सारी मानव जाति अपने वास्तविक ख़ालिक तथा मालिक को पहचान ले और एक भी शिर्क करने वाला दुनिया में न रहे।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 20 अप्रैल 2018 ई में फरमाया:

"आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर हज़रत अली को संबोधित करते हुए कहा कि अल्लाह की कसम तेरे द्वारा एक आदमी का हिदायत पा जाना तेरे लिए उच्च नस्ल के लाल ऊंट पाए जाने से बेहतर हैं। यह सांसारिक धन दौलत इस बात के मुकाबला में कोई स्थान नहीं रखते कि तुम तब्लीग़ करो और नेक कर्म का माध्यम बनो। अल्लाह तआला के इनामों को वारिस बनने के लिए हमें ज़रूरत है कि हम तब्लीग़ करें और दुनिया की हिदायत के लिए समय दें।"

अल्लाह तआला हमें सय्यदना मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को अपनाने की तौफीक प्रदान करे और हुज़ूर अनवल अय्यदहुल्लाह तआला के उपदेशों के अनुसार हम तब्लीग और नेक कर्म के द्वारा मानव जाति की हिदायत का सामान करने वाले बनें। आमीन।

(मंसूर अहमद मस्त्ररूर)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

☆ ☆